अय्यूब

अय्यूब एक ईमानदार मनई

1 ऊज नाउँ क प्रदेस मँ एक ठु मनई रहा करत रहा।
ओकर नाउँ अय्यूब रहा। अय्यूब एक बहोत ईमानदार
अउ बिस्सासी मनई रहा। अय्यूब परमेस्सर क उपासना करत
रहत रहा अउ बुराई स दूर रहा करत रहा। 2ओकरे सात ठु
बेटहना अउ तीन ठु बिटिहनी रहिन।

3अय्यूब सात हजार भेड़िन, तीन हजार ऊँटन, एक हजार
बर्धन अउ पाँच सौ गदहियन क सुआमी रहा। ओकरे लग्गे
बहोत स नौकर रहेन। अय्यूब पूरब क सब स जियादा
धन्नासेठ मँ स एक रहा।

4अय्यूब क बेटहनन बारी-बारी स आपन घरन मँ एक
दूसर क खइया क खाइ बरे बोलावा करत रहेन। उ पचे
आपन बहिनियन क भी हुआँ ओकरे खाइ अउ पिइ बरे
बोलात रहेन। 5अय्यूब क गदेलन जब भोज खाइ चुकतेन,
तउ अय्यूब तड़के भिन्सारे उठत अउ आपन हर गदेला क
बदले होमबलि अर्पित करत रहा। काहेकि उ सोचत, "होइ
सकत ह, मोर गदेलन आपन हिरदइ मँ परमेस्सर क निन्दा
कइ के पाप किहे रहेन।" एह बरे अय्यूब हमेसा अइसा
करत रहत रहा।

6फिन सरगदूतन बरे यहोवा क रिपोर्ट देइ क दिन आवा।
सइतान भी ओनकर संग आवा।

7यहोवा सइतान स कहेस, "तू कहाँ रह्या?"

सइतान जवाब देत भए यहोवा स कहेस, "मइँ धरती पइ
एहर ओहर घूमत रहेउँ।"

8एह पइ यहोवा सइतान स कहेस, "का तू मोर सेवक
अय्यूब क लख्या? इ धरती पइ ओकरे तरह कउनो दूसर
मनई नाहीं अहइ। अय्यूब एक ठु ईमानदार अउ बिस्सासी
मनई अहइ। उ हमेसा परमेस्सर क आराधना करत ह अउर
बुराई स सदा दूर रहत ह।"

9सइतान जवाब दिहस, "निहचय ही! मुला अय्यूब परमेस्सर
क एक खास कारण स आराधना करत ह! 10तू सदा
ओकर, ओकरे घराने क अउर जउन कछू ओकरे लग्गे
अहइ ओकर रच्छा करत ह। जउन कछू उ करत ह तू
ओका सफल बनावत ह। हाँ, तू ओका बहोत सारा जनावरन
झुण्ड अउर रेवड़ पूरे देस मँ फइलावइ बरे दिहेस ह। 11मुला
जउन कछू ओकरे लग्गे अहइ उ सब कछू क अग्गर तू
बर्बाद कइ द्या तउ मइँ तोहका बिस्सास दियावत हउँ कि उ
तोहरे मुँहे पइ तोहरे बिरुद्ध बोलइ लाग्गी।"

12यहोवा सइतान स कहेस, "अग्गर अइसा अहइ, अय्यूब
क लग्गे जउन कछू अहइ ओकरे संग जइसा तू चाहत ह,
करा। मुला ओकरे देह का चोट न पहोंचावा।"

एकरे पाछे सइतान यहोवा क लग्गे स चला गवा।

अय्यूब क सब कछू जात रहा

13एक दिन, अय्यूब क पूत अउ बिटियन आपन सब स
बड़का भइया क घर खइया क खात रहेन अउ दाखरस
पिअत रहेन। 14ठीक तबहिं अय्यूब क लग्गे एक ठु
संदेसवाहक आवा अउ ओका बोला, "जब बर्धा हर जोतत
रहेन अउर गदहन मइदान चरत रहेन, 15कि सबा* क लोग
हम पचन पइ धावा बोल दिहन अउ तोहरे गोरुअन क लइ
गएन। मोका तजिके तोहार सबहिं दासन क सबा क लोग
मार डाएन। आप क इ खबर देइ बरे मइँ बचिके पराइ
निकरि आवा हउँ।"

16अबहिं उ सन्देसवाहक कछू कहत ही रहा कि अय्यूब
क लग्गे दूसर संदेसवाहक आवा। दूसर संदेसवाहक कहेस,
"अकासे स बिजुरी गिरी अउ आप क भेड़िन अउ दास
जरिके राखी होइ गएन है। आप क खबर देइ बरे मइँ ही
बचिके निकरि पावा हउँ।"

17अबहिं उ संदेसवाहक आपन बात कहत ही रहा कि
एक ठु अउर संदेसवाहक आइ गवा। इ तीसर संदेसवाहक
कहेस, "कसदी क लोग तीन टोलियन क पठए रहेन, जउन
हम पइ हमला बोल दिहन अउर उ पचे सेवकन क मारि
डाई क पाछे ऊँटन क छीन लइ गएन। आपक खबर देइ
बरे सिरिफ मइँ ही बचिके निकरि पाएउँ ह।"

18इ तीसर दूत अबहिं बोलत ही रहा कि एक अउर
सन्देसवाहक आइ गवा। इ चउथा संदेसवाहक कहेस, "आप
क बेटवन अउ बिटियन सब स बड़का भाई क घर खइया
क खात रहेन अउ दाखरस पिअत रहेन। 19ठीक तबहिं
रेगिस्तान स एका-एक एक ठु तेज आँधी उठी अउर उ
मकान क उड़ाइके ढहाइ दिहस। मकान आप क पूतन, अउ
बिटियन क ऊपर आइ पड़ा अउर उ पचे मरि गएन। आप
क खबर देइ बरे सिरिफ मइँ ही बचिके निकरि पावा हउँ।"

20अय्यूब जब इ सुनेस तउ उ आपन ओढ़ना फारि डाएस
अउर इ देखावइ बरे उ दु:खी अउर वियाकुल अहइ, उ
आपन मूड़ँ मुड़ाइ लिहस। अय्यूब तब धरती पइ गिरिके
दण्डवत किहस। 21उ कहेस:

"मोर जब इ संसारे क बीच जनम भवा रहा, मइँ तब
नंगा रहेउँ, मोरे लग्गे तब कछू भी नाहीं रहा। जब मइँ मरब
अउ इ संसारे क तजब, मइँ नंगा होब अउर मोरे लग्गे कछू
न होइ। यहोवा ही देत ह अउर यहोवा ही लेत, यहोवा क
नाउँ क बड़कई करा।"

22जब इ सबहिं कछू घटना घटत रहा, अय्यूब न ही
कउनो पाप किहस अउर न ही परमेस्सर क दोख दिहस।

सबा रेगिस्तान क लोगन क एक समूह। उ पचे लोगन पइ
हमला कइके ओनकर धन दौलत लूट लेत रहेन।

सइतान फुन अय्यूब क दुःख देत ह

2 फुन एक दिन, यहोवा स मिलइ बरे सरग दूत आएन। सइतान भी ओनके संग रहा। सइतान यहोवा स मिलइ आवा रहा। 2यहोवा सइतान स पूछेस, "तू कहाँ रह्या"

सइतान यहोवा क जवाब दिहेस, "मइँ धरती पइ एहर-ओहर घूमत रहेउँ।"

3एह पइ यहोवा सइतान स पूछेस, "का तू मोर सेवक अय्यूब पइ धियान देत रहत अहा? ओकर जइसा धरती पइ कउनो नाहीं अहइ। अय्यूब ईमानदार अउ बिस्सासी मनई अहइ। उ हमेसा परमेस्सर क उपासना करत ह, बुराई स दूर रहत ह। उ अबहुँ भी ईमानदारी राखत ह हालाँकि तू मोका प्रेरित किहे रह्या कि मइँ बिना कारण ही ओका नस्ट कइ देउँ।"

4सइतान जवाब दिहस, "खाल क बदले खाल! कउनो मनई जिअत रहइ बरे, जउन कछू ओकरे लगे अहइ, सब कछू दइ डावत ह। 5यह बरे अगर तू आपन सक्ती क प्रयोग ओकरे देह क नोस्कान पहोंचावइ बरे करा, तउ उ सीधा ही तोहका कोसइ लागी।"

6तउ यहोवा सइतान स कहेस, "अगर अइसा अहइ, तउ मइँ अय्यूब क तोहार हवाले करत हउँ, मुला तोहका ओका मार डावइ क छूट नाहीं अहइ।"

7एकरे पाछे सइतान यहोवा क लगे स चला गवा। उ अय्यूब क दुःख देइवाला फोड़न क दइ दिहस। इ सबइ पीरा देइवाला फोड़न ओकरे गोड़े क तलवा स लइके ओकरे मूँड़े क ऊपर तलक देह मँ फइल गएन। 8तउ अय्यूब कूड़ा क ढेरी क लगे बइठ गवा। ओकरे लगे एक ठु ठीकरा रहा, जेहसे उ आपन पीरा दायक फोड़न क खजुआवा करत रहा। 9अय्यूब क पत्नी ओसे कहेस, "का तू अबहुँ तलक ईमानदार रहइ चाहत हीं? तू परमेस्सर क कोसिके मर काहे नाहीं जात्या!"

10अय्यूब जवाब देत भए आपन पत्नी स कहेस, "तू तउ एक मूरख मेहरारु क तरह बातन करति अहा। देखा, जब परमेस्सर उत्तिम वस्तुअन क देत ह, हम ओनका अंगीकार कइ लेइत ह। तउ हमका दुःख क भी अपनावइ चाही अउ सिकाइत नाहीं करइ चाही।" इ समूचइ दुःखे मँ भी अय्यूब कउनो पाप नाहीं किहस। परमेस्सर क खिलाफ उ कछू नाहीं बोला।

अय्यूब क तीन मीतन क ओसे भेटंइ आउब

11अय्यूब क तीन मित्र रहेन: तेमानी क एलीपज, सूही क बिलदद अउर नामाती क सोपर। एँन तीनहुँ मीतन अय्यूब क संग जउन बुरी घटना भइ रहिन, ओन सबन क बारे मँ सुनेन। एँन तीनहुँ मीत आपन-आपन घर तजिके आपुस मँ एक दूसर स भेंटेन। उ पचे इ निहचय किहेन कि उ पचे अय्यूब क लगे जाइके ओकरे बरे सहानुभूति परगट करइँ अउ ओकर हिम्मत बँधावइँ। 12जब इ तीनहुँ मीत दूर स अय्यूब क लखेन, तउ उ पचे ओका बहोत मुस्किल स पहिचान पाएन। उ पचे भोंकारा मारिके रोवइ लागेन। उ पचे आपन ओढ़ना फाड़ि डाएन। आपन दुःख अउ आपन बेचैनी देखावइ बरे उ पचे आपन आपन मूँड़न पइ माटी डाएन। 13फुन उ सबइ तीनहुँ मीत अय्यूब क संग सात दिन अउ सात रात तलक भुइँया पइ बइठा रहेन। अय्यूब स कउनो एक सब्द तलक नाहीं कहेस काहेकि उ पचे लखत रहेन कि अय्यूब भयानक पीरा मँ रहा।

अय्यूब क उ दिना क कोसब जब उ जन्मा रहा

3 तब अय्यूब आपन मुँह खोलेस अउर उ दिन क कोसइ लाग जब उ पइदा भवा रहा। 2-3उ कहेस:

"जउने दिन मइँ पइदा भवा रहेउँ, बर्बाद होइ चाहीं रहा। उ राति कबहुँ न आई होइ चाही जब उ पचे कहे रहेन कि 'एक ठु लरिका पइदा भवा अहइ।'

4उ दिन अँधियारा स भरा जाइ चाहीं रहा। परमेस्सर उ दिन क बिसारि जात चाहीं रहा। उ दिन प्रकास न चमका चाही रहा।

5उ दिन अँधियारा स पूर्ण बना होत चाहीं रहा जेतना कि मउत अहइ। बादर उ दिन क घेरे रहतेन चाही रहा। जउनो दिन मइँ पइदा भवा करिया बादर प्रकास क डेरवाइ क खदेर देतेन चाहीं रहा।

6उ राति क गहिर अँधियारा जकरि लेइ, उ राति क गनती न होइ। उ राति क कउनो महीना मँ सामिल जिन करा।

7उ राति कछू भी पइदा न करइ। कउनो भी आनन्द क ध्वनि उ राति क सुनाई न देइ।

8सराप देइ मँ माहिर मनइयन क उ मनइयन क साथ जउन लिब्यातान* क जगवाइ मँ सामर्थ अहइ, क उ दिना क सराप देइ द्या जउन दिना मइँ पइदा भएउँ।

9उ दिन क साँझ तारा करिया पड़ जाइ द्या। उ रात भिन्सारे क रोसनी बरे तरसइ अउर उ प्रकास कबहुँ न आवइ द्या। उ सूरज क पहिली किरन न लखि सकइ।

10काहेकि उ रात मोका पइदा होइ स नाहीं रोकेस। उ रात मोका इ सबइ कस्ट झेलइ स नाहीं रोकेस।

11मइँ काहे नाहीं मरि गएउँ जब मइँ पइदा भवा रहेउँ? जन्म क समइ ही मइँ काहे नाहीं मरि के बाहर आए रहेउँ?

12काहे मोर महतारी गोदी मँ मोका राखेस? काहे मोर महतारी क छातियन मोका दूध पियाएन।

13अगर मइँ तबहिं मरि गवा होतेउँ जब मइँ पइदा भवा रहेउँ तउ अब मइँ सान्ति स होतेउँ। अगर अइसा होतेन मइँ सोवत रहतेउँ अउर आराम पउतेउँ।

14राजा लोगन अउ बुद्धिमान मनइयन क संग जउन पृथ्वी पइ पहिले रहेन। ओन लोग आपन बरे ठउर जगह बनाएन, जउन अब नस्ट होइके मिट चुका अहइँ।

15मोका ओन सासक लोगन क संग दफनावा जात रहतेउँ जउन सोना-चाँदी स आपन घर भरे होतेन।

16मइँ गर्भपात मँ ही मरि जात रहतेउँ। मइँ दिन क प्रकास नाही देखि रहतेउँ।

लिब्यातान होइ सकत ह इ एक ठु भारि भरकम समुद्री दोत्य रहा। पुराने जमाने क साहित्य क अनुसार, परमेस्सर लिब्यातान क खिलाफ लड़त रहेन अउर एका सर्जन क सुरू मँ ही हराए दिहेन। लोग सोचत रहेन कि जादू एकर मदद स सुर्य ग्रहन पइदा करत रहेन।

17दुट्ठ जन दु:ख देब तब तजि देत हीं जब उ पचे कब्र
मैं होत हीं अउर थके लोग कब्र मैं आराम पावत हीं।
18हिआँ तलक कि बंदी भी सुख स कब्र मैं रहत हीं।
हुआँ उ पचे आपन अत्याचारियन क आवाज नाहीं सुनत हीं।
19हर तरह क लोग कब्र मैं रहत हीं चाहे उ पचे महत्व
नामा होइँ या साधारण। हुआँ दास आपन सुआमी स छुटकारा
पावत ह।
20अइसे मनई क प्रकास काहे देत रहा जउन दु:ख झेल
रहा ह? अइसे मनइ क काहे जिन्नगी देत रहा ह जेकर
जिन्नगी कड़ुवापन स भरा रहत ह?
21अइसा मनई मनइ चाहत ह मुला ओकर मउत नाहीं
आवत। अइसा दु:खी मनई मउत पावइ क उहइ तरह तरसत
ह जइसे कउनो छुपे खजाना बरे।
22अइसे मनइयन कब्र पाइके खुस होत हीं अउर आनंद
मनावत हीं।
23परमेस्सर ओनसे ओनकर भविस्स छिपाए राखत ह
अउर ओनकर चारिहुँ कइँती सुरच्छा बरे देवार खड़ी करत
ह।
24मोर गहरी उदासी मोर बरे रोटी बन गवा ह। मोर
विलाप जल धारा क तरह बाहेर फूट पड़त ह।
25मइँ जउने डेराउनी बात स डेरात रहेउँ कि कहूँ उहइ
मोरे संग न घटि जाइ अहइ मोरे संग घटि गइ। अउर
जउने बाते स मइँ सबन त जियादा डरेउँ, उहइ मोरे संग होइ
गइ।
26न ही मइँ सान्त होइ सकत हउँ, न ही मइँ आराम कइ
सकत हउँ। मइँ बहोत ही विपत्ति मैं हउँ।"

एलीपज क कथन

4 1-2तब तेमान क एलीपज जवाब दिहस: "अगर मइँ
तोहका कउनो राय देउँ तउ का तू नाराज़ होब्या?
अगर अइसा अहइ तउ भी मोका बोलइ चाही।
3"हे अय्यूब, तू बहोत स लोगन क सिच्छा दिहा अउर
दुर्बल हाथन क तू सक्ती दिहा।
4जउन लोग लड़खड़ात रहत रहेन तोहार सब्दन ओनका
हिम्मत बँधाए रहेन तू निर्बल गोड़न क आपन उत्साह स
सबल किहा।
5मुला अब तोह पइ विपत्ति क पहाड़ टूट पड़ा बाटइ
अउर तोहार हिम्मत टूट गइ अहइ। विपदा क मार तोह पइ
पड़ी अउर तू ब्याकुल होइ उठ्या।
6तोहका उ परमेस्सर पइ बिस्सास करइ चाही जेका तू
उपासना करत ह। आपन ईमानदारी क आपन आसा बनने
द्या।
7अय्यूब, इ बात क याद राखा कि कउनो भी निर्दोख
कबहुँ नाहीं नस्ट कीन्ह गएन। नीक मनई कबहुँ नाहीं तबाह
कीन्ह गवा अहइ।
8मइँ अइसे लोगन क लखेउँ ह जउन कस्टन क बढ़ावत
हीं अउर जउन जिन्नगी क कठिन करत हीं। मुला उ पचे
सदा ही दण्ड भोगत हीं।
9परमेस्सर क दण्ड ओन लोगन क मारि डावत ह, अउर
ओकर किरोध ओनका नस्ट करत ह।
10दुर्जन सेर क तरह गुर्रात अउ दहाड़त हीं। मुला
परमेस्सर ओन दुर्जनन क चुप करावत ह।
11बुरे लोग ओन सेरन क तरह होत हीं जेनके लगे
सिकार बरे कछू नाहीं होत। उ पचे मरि जात हीं अउर
ओनकर गदेलन एहर-ओहर बिखराइ जात हीं।
12मोरे लगे एक सँदेसा चुपचाप पहुँचावा गवा, अउर मोरे
काने मैं ओकर भनक पड़ी।
13जउने तरह राति क बुरा सपना नीदं क उड़ाइ देत ह,
14मइँ डेराइ गएउँ अउ काँपइ लागेउँ। मोर सबइ हड्डियन
हिल गइन।
15मोरे समन्वा स एक आतिमा जइसी गुजरी जेहसे मोरे
बदन मैं रोंगटा खड़ा होइ गएन।
16उ आतिमा मोर समन्वा उठेस, मुला मइँ एका नाही
पहिचान सकउँ। मोरी आँखिन क समन्वा एक सरूप खड़ा
रहा। हुवाँ सन्नाटा स छावा रहा। फुन मइँ एक बहोत स
सान्त आवाज सुनेउँ। उ पचे कहेस,
17'का एक मनई परमेस्सर क समन्वा दोखरहित होइ
सकत ह? का एक मनई आपन सृजनहार स जियादा सुद्ध
होइ सकत ह?
18परमेस्सर आपन सरग क सेवकन तक पइ भरोसा नाहीं
कइ सकत। परमेस्सर क आपन दूतन तलक मैं दोख मिलि
जात हीं।
19तउ मनई तउ अउर भी जियादा गवा गुजरा बा। मनई
तउ कच्ची माटा क घरौंदा मैं रहत हीं। एँन माटी क घरौंदन
क नींव धूरि मैं रखी गइ अहइ। इ सबइ लोगन क ओहसे
भी जियादा आसानी स मसलिके मार दीन्ह जात ह, जउने
तरह भुनगन मसलिके मार दीन्ह जात ह।
20लोग भोर स साँझ क बीच मैं मर जात हीं मुला ओन
पइ कउनो धियान तलक नाहीं देत ह। उ पचे मरि जात हीं
अउर सदा बरे चला जात हीं।
21ओनके तम्बूअन क खूंटी उखाड़ दीन्ह जात हीं अउर इ
सबइ लोग बिना बुद्धि क मरि जात हीं।'

5 "अय्यूब, अगर तू चाहा तउ पुकारिके लखि ल्या मुला
तोहका कउनो भी जवाब नाहीं देइ। तू कउनो भी
सरगदूत कइँती मुड़ नाहीं सकत ह।
2मूरख क किरोध उहइ क नास कइ देइ। मूरख मनई क
ईर्स्या ओका ही मरि डइहीं।
3मइँ एक मूरख क लखे रहेउँ जउन सोचत रहा कि उ
सुरच्छित बाटइ। जेकर घर एका-एक सरापित कइ दीन्ह ग
रहा।*
4अइसे मूरख मनई क सन्तानन क कउनो भी मदद नाहीं
कइ सका। कचहरी मैं ओनका बचइया कउनो नाहीं रहा।
5ओकरी फसल क भूखे लोग खाइ गएन। हिआँ तलक
कि भूखे लोग काँटन क झाड़ियन क बीच जमा भवा अन्न
क उठाइ लइ गएन। जउन कछू भी ओन लोगन क लगे
रहा उ सबइ चिजियन क लालची मनइयन उठाइके लइ
गएन।
6मुसीबत माटी स नाहीं निकरत ह, न ही विपत्ति मैदान मैं
जामत ह।

जेकर ... रहा या मुला मइँ ओकरे घरे क एका-एक सरापेतउँ।

7मनई क जन्म दु:ख भोगइ बरे भवा ह। इ ओतना ही फुरइ अहइ जेतना फुरइ अहइ कि आगी स चिनगारी ऊपर उठत ह।

8मुला अय्यूब, अगर तोहरी जगह मइँ होतेउँ तउ मइँ परमेस्सर क लगे जाइके आपन दु:खड़ा कहितेउँ अउर ओकरे लगे राय माँगतेउँ।

9परमेस्सर क कारनामा समुझइ मँ बहोत अद्‌भुत अहइँ। परमेस्सर क अजूबा गना नाहीं जाइँ।

10परमेस्सर धरती पइ बर्खा क पठवत ह, अउर उहइ खेतन मँ पानी पठवा करत ह।

11परमेस्सर विनम्र लोगन क ऊपर उठावत ह। उ ओका ऊपर उठाइके दु:खी क धन क बचावत ह।

12परमेस्सर चालाक अउ दुट्‌ठ लोगन क कुचाल क रोक देत ह। एह बरे ओनका सफलता नाहीं मिला करत।

13परमेस्सर चतुर क उहइ क चतुराइ भरी जोजना मँ पकरि लेत ह। एह बरे ओनकर चतुराइ भरी सबइ जोजना असफल होतिन।

14उ सबइ चालाक लोग दिन क प्रकास अँन्धियारा क नाईं होइ गवा। हिआँ तलक कि दुपहर मँ भी उ पचे आधी-रात क जइसा ठोकर खात हीं।

15परमेस्सर दीन मनई क मउत स बचावत ह अउर ओनका सक्तीसाली चतुर लोगन क सक्ती स बचावत ह।

16एह बरे दीन मनई क भरोसा अहइ कि परमेस्सर इ होइ क निआव नाही करब।

17उ मनई भाग्यवान अहइ, जेकर परमेस्सर सुधार करत ह एह बरे जब सर्व सक्तीसाली परमेस्सर तू पचन्क सजा देत होइ तउ तू आपन दु:खड़ा जिन रोआ।

18परमेस्सर ओन घावन पइ पट्‌टी बाँधत ह जेनका उ दिहस ह। उ चोट पहोंचावत ह मुला ओकर ही हाथ चंगा भी करत हीं।

19उ तोहका छ: विपत्तियन स बचावा। हा! सात विपत्तियन मँ तोहका कउनो नोस्कान न होइ।

20अकाल क समइ परमेस्सर तोहका मउत स बचाइ अउर परमेस्सर जुद्‌ध मँ तोहार मउत स रच्छा करी।

21जब लोग आपन कठोर सब्दन स तोहरे बरे बुरी बात बोलिहीं, तब परमेस्सर तोहार रच्छा करी। विपत्तियन क समइ तोहका डेराइ क जरूरत नाहीं होइ।

22तू विनास अउ भुखमरी क समइ मँ भी खुस रहब्या। अउर तोहका जंगली जनावरन स भी कबहुँ नाहीं डेराइ चाही।

23मैदानन क चट्‌टानन तोहार साथी क होइ। जंगली जनावरन भी तोहरे संग सान्ति रखत हीं।

24तू सान्ति स रहब्या काहेकि तोहार तम्बू सुरच्छित अहइ। तू पचे आपन भेड़न क बाड़ा भी लखब्या, अउर ओहमाँ एक भी भेड़ हेराइ नाहीं।

25तोहार बहोत सन्तानन होइहीं। उ सबइ एँतना होइहीं जेतना घासे क पाती भुइयाँ पइ अहइँ।

26तू उ पका भवा गोहूँ जइसा होब्या जउन कटनी क समइ तलक पकत रहत ह। हाँ, तू पूरी उमर तलक जिअत रहब्या।

27अय्यूब, हम पचे इ सबइ बातन जाँचित ह अउर हम पचे जानित ह कि इ सबइ फुर अहइँ। एह बरे अय्यूब मोर सुना अउर तू इ सबन्क खुद आपन आप समुझ ल्या।"

अय्यूब एलिपाज क जवाब देत ह

6 फुन अय्यूब जवाब दिहेस, 2"मोर पीरा अउ दु:ख क तराजु मँ तउलइ द्‌या।

3मोर व्यथा समुद्‌दर क समूची रेत स भी जियादा भारी होइ। एह बरे मइँ गँवार जइसा बात किहेउँ ह।

4सर्वसक्तीमान परमेस्सर क बाण मोह माँ घुसा अहइँ अउर मोर प्राण ओन बाणन क विख क पिअत रहत ह। परमेस्सर क उ सबइ भयानक सस्त्र मोरे खिलाफ एक संग रखा भवा अहइँ।

5तोहार सब्दन कहइ बरे आसान अहइ जब कछू भी बुरा नाहीं भएन ह। हिआँ तलक कि जंगली गदहा भी नाहीं रेकंत अगर ओकरे लगे खाइ क रहइ। इहइ तरह कउनो भी गइया तब तलक नाहीं रँभात जब तलक ओकरे लगे चरइ क चारा अहइ।

6बे नमक क भोजन बिना स्वाद क होत ह। अउर अण्डा क सफेदी मँ भी स्वाद नाहीं होत ह।

7मोरे बरे तोहार सब्द ठीक उहइ तरह अहइ। इ भोजन क छुअइ स मइँ इन्कार करत हउँ। इ तरह क भोजन मोका सड़ा भवा लागत ह।

8परमेस्सर क मोर माँग क अनुमोदन करइ द्‌या अउर मोका उ देइ द्‌या जे मँ चाहत हउँ।

9परमेस्सर क मोका सराप अउर मार डावइ द्‌या!

10अगर उ मोका मारत ह तउ एक ठु बात क चैन मोका रही, आपन अनन्त पीरा मँ भी मोका एक ठु बाते क खुसी रही कि मइँ कबहुँ भी आपन पवित्र क हुकुमन पइ चलइ स इन्कार नाहीं किहेउँ।

11मोर सक्ती छीण होइ चुकी बाटइ एह बरे मोका जिअत रहइ क आसा नाहीं अहइ। मोका पता नाहीं कि आखीर मँ मोरे संग का होइ? एह बरे धीरज धरइ क मोरे लगे कउनो कारण नाहीं अहइ।

12मइँ चट्‌टान क नाईं मजबूत नाहीं अहउँ। न ही मोर देह काँसे स रची गइ अहइ।

13अब तउ मोहमाँ एँतनी भी सक्ती नाहीं कि मइँ खुद क बचाइ लेउँ। काहेकि मोहसे कामयाबी छीन लीन्ह गइ अहइ।

14काहेकि उ जउन आपन दोस्तन खातिर निस्ठा देखावइ स इन्कार करत ह। उ सर्वसक्तीमान परमेस्सर क भी अपमान करत ह।

15मुला मोरे बन्धु लोगो, तू बिस्सास क जोग्ग नाहीं रह्या। तू पचे नदी-तल क नाईं अबिस्सासी ह जेहमाँ बरिस क कछू भाग मँ ही जल रहत ह।

16उ सबहिं अँन्धियारा नदी-तल, बरफ स उमड़ि जात ह जब बरफ टेघरत हीं।

17मुला जब मौसम गरम अउ सूखा होत ह, तब पानी बहब बंद होइ जात ह, अउर जल क धारा झुराइ जात हीं।

18बइपारी लोग्न क दल आपन रास्ता क तजि देत हीं
अउर रेग्गिस्ताने मँ प्रवेस कइ जात हीं अउर उ पचे लुप्त
होइ जात हीं।
19तेमा क वइपारी दल जल क हेरत रहेन अउर सबा क
राही आसा क संग लखत रहेन।
20उ पचन्क विस्सास रहा कि पानी मिली मुला ओनका
निरासा मिली।
21अब तू पचे ओन जल धारन क समान अहा। तू पचे
मोर सबइ यातना क लखत अहा अउ डेरान अहा।
22का मइँ कहेउँ कि 'मोका उपहार द्या?' का मइँ कहेउँ
कि 'मोर बरे रिस्वत क रूप मँ एक भेंट द्या?'
23का मइँ तू पचन्स कहेउँ, 'मोर दुस्मनन स मोका बचाइ
ल्या? का मइँ तोहका कहेउँ कि ओका मुक्ती-धन द्या जउन
मोका पकरेस ह?'
24एह बरे अब मोका सिच्छा द्या अउर मइँ सान्त होइ
जाब। मोका देखाँइ द्या कि मइँ का बुरा किहेउँ ह।
25सच्चा सब्द ताकतवर होत हीं, मुला तू पचे का
आलोचना करत ह?
26का तू आलोचना क अविस्कार करत ह? का तू एहसे
भी जिआदा निरासाजनक सब्द बोलब्या?
27हिआँ तलक कि जुआ मँ अनाथ क भी वस्तुअन क
लेइ चाहत ह। हिआँ तलक कि तू आपन निज मीत क भी
बेचइ चाहत ह।
28मुला अब, मोरे मुख क परखा। मइँ तोहसे झूठ नाहीं
बोलब।
29एह बरे, आपन मने क बदल डावा। एक भी अनियाय
जिन होइ द्या, फुन स जरा सोचा काहेकि मइँ कउनो बुरा
काम नाहीं किहेउँ ह।
30मइँ झूठ नाहीं कहत हउँ। मोका भला अउ बुरे लोग्न
क पहिचान अहइ।"

7 अय्यूब कहेस, "मनई क धरती पइ कड़ा सघर्ष करइ
क पड़त ह। ओकर जिन्नगी भाड़े क मजदूर क
जिन्नगी जइसी होत ह।
2मनई उ भाड़ा क मजदूर जइसा अहइ, जउन दिन क
अन्त मँ ठंडी छाँह चाहत ह, अउ मजदूरी क इन्तज़ार करत
ह।
3महीना दर महीना बेचइनी क बीत गवा अहइँ अउर पीरा
भइ राति दर रात मोका दइ दीन्ह गइ अहइ।
4जब मइँ ओलरत हउँ, मइँ सोचत रहत हउँ, 'मोरे उठइ
क अबहुँ अउर कितनी देर अहइ?' मुला इ रात तउ घसेटत
चला जात ह। मइँ तउ पीरा झेल रहत हउँ अउ करवट
बदलत हउँ जब तलक सूरज नाहीं निकरि आवत।
5मोर तन कीरन अउ धूरि स ढाक लीन्ह अहइ। मोर
चमड़ी चटक गइ अहइ अउर एहमाँ रिसत भए फोड़ा भरि
गवा अहइँ।
6मोर दिन जुलाहा क फिरकी स भी जियादा तेज चाल स
बीतत अहइँ। मोर जिन्नगी क आखीर बिना कउनो आसा क
होत अहइ।
7हे परमेस्सर, याद राखा, मोर जिन्नगी सिरिफ एक ठु
साँस अहइ। अब मोर आँखी कछू भी नाहीं लखिहीं।
8अबहिं तू मोका लखत अहा मुला फुन तू मोका नाहीं
लख पउब्या। तू मोका हेरब्या मुला तब तलक मइँ जाइ
चुका होब।
9एक बादर छोटा होइ जात ह अउर आखर मँ लुप्त होइ
जात ह। इ तरह एक मनई जउन मर जात ह अउर कब्र मँ
गाड़ दीन्ह जात ह, उ फुन वापिस नाहीं आवत ह।
10उ आपन पुराना घरे क वापिस कबहुँ नाहीं लउटी।
ओकर घर ओका फुन कबहुँ भी नाहीं जानी।
11एह बरे मइँ चुप नाहीं रहब। मइँ सब कहि डाउब। मोर
आतिमा दुखी अहइ अउर मोर मन कड़ुआहट स भरा अहइ,
एह बरे मइँ उ सब बातन क बारे मँ सिकायत करब जउन
मोर संग घटेस ह।
12हे परमेस्सर, तू मोर पइ पहरेदार काहे राखेस ह? का
मइँ समुद्दर हउँ, या समुद्दर क कउनो दैत्य?
13-14हे परमेस्सर, जब मोका लग्गत ह कि खाट मोका
सान्ति देइ अउर मोर पलंग मोका चइन अउ बिस्त्राम देइ,
तब मोका सपना मँ डरावत ह।
15मइँ आपन गला घोंटि जाइ पसन्द करब्या। मउत इ
देह मँ रहइ स बेहतर अहइ।
16मइँ आपन जिन्नग्गी स घिना करत हउँ। मइँ हमेसा
अइसा जिअत रहब नाहीं चाहत हउँ। मोका अकेल्ला रहइ
द्या। मोर जिन्नग्गी बेकार अहइ।
17हे परमेस्स, मनई तोहरे बरे काहे एँतना महत्वपूर्ण
अहइ? काहे मनई पइ तोहका एँतना धियान देइ चाही?
18हर भिन्सारे काहे तू मनई क लग्गे आवत ह अउर हर
छिन तू काहे ओका परखा करत अहा?
19हे परमेस्सर, तू कबहुँ भी मोका नज़र अन्दाज़ नाहीं
करत ह अउर मोका एक छन अकेल्ला नाहीं छोड़त ह।
20हे परमेस्सर, तू हरेक चिजियन पइ जउन हम पचे करत
हीं निग्गाह रखत ह! जदि मइँ पाप किहा तउ मइँ का किहा?
तू मोका काहे निसाना बनाया ह? मइँ तोहार बरे काहे बोझ
बन गवा हउँ।
21का तू मोर सबइ ग्गलती क छिमा नाहीं करत्या अउर
मोरे पापन क तू काहे छिमा नाहीं करत्या? मइँ हाली ही मरि
जाब अउर कब्र मँ चला जाब। जब तू मोका हेरब्या मुला
तब तलक मइँ जाइ चुका होब।"

बिल्दद अय्यूब स बोलत ह

8 एकरे पाछे सूह प्रदेस क बिलदद जवाब देत भए
कहेस।
2"तू कब तलक अइसी बातन करत रहब्या? तोहार सब्द
तेज आँधी क तरह बहत अहइँ।
3परमेस्सर सदा स्वच्छ रहत ह। निआउवाली बातन क
सर्वसक्तीवाला परमेस्सर कबहुँ नाहीं बदलत ह।
4एह बरे अग्गर तोहार सन्तानन परमेस्सर क खिलाफ पाप
किहन ह तउ उ ओनका राजा दिहस ह। आपन पापन खातिर
ओनका भोग्गइ क पड़ा ह।
5मुला अब अय्यूब, परमेस्सर कइँती निग्गाह करा, अउर
सर्वसक्तीमान परमेस्सर स ओकर दाया पावइ खातिर बिनती
करा।

6अगर तू पवित्तर अउर ईमानदार अहा, तउ उ हाली तोहार मदद बरे आइ। उ तोहार नीक घरे क रच्छा करब।
7जउन कछू भी खोया उ तोहका नान्ह स बात लग्गी। काहेकि तोहार भविस्स बड़ा ही सुफल होइ।
8ओन बुढ़वा लोग्न स पूछा अउर पता करा कि ओनकर पुरखन क सीखे रहेन।
9काहेकि अइसा लाग्त ह जइसा कि हम तउ बस काल्ह ही पइदा भएन ह, हम कछू नाहीं जानित। परछाईं क तरह हमार उमर भुइँया पइ बहोत छोट क अहइ।
10होइ सकत ह कि बुढ़वा लोग तोहका कूछ सिखाइ सकइँ। होइ सकत ह जउन उ पचे सीखेन ह उ पचे मोका सिखाइ सकइँ।"
11बिलदद कहेस, "का भोजपत्र क बृच्छ दलदल भुइँया क इलावा कहुँ बढ़ सकत ह? का नरकट बे पानी क बाढ़ि सकत ह?
12नाहीं, अग्र पानी झुराइ जात ह तउ उ पचे भी मुरझाइ जइहीं। ओनका काटा जाइ जोग्ग काटिके काम मँ लिआवइ क उ पचे बहोत छोट रहि जइहीं।
13उ मनई जउन परमेस्सर क बिसारि जात ह, नरकट क तरह होत ह। उ मनई जउन परमेस्सर क बिसारि जात ह ओकरे बरे कउनो आसा नाहीं अहइ।
14उ मनई क बिस्सास बहोत दुर्बल होत ह। उ मनई मकड़ी क जाला क सहारे रहत ह।
15अग्र कउनो मनई मकड़ी क जाले क सहारा लेत ह, इ टूटि जाइ। अग्र उ मकड़ी क जाल क पकरत ह, इ नस्ट होइ जाइ।
16उ मनई उ पौधे क नाईं अहइ जेकरे लग्गे पानी अउ सूरज क रोसनी बहोतइ अहइ। ओकर डारियन बग्गिया मँ हर कइँती सँचरत हीं।
17उ पाथर क टीला क चारिहुँ कइँती आपन जड़न क फइलावत ह अउ चट्टान मँ जमइ बरे कउनो ठउर हेरत ह।
18जब पौधा आपन जग्गह स उखाड़ दीन्ह जात ह, तउ कउनो भि नाहीं जान पात ह कि हुआँ कबहुँ कउनो पौधा रहा।
19मुला उ पौधा हुआँ खुस रहा, अब दूसर पउधन हुआँ जमिहीं, जहाँ कबहुँ उ पउधा रहा।
20मुला परमेस्सर कबहुँ भी निर्दोख मनई क नाहीं तजी अउर उ बुरे मनई क सहारा नाहीं देइ।
21अबहुँ भी परमेस्सर तोहरे मुँह क हँसी स भरि देइ। तोहरे ओंठन क खुसी स चहकाइ देइ।
22परमेस्सर तोहरे दुट्ठ दुस्मनन क लज्जा स झुकाइ देइ। अउर ओनकर घरन क नास कइ देइ।"

अय्यूब बिलदद क जवाब देत ह

9 फुन अय्यूब जवाब दिहस।
2"हाँ, मइँ जानत हउँ कि तू फुरइ कहत ह मुला मनई परमेस्सर क समन्वा निर्दोख कइसे होइ सकत ह?
3मनई परमेस्सर स बहस नाहीं कइ सकत। परमेस्सर मनई स हजारन सवाल कइ सकत ह अउर कउनो ओनमाँ स एक ठु क भी जवाब नाहीं दइ सकत ह।
4परमेस्सर बुद्धिमान अउर सक्तीसाली बाटइ। अइसा कउनो मनई नाहीं जउन परमेस्सर क कामयाबी क खिलाफ करी।
5जब परमेस्सर कोहाइ जात ह, उ पहाड़न क हटाइ देत ह, अउर उ सबइ समुझ तलक नाहीं पउतेन।
6परमेस्सर भुइँया क कँपावइ बरे भुइँडोल पठवत ह। परमेस्सर भुइँया क खम्भन क हिलाइ देत ह।
7परमेस्सर सूरज क आग्या दइ सकत ह अउर ओका उग्गइ स रोक सकत ह। उ तारन क बंद कइ सकत ह ताकि उ सबइ न चमकइँ।
8सिरिफ परमेस्सर अकासन क रचेस ह। उ साग्रे क लहरन पर बिचरि सकत ह।
9परमेस्सर सप्तर्सि, मृग्सिरा अउर कचपचिया तारन क बनाएस ह। उ ओन ग्रहन क बनाएस जउन दक्खिन क अकास पार करत हीं।
10परमेस्सर अइसेन अद्भुत करम करत ह जेनका मनई नाहीं समुझ सकत। परमेस्सर क महान अचरज भरे करमन क कउनो अन्त नाहीं अहइ।
11परमेस्सर जब मोरे लग्गे स निकरत ह तउ मइँ ओका लख नाहीं पावत हउँ। परमेस्सर जब मोरी बग्ल स निकरि जात ह तउ भी मइँ जान नाहीं पावत हउँ।
12अग्र परमेस्सर छोरइ लाग्त ह तउ कउनो भी ओका रोक नाहीं सकत। कउनो भी ओहसे कह नाहीं सकत कि 'तू का करत अहा?'
13परमेस्सर आपन किरोध क रोकी नाहीं। हिआँ तलक कि राहाब* क सहायक भी परमेस्सर क सक्ती क आगे झुकत हीं।
14एह बरे परमेस्सर स मइँ बहस नाहीं कइ सकत। मइँ नाहीं जानत कि ओहसे का कहा जाइ।
15यद्यपि मइँ तउ निर्दोख अहउँ, मोरे लग्गे कउनो विकल्प नाहीं अहइ किन्तु ओहसे जउनो कि मोका निआव करत ह दाया क आग्रह कइ सकत हउँ। मइँ सिरिफ ओसे जउन मोर निआउ करत ह, दाया क भीख माँग सकत हउँ।
16अग्र मइँ ओका ग्गोहरावउँ अउर उ जवाब देइ, तबहुँ मोका बिस्सास नाहीं होइ कि उ सच ही ओह पइ धियान देत ह जउन मइँ कहत हउँ।
17परमेस्सर मोका कुचरइ बरे तूफान पठइ अउर उ मोका अकारण ही अउर जियादा घाव देइ।
18परमेस्सर मोका फुन साँस नाहीं लेइ देइ। उ मोका अउर जियादा दुख देइ।
19कउनो मनई परमेस्सर क सक्ती क मुकाबला मँ हराइ नाही सकत ह। कउनो मनई परमेस्सर क अदालत मँ लइ बरे मजबूर नाहीं कइ सकत ह।
20चाहे मइँ निर्दोख अहउँ, जउन कछू भी मइँ कहत हउँ उ मोका दोखी ठहराउब। चाहे मइँ कउनो बुरा काम नाहीं किहा, उ मोका भ्रस्ट क जइसा बनाउब्या।

राहाब अजग्र या साग्रे क दैत्य अहइ। लोग्न सोचत अहा कि राहाब साग्रे पइ नियंतरन रखत ह। अकसर राहाब परमेस्सर क दुस्मन क या कउनो बुरा काम करइ क प्रतीक रहा।

21मइँ पाप रहित हउँ। मुला मोका आपन ही परवाह नाहीं
अहइ मइँ खुद आपन ही जिन्नगी स घिना करत हउँ।
22मइँ खुद स कहत हउँ, 'हर कउनो क संग एक समान
ही घटित होइ। निरपराध लोग वइसेन ही मरत हीं जइसे
अपराधी मरत हीं। परमेस्सर ओन सबक जिन्नगी क अन्त
करत ह।'
23का परमेस्सर मज़ाक करत ह जब अचान्क विपत्ति
आवत अउर कउनो निर्दोख मनई मारा जात ह?
24अगर निआधीस क आँखिन क ढाँपि दीन्ह जाइ तउ
धरती पइ दुट्ठन क राज होइ जाब्या। अगर इ परमेस्सर
नाहीं किहस, तउ फुन कउन किहस ह?
25कउनो तेज धावक स तेज मोर दिन परात अहइँ। मोर
दिन उड़िके बीतत अहइँ अउर ओनमाँ कउनो खुसी नाहीं
अहइ।
26तेजी स मोर दिन बीतत अहइँ जइसे भोजपत्र क नाव
बहत चली जात ह। मोर दिन अइसे हीं बीतत अहइँ जइसे
उकाब आपन सिकारे पइ टूट पड़त होइ!
27जदि मइँ कह सकब, 'मइ सिकाइत नाहीं करब। मइँ
आपन दर्द भूल जाब। अउर खुस होइ जाब्या।'
28किन्तु मइँ अबहुँ तलक पीरा स डेरात हउँ काहेकि मइँ
जानत हउँ कि अबहुँ भी तू (परमेस्सर) मोका निर्दोख नाही
बनाउब्या।
29मइँ परमेस्सर क संग आपन दलील क खोइ देब। तउ
कोसिस करइ मैं मोका आपन समइ काहे बरबाद करइ
चाही।
30चाहे मइँ आपन हाथ धोइ बरे सबन त सुद्ध पानी
अउर बड़िया साबुन क प्रयोग करा।
31फुन भी परमेस्सर मोका घिनौना गड़हा मैं ढकेल देइ
जहाँ मोर ओढ़ना तलक मोहसे घिना करिहीं।
32परमेस्सर, मोर जइसा मनई नाहीं अहइ। एह बरे ओका
मइँ जवाब नाहीं दइ सकत। हम दुइनउँ अदालत मैं एक दूसरे
स मिल सकित नाहीं।
33हुवाँ कउनो एक बिचौलिया नाहीं जउन हमार बीच क
बातन सुन सकत। हुवाँ कउनो एक नाही जउन हम दुइनउँ
क ऊपर अधिकार रखइ सकत।
34अगर परमेस्सर मोका सज़ा देइ बन्द कइ देइ, अउर उ
मोका बहोत जियादा नाही डेरावइ।
35तब मइँ बग़ैर डरे परमेस्सर स उ सब कहि सकत हउँ,
काहेकि मइँ जानत हउँ कि मइँ अइसा दोखी नाहीं हउँ
जइसा मोह क दोखी ठहराइ गवा ह।

10 मुला हाथ, अब मइँ वइसा नाहीं कइ सकत। मोका
खुद आपन जिन्नगी स घिना अहइ एह बरे मइँ
अजाद भाव स आपन दुखड़ा रोउब। मोरे मने मैं कडुआहट
भरी अहइ एह बरे अब मइँ बोलब।
2मइँ परमेस्सर स कहब 'मोह पइ दोख जिन लगावा। मोरे
खिलाफ तोहरे लगे लगावइ बरे का अहइ?
3हे परमेस्सर, का तू मोका चोट पहोंचाइके खुस होत ह?
अइसा लगत ह जइसे तोहका आपन सृस्टि बरे कउनो चिंता
नाहीं अहइ। अउर सायद, तू दुस्टन क कुचालन क पच्छ
लेत अहा।
4हे परमेस्सर, का तोहार आँखिन मनई क समान अहइँ?
का तू चिजियन क अइसे ही लखत ह, जइसे मनइयन लखा
करत हीं।
5का तोहार आयु हम जइसे मनइयन क तरह अल्प
अहइ? का तोहार जिन्नगी हम मनइयन क जइसे अल्प
अहइ?
6तू मोर गलतियन खोजत ह अउर मोरे पापन क हेरत
ह।
7तू जानत ह कि मइँ निरपराध हउँ मुला मोका कउनो भी
तोहार सक्ती स बचाइ नाहीं सकत।
8परमेस्सर, तू मोका रच्या अउर तोहार हाथन मोरे तन क
सँवारेन, मुला अब तू ही मोरे खिलाफ होइ गया अउर मोका
नस्ट करत अहा।
9हे परमेस्सर, याद करा कि तू मोका चिकनी माटी स
मढ्या, मुला अब तू ही मोका फुन स धूलि मैं बदलब्या।
10तू मोका दुधे क नाईं उड़ेरत ह, तब तू मोका दही
बनावत ह अउर निचोड़त ह अउर फुन तू मोका दूधे स
पनीर बनावत ह।
11तू मोका हाड़न अउ माँस पेसियन स बनाएस ह। तू
मोका चमड़ी अउ माँस स ढाँकेस ह।
12तू मोका जिन्नगी क दान दिहा अउर मोरे बरे दयालु
रह्या। तू मोरे धियान राख्या अउर तू मोरे प्राणन क रखवारी
किहा।
13मुला इ उ अहइ जेका तू आपन मने मैं छुपाए राख्या।
मइँ जानत हउँ कि इ उ अहइ जेकर तू आपन मने मैं गुप्त
रुप स जोजना बनाया ह।
14अगर मइँ पाप किहेउँ तउ तू मोका लखत रह्या। यह
बरे तू मोका निर्दोख घोसित नाहीं कर सकत्या ह काहेकि
मइँ बुरा काम किहेउँ ह।
15अगर मइँ दुस्ट जइसा बेउहार किहेउँ ह तउ तू मोका
इ सब झेलइ चाही। अगर मइँ निरपराध भी हउँ तउ भी
आपन मूँड़ नाहीं उठाइ पउतेउ काहेकि मइँ लज्जा अउ पीरा
स भरा भवा हउँ।
16इ अइसा ही लागत ह कि तोहका सिंह क तरह मोर
सिकार करइ पसन्द ह। तू आपन सक्ती मोर खिलाफ
बार-बार देखावत ह।
17तू मोरे खिलाफ सदा ही कउनो न कउनो क नवा
गवाह बनावत ह। तोहार किरोध मोरे खिलाफ अउर जियादा
भड़क उठी अउर मोरे खिलाफ तू नईं नईं दुस्मन क सेना
लिअउब्या।
18हे परमेस्सर, तू मोका काहे जन्म दिहा? एहसे पहिले
कि मोका कउनो लख सकत कास! मइँ मरि जातेउँ!
19कास! मइँ जिअत न रहतेउँ। कास! मोका माता क
गर्भ स सोझइ ही कब्रा मैं उतार दीन्ह जातेउँ!
20मोर जिन्नगी करीब करीब खतम होइ चुकी अहइ।
कृपा कइके मोका अकेल्ले रही द्या। ताकि मइँ इ अल्प
समइ क अनन्द लेइ सकब।
21एहसे पहिले कि मइँ हुआँ चला जाउँ स कबहुँ मइँ
वापस नाहीं आइ सकउँ, जउन जगह पइ अँधियारा अउर
घोर अन्धकार बाटइ,

22जउन तनिक समइ बचा अहइ मोका जिअइ लेइ द्या। एहसे पहिले कि मइँ हुआँ चला जाउँ जउने जगह क कउनो लखि नाहीं पावत, अँधियारा क जगह, छाया अउर गड़वड़ क जगह, उ जगह पइ जहाँ रोसनी भी अँधियारा स भरी होत ह।'"

सोपर क अय्यूब स कहब

11 एह पइ नामात नाउँ क पहँटा क सोपर अय्यूब क जवाब देत भए कहेस,

2"इ सब्दन क प्रवाह क जवाब मिलइ चाही! का कउनो मनई आपन आपन क सिरिफ जियाद बोलइ के निर्दोख बनावइ सकत ह।

3का तू सोचत ह कि तोहार सेखी हम लोगन क सांत कइ सकत? का तू सोचत ह कि बिना हमार स डांट खाए मज़ाक उड़ा सकत ह।

4अय्यूब, तू परमेस्सर स कहत रह्या, 'मोर सिद्धान्त सुद्ध अहइ। तू लख सकत ह कि मइँ निर्दोख अहउँ।'

5सचमुच मँ मोर इ इच्छा अहइ कि परमेस्सर बोलइ अउर तोहसे बात करिहीं।

6तउ उ तोहका बुद्धि क रहस्य बताइ। बुद्धि अनेक सच्चाइ राखत ह। अय्यूब, मोर सुना। परमेस्सर सचमुच ही तोहार कछू पापन क नज़र अन्दाज़ करत ह।

7अय्यूब का तू परमेस्सर क रहस्य समुझ सकत ह? का तू सर्वसक्तीमान परमेस्सर क बुद्धि क सीमा समुझ सकत ह?

8ओकर बुद्धि अकासे स ऊँच अहइँ, तू का कइ सकत्या? ओकर बुद्धि मृत्युलोक स गहिर अहइँ, का तू एका समुझ सकत्या?

9उ सबइ सीमा धरती स बड़ा अउर सागर स बिसाल अहइँ।

10अगर परमेस्सर तोहका बन्दी बनावइ अउर तोहका अदालत मँ लइ जाइ, तउ कउन ओका रोक सकत्या?

11परमेस्सर सचमुच जानत ह कि कउन धोखेबाज़ अहइ। परमेस्सर जब बुरी काम क लखत ह, तउ उ ओकर नज़र अन्दाज़ नाही करब्या।

12मुला कउनो मूरख मनई कबहुँ बुद्धिमान नाहीं होइ सकत ह। जइसे एक जंगली गदहा एक मनई क जन्म नाहीं देइ सकत ह।

13तउ अय्यूब, तोहका आपन सोच-बिचार पइ जरूर रोक लगावइ चाही, अउर आपन हाथन पराथना मँ फइलावइ चाही।

14कउनो दुट्ठता जउन तोहरे हाथन मँ बसा अहइ, ओका तू दूर करा। अउर आपन घरे मँ कउनो बुराइ क जिन रहइ द्या।

15तबहिं सिरिफ तोहार दोख क छिमा कीन्ह जाब्या। तू मजबूती स खड़ा रहब्या अउर नाहीं डेराब्या।

16अय्यूब, तब तू आपन विपत्ति क बिसरि जाब्या। तू आपन दुखड़ा क बस उ पानी जइसा सुमिरन करब्या जउन तोहरे लगे स बहिके चला गवा।

17तोहार जिन्नगी दुपहर क सूरज स भी जियादा उज्जर होइ। जिन्नगी क अंधियर घड़ियन अइसेन चमकिहीं जइसे भिन्सारे क सूरज।

18अय्यूब, तू सुरच्छित अनुभव करब्या काहेकि हुआँ आसा होइ। परमेस्सर तोहार रखवारी करी अउर तोहका आराम देइ।

19चइन स तू सोउब्या, कउनो तोहका नाहीं डेराई अउर बहोत स लोग तोहसे मदद मंगिहीं।

20मुला जब बुरे लोग आसरा हेरिहीं, तब ओनका नाहीं मिली। ओनके लगे कउनो आस नाहीं होइ। मउत ही ओनकर सिरिफ आसा होइ।"

सोपर क अय्यूब क जवाब

12 फुन अय्यूब सोपर क जवाब दिहस।

2"बिना संदेह क तू सोचत अहा कि सिरिफ तू ही लोग बुद्धिमान अहा, तू सोचत अहा कि जब तू मरब्या तउ विवेक मर जाइ तोहरे संग।

3मुला तोहार जेतँनी बुध्दि भी उत्तिम बाटइ, मइँ तोहसे कछू घटिके नाही अहउँ। अइसी बातन क जइसी तू कहत ह, हर कउनो जानत ह।

4अब मोरे मीत मोर मसखरी उड़ावत हीं। 'मइँ प्रतिदिन पराथना किहा करत रहा अउर उ मोर पराथना क जवाब देत रहा। किन्तु अब भी मइँ बेगुनाह अउर निर्दोख अहउँ, मोर परोसी मोर खिल्ली उड़ावत हीं।'

5अइसे लोग जेह पइ कबहुँ विपत्ति नाहीं पड़ी, विपदा स घिरा लोगन क हँसी किया करत हीं। मगर विपदा हमेसा उ लोगन पइ आइ बरे तइयार रहत ही जेकर गोड़ दृढ़ नाही अहइँ।

6डाकुअन आपन डेरन मँ बगैर चिन्ता क रहत हीं। अइसे लोग जउन परमेस्सर क क्रोधित करत हीं, सान्ति स रहत हीं। परमेस्सर ओनका धियान रखत हीं।

7चाहे तू पसु स पूछिके लखा, उ पचे तोहका सिखाइ देइहीं, या हवा क पंछियन स पूछा उ पचे तोहका बताइ देइहीं।

8या तू धरती स पूछि ल्या उ तोहका सिखाइ देइ या सागरे क मछरियन क आपन गियान तोहका बतावइ द्या।

9हर कउनो जानत ह कि यहोवा एँन सबइ चिजियन क रचेस ह।

10हर जिअत पसु अउर हर एक प्राणी जउन साँस लेत ह, परमेस्सर क आधीन अहइ।

11जइसे जीभ भोजन क सुआद चखत ह वइसे ही कानन क सब्दन क परखत ह।

12लोग कहित ह, 'अइसा ही बूढ़न क लगे विवेक रहत ह। अउर लम्बी उमर समुझ बूझ देत ही?'

13किन्तु उ परमेस्सर अहइ जेकर लगे बुद्धि अउर सक्ती अहइ। उ अच्छा सलाह अउर सूझबूझ रखत ही।

14अगर परमेस्सर कउनो चिज क ढहाइ क गिराइ देइ तउ, फुन लोग ओका नाहीं बनाइ सकतेन। अगर परमेसस्र कउनो मनई क बन्दी बनावइ, तउ लोग ओका अजाद नाहीं कइ सकतेन।

15अगर परमेसस्र बर्खा क रोकइ तउ धरती झुराइ जाइ।
अगर परमेस्सर बर्खा क छूट दइ देइ, तउ उ धरती पइ बाढ़
लइ आई।
16परमेस्सर सक्तीसाली अहइ। उ सदा विजयी होत ह। उ
मनई जउन छलत ह अउर उ मनई जउन छला जात ह
दुउनउँ परमेस्सर क अहइँ।
17परमेस्सर सलाहकारन स ओनकर बुद्धि लेइ लेत ह।
उ प्रमुखन क अइसा बनाइ देत ह कि उ पचे मूर्ख मनइयन
जइसा बेउहार करइ लागत हीं।
18परमेस्सर राजा लोगन क अधिकार हटाइ लेत ह अउर
ओनका दास बना देत ह।*
19परमेस्सर याजक लोगन ओनकर सक्ती स वंचित कर
देत ह अउर ओनकर दर्जा क सुरच्छा क छीन लेत ह।
20परमेस्सर बिस्सासनीय सलाहकार क चुप कराइ देत ह।
उ बूढ़े लोगन क बुद्धि लइ लेत ह।
21परमेस्सर महत्वपूर्ण अधिकारियन क साथ अइसा बेउहार
करत ह जइसा उ कछू नाहीं अहइ। उ सासकन क सक्ती
लेइ लेत हीं।
22परमेस्सर अँधियारा स रहस्य स भरी सच्चाई क परगट
करत ह। उ घना अँधियारा स घिरा जगहियन पइ, रोसनी
पठवत ह।
23परमेस्सर रास्ट्रन क विसाल अउ सक्तीसाली होइ देत
ह, अउर फुन ओनका उ नस्ट कइ डावत ह। उ रास्ट्न क
विकसित कइके विसाल बनइ देत ह, फुन ओनकर लोगन
क उ तितर बितर कइ देत ह।
24परमेस्सर धरती क रास्ट्रन क प्रमुखन क मूरख अउर
नासमुझ बनाइ देत ह। उ ओनका मरुभूमि मँ जहाँ कउनो
राह नाहीं भटक बरे पठवत ह।
25उ पचे प्रमुख लोग अँधियारा मँ आपन राह टटोरत
रहत हीं। कउनो भी प्रकास ओनके लगे नाहीं होत ह।
परमेस्सर ओनका अइसे चलावत ह, जइसे पीके धुत भए
लोग चलत हीं।"

13 "मोर आँखिन पहिले स ही उ सब चिजियन क
गवाही अहा जउन तू कह्या ह। मोर कानन पहिले
ही सुन अउर समुझ चुका ह जउन कछू तू कहा करत अहा।
2मइँ भी ओतना ही जानत हउँ जेतना तू जानत अहा, मइँ
तोहसे कम नाहीं हउँ। 3किन्तु मइँ सर्वसक्तीमान परमेस्सर स
बोलइ चाहत हउँ, अउर मइँ ओकर समन्वा आपन मुकद्दमा
क सफ़ाइ देउँ। 4मुला तू तीनउँ लोग आपन छूठ बातन स
सच्चाई क ढाँपइ चाहत अहा। तू उ बेकार क चिकित्सक
नाईं अहा जउन कउनो क नीक नाहीं कइ सकत। 5मोर इ
कामना अहइ कि तू पूरी तरह चुप होइ जा। इ तोहरे बरे
बुद्धिमानी क बात होइ जउन तू कइ सकत ह।
6"अब, मोर तर्क सुना। सुना जब मइँ आपन सफाई देउँ।
7का तू परमेस्सर बरे झूठ बोलब्या? का तू सचमुच
परमेस्सर क बारे मँ झूठ बोलब्या?
8का तू मोरे खिलाफ परमेस्सर क पच्छ लेब्या? का तू
अदालत मँ परमेस्सर क बचावइ जात अहा?
9अगर परमेस्सर तोहका बहोत करीब स जाँच लिहस तउ
का उ कछू भी नीक बात पाई? का तू सोचत अहा कि तू
परमेस्सर क छल पउब्या, ठीक उहइ तरह जइसे तू लोगन
क छलत अहा?
10अगर तू अदालत मँ छुपा छुपा कउनो क तरफ़दारी
करब्या, तउ परमेस्सर निहचय ही तोहका लताड़ी।
11ओकर तेज तोहका डरावत ह अउर तू डर जात ह।
12तोहार कहब धूलि जइसे बेकार अहइँ। तोहार तर्कन
माटी जइसी दुर्बल अहइँ।
13चुप रहा अउ मोका कहि लेइ द्या। मोरे संग कछू
बात होइ जाइ द्या।
14मइँ खुद क संकट मँ डावत हउँ अउर मइँ खुद आपन
जिन्नगी आपन हाथन मँ लइ लेत हउँ।
15होइ सकत ह परमेस्सर मोका मारि देइ। यद्यपि मोका
जीत क कछू आसा नाहीं अहइ, तउ भी मइँ आपन मुकदमा
क तर्क ओकरे समन्वा देब।
16परमेस्सर मोर मुक्ति अहइ, काहेकि कउनो दुट्ठ मनई
ओकर आपने-सामने नाही आइ सकत।
17ओका धियान स सुना जेका मइँ कहत हउँ, ओह पइ
कान द्या जेकर व्याख्या मइँ करइ चाहत हउँ।
18अब मइँ आपन बचाव करइ क तैयार हउँ। इ मोका
पता अहइ कि मोका निर्दोख सिद्ध कीन्ह जाइ।
19कउनो भी मनई इ प्रमाणित नाहीं कइ सकत कि मइँ
गलत हउँ। अगर कउनो मनई इ सिद्ध कइ देइ तउ मइँ
चुप होइ जाब अउर मरि जाब।
20हे परमेस्सर, तू मोका दुइ बातन दइ द्या, फिन मइँ
तोहसे नाहीं छुपब।
21मोका दण्ड देइ रोकि द्या, अउर मोसा जियादा लड़इ
छोड़ द्या।
22फिन तू मोका पुकारा अउर मइ तोहका जवाब देब, या
मोका बोलइ द्या अउर तू मोका जावब द्या।
23केतँना पाप मइँ किए हउँ? कउन सा अपराध मोहसे
होइ गवा? मोका मोर पाप अउर अपराध देखाँवा।
24हे परमेस्सर, तू मोहसे काहे बचत अहा? तू मोर संग
दुस्मन जइसा बेउहार काहे करत अहा?
25का तू मोका डेरउब्या? मइँ एक पत्ता जइसा हउँ जेका
पवन उड़ावत ह। एक झुरान तिनका क तू खदेड़त अहा।
26हे परमेस्सर, तू मोरे विरोध मँ गंभीर दोसपूर्ण बात
लिखत अहा। का तू मोका अइसे पापन बरे दुःख देत ह
जउन मइँ आपन जवानी मँ किहे रहेउँ?
27मोरे गोड़न मँ तू काठ डाइ दिह्या ह। तू मोर हर कदम
पइ आँखी गड़ाए रखत ह। मोरे कदमन क तू सीमा बाँध
दिहा ह।
28मइँ सड़ी चीज जइसा छीन होत जात हउँ कीरन स खाए
भए ओढ़नन क टूका जइसा।"

14 "उहइ दिना स जब हमार मताहरी हम पचन क
जन्मेस ह, हमार जिन्नगी छोट अउ दुःख स भरी
अहइ। 2मनई क जिन्नगी फूल क नाईं अहइ जउन हाली
जमत ह अउर फुन खतम होइ जात ह। मनई क जिन्नगी

परमेस्सर ... देत ह परमेस्सर राजा लोगन क सही करमबंध हटाइ लेत ह अउर ओनका बेकार कपड़ा पहनावत ह।

अहइ जइसे कउनो छाया जउन तनिक देर टोकत ह अउर बनी नाहीं रहत।

3हे परमेस्सर, का तू उ मनई पइ धियान देब्या जउन मरा भवा लागत ह? का तू मोर निआउ करइ मोका समन्वा लिअउब्या?

4"कउनो अइसी चीज स जउन खुद स्वच्छ नाहीं अहइ स्वच्छ चीज कउन पाइ सकत ह? कउनो नाहीं।

5मनई क जिन्नगी सीमित अहइ। तू ओकर जीवन काल क सीमित कइ दिहेस ह। तू मनई बरे जउन सीमा बाँध्या ह, ओका कउनो भी नाहीं बदल सकत।

6तउ परमेस्सर, तू हम पइ आँखी रखब तजि द्या। हम लोगन क अकेल्ला तजि द्या। हम पचन्क क आपन जिन्नगी क उहइ तरह समाप्त करइ द्या जे तरह मजदूरन आपन काम क समाप्त करत ह।

7मुला अगर बृच्छ क काटिके गिराइ दीन्ह जाइ तउ भी आसा ओका रहत ह कि उ फुन स पनप सकत ह, काहेकि ओहमा नई नई डारन फूटत रइहीं।

8चाहे ओकर जड़न धरती मँ पुरान काहे न होइ जाइँ अउर ओकर तना चाहे माटी मँ गल जाइ।

9मुला पानी क सिरिफ गंध स उ नई बढ़त देत ह अउर एक पउध क तरह ओहसे डारन फूटत हीं।

10मुला एक मनई कमज़ोर होइ जात ह अउ मरि जात ह, अउर तब उ चला जात ह।

11समुद्दर स पानी गाएब होइ सकत ह अउर नदियन सूख कइ फट सकत ह,

12अउर तउ भी जउन कउनो आपन कब्र मँ मरा भवा अहइ कबहुँ भी नाहीं जी उठब! ओकर नींद स जगाइ स पहिले ही आकास लुप्त होइ जाइ।

13मोर इच्छा अहइ कि तू मोरी कब्र मँ तक तलक छुपाइ लेइ चाही जब तलक तोहार किरोध कम नाहीं होइ जाइ। अउर तोहका आदेस दीन्ह जाइतेन अउर मोका जगावा जातेन।

14अगर कउनो मनई मरि जाइ तउ का जिन्नगी कबहुँ पउब्या? मइँ तब तलक बाट जोहब, जब तलक मोर कर्तव्य पूरा नाहीं होइ जात अउर जब तलक मइँ अजाद न होइ जाऊँ।

15हे परमेस्सर, तू मोका बोलउब्या अउर मइँ तोहका जवाब देब। उ तू ही अहइ जउन मोका बनाया ह यह बरे तोहका मोह पइ धियान देइ चाही।

16तब मोरी इच्छा अहइ कि तू मोर हर कदम क जाँच करा, मुला तोहका मोहमाँ कउनो गल्ती खोजइ क कोसिस नाही करइ चाही।

17तउ इ अइसा होइतेन कि मोर पापन क एक थइला मँ बन्दा कीन्ह जातेन। अउर तू मोरे पापन क हटाइ देतेन।

18एक नस्ट भवा पहाड़ क जइसा जेकर टूका ले लइ जात ह अउर एक चट्टान जउन आपन जगह स हटाइ लेइ जात ह।

19जइसे पानी पाथर क घँसि डावत ह अउ माटी क पानी बहाइके तल मँ लइ जात ह। हे परमेस्सर, उहइ तरह मनई क आसा क तू नस्ट करत अहा।

20तू एक दँई मनई क हरावत अहा अउर उ खतम होइ जात ह। तू ओकरे मुँह बिगाड़त ह अउर ओका पठइ देत ह।

21अगर ओकर पूत कबहुँ सम्मान पावत हीं तउ ओका कबहुँ ओकर पता नाहीं चल पावत। अगर ओकर पूत कबहुँ अपमान भोगत हीं, तउ उ कबहुँ ओका लखि नाहीं पावत ह।

22तउ मनई क देह क कारण ही ओका पीड़ा होत ह अउर ओकर आतिमा ओकरे बरे सोक मनावत ह।"

एलीपज अय्यूब क जवाब देत ह

15 एह पइ तेमान नगर क बसइया एलीपज अय्यूब क जवाब दिहेस।

2"का तू सोचत अहा कि कउनो बुद्धिमान मनई बे अरथ सब्द स जवाब देत ह अउ आपन आप क गर्म हवा स भरि देत ह?

3का तू सोचत ह कि कउनो बुद्धिमान मनई व्यर्थ क सब्दन स अउर ओन भासणन स बहस करी जेनकर कउनो लाभ नाहीं अहइ?

4अय्यूब, तोहार जवाब लोगन क परमेस्सर क आदर अउर ओकर उपासना करइ स रोकइ क कारण होइ।

5तू जउने बातन क कहत ह उ तोहार पाप साफ साफ देखावत ह। अय्यूब, तू चतुराई स भरे भए सब्दन क प्रयोग कइके आपन पापन क छुपावइ क प्रयत्न करत अहा।

6मोका जरुरी नाहीं कि तोहका गलत सिद्ध करँउ। काहे? तू खुद आपन मुँह स जउन बातन कहत ह, उ देखाँवत हीं कि तू बुरा अहा अउर तोहार ओठं खुद तोहरे खिलाफ बोलत हीं।

7अय्यूब, का तू सोचत ह कि जन्म लेइवाला पहिला मनई तू ही अहा अउर पहाड़न क रचना स ही पहिले तोहार जन्म भवा रहा।

8का तू परमेस्सर क रहस्य स भरी सबइ जोजना क सुने रह्या? का तू सोचत ह कि तू बुद्धिमान अहा?

9अय्यूब, तू हम पचन स जियादा कछू नाहीं जानत अहा। उ सबइ बातन हम पचन समझत अही, जेनकर तोहका समुझ अहइ।

10उ सबइ लोग जेनकर बार सफेंद अहइँ अउर बुढ़वा मनई अहइँ उ पचे हम स सहमत रहत हीं। हाँ, तोहरे बाप स भी बुढ़वा लोग हमरे समर्थन मँ अहइँ।

11परमेस्सर तोहका सुख देइ क जतन करत ह। अउर तोहसा नर्मी स बात करत ह। का इ तोहरे बरे काफी नाहीं अहइ? मुला तू सोचत अहा कि इ तोहार बरे काफी नाही अहइ।

12अय्यूब, तू काहे नाहीं समुझब्या? तू सच्चाइ क काहे नाहीं लखइ सकब्या?

13जब कभी तू इ तरह बोलत ह तू परमेस्सर क खिलाफ होत ह।

14फुरइ कउनो मनई सुद्ध नाहीं होइ सकत। मरनसील मनई नीक नाही होइ सकत ह।

15हिआँ तलक कि परमेस्सर आपन दूतन तलक पइ भी
निभर नाहीं रहत हीं। हिआँ तलक कि सरग भी परमेस्सर
क अपेच्छा सुद्ध नाहीं अहइ।
16मानव जाति बहोत जियादा पापी अउर भ्रस्ट अहइँ। उ
बुराई क पानी क तरह गटक जात ह।
17अय्यूब, मोरी बात तू सुना अउर मइँ ओकर व्याख्या
तोहसे करब। मइँ तोहका बताउब, जउन मइँ जानत हउँ।
18मइँ तोहका उ सहइ बतउब्या जउन बुद्धिमान मनई
बतउब्या। उ पचे एन बातन क आपन पुरखन स सुनेस ह
अउर ओनका छिपाइ बिना बताएस।
19सिरिफ ओनकर पुरखन क ही भुइँया दीन्ह गवा रहा।
ओनकर देस मँ कउनो परदेसी नाहीं रहा।
20दुट्ठ मनई जिन्नगी भइ पीरा झेली। एक क्रूर मनई
ओन सबहि बरिसन मँ जउन ओकरे बरे निहचित कीन्ह ग
अहइँ, दु:ख भोगत रही।
21ओकरे कानन मँ भयंकर ध्वनियन होत रइहीं। जब उ
सोची उ सुरच्छित अहइ तबहिं ओकर दुस्मन ओह पइ
हमला करिहीं।
22दुट्ठ मनई कउनो आसा नाहीं अहइ कि उ अँधियारा
बचिके निकरि पावइ। कहूँ एक अइसी तरवार अहइ जउन
ओका मार डावइ क इन्तज़ार करत अहइ।
23उ एँह कइँती ओह कइँती भटकत भवा फिरत ह मुला
ओकर देह गीधन क चारा बनि जाइ। ओका इ पता अहइ
कि ओकर मउत बहोत निचके अहइ।
24चिन्ता अउ यातना ओका डरपोक बनावत हीं। इ सबइ
बातन ओह पइ अइसे वार करत हीं जइसे कउनो राजा जुद्ध
करइ बरे तइयार होत ही।
25काहेकि दुट्ठ मनई परमेस्सर क हुकुम मानइ
स इन्कार करत ह अउर सर्वसक्तीमान क नज़र-अन्दाज़
करत ह।
26उ दुट्ठ मनई बहोत हठी अहइ। उ परमेस्सर क
खिलाफ लड़इ चाहत ह, सोचत अहा कि उ मजबूत ढाल स
ओका हराइ सकत ह।
27दुट्ठ मनई क मुँहे पइ चर्बी चढ़ी रहत ह। ओकर
कमर माँस भर जाइ स मोटवार होइ जात ह।
28मुला उ उजाड़ सहरन मँ रही। उ अइसे घरन मँ रही
जहाँ कउनो नाहीं रहत ह। ओकर घरन हाली ही रौंदा जइहीं।
29दुट्ठ मनई जियादा समइ तलक धनी नाहीं रही।
ओनकर भाग्य क धरती पइ स्थिर रूप मँ ठहरावा नाहीं
जाब्या।
30दुट्ठ मनई अँधियारा स न बच पाई। उ उ बृच्छ क
नाईं होइ जेकर सबइ डारन आगी स झउँस गइ अहइँ।
परमेस्सर क साँस दुट्ठन क उड़ाइ देइ।
31दुट्ठ लोग बेकार क चिजियन क भरोसे रहिके आपन
क मूरख न बनावइँ काहेकि ओका कछू प्राप्त न होइ पाई।
32दुट्ठ मनई समइ स पहिले ही मरि जाब। उ पचे उ
बृच्छ क नाईं होइ जाइ जेकर चोटी क डारन मरि गवा ह।
33दुट्ठ मनई उ अंगूरे क बेल क नाईं होत ह जेकर
फल पाकइ स पहिले ही झरि जात हीं। अइसा मनई जइतून
क बृच्छ क नाईं होत ह, जेकर फूल सारि जात हीं।
34काहेकि परमेस्सर क बगइर लोग खाली हाथ रइहिं।
अइसे लोग जेनका पइसन स पियार अहइ, घूस लेत हीं।
ओनकर घर आगी स नस्ट होइ जइहीं।
35उ पचे मूसीबत क कुचक्र रचत हीं अउर बुरे करम
करत हीं। उ पचे लोगन क छलइ क तरकीब क जोजना
बनावत हीं।"

अय्यूब एलीपज क जवाब देत ह

16 एह पइ अय्यूब जवाब देत भए कहेस:
2"मइँ पहिले ही इ सबइ बातन क बहोत बार
सुनेउँ ह। तू "आरामदेइवाला लोग" सचमुच सिरिफ मोका
तंग करत ह!
3तोहार बेकार क लम्बी बातन कबहुँ खतम नाहीं होतिन।
तू काहे तर्क करत ही रहत ह?
4जइसे तू कहत अहा वइसे बातन तउ मइँ भी कहइ
सकत्या। अगर तू पचन्क मोर दु:ख झेलइ क पड़त, मइँ भी
तोहार खिलाफ तर्क देइ सकत हउँ अउर तोहार अपमान
कइ सकत्या।
5मुला मइँ आपन बचनन स तोहार हिम्मत बढ़ाइ सकत्या
अउर तोहरे बरे आसा बँधाइ सकत्या।
6मुला जउन कछू मइँ कहत हउँ ओहसे मोर दु:ख दूर
नाहीं होइ सकत। मुला अगर मइँ कछू भी न कहउँ तउ भी
मोका चइन नाहीं पड़त।
7पुरइ हे परमेस्सर तू मोर सक्ती क हर लिहा ह। तू मोर
सारा घराने क बर्बाद कइ दिहा ह।
8तू मोर सरीर क झूर्रीदार बनाइ दिहेस ह, अउर इ मोर
खिलाफ गवाही दिहेस ह। मइँ खउफनाक देखाँत हउँ अउर
लोग अइसा सोचत हीं कि मइँ बुराइ करइ क कारण
अपराधी हउँ।
9परमेस्सर मोह पइ प्रहार करत ह। उ मोह पइ कोहान
अहइ। उ मोरी देह क फारिके अलगाइ दिहस ह। परमेस्सर
मोरे ऊपर दाँत पीसत ह। मोर दुस्मन घिना स भरी निगाह स
घूरत हीं।
10लोग मोर हँसी करत हीं। उ पचे सबहिं मोर खिलाफ
इकट्ठा होत ह अउर मोरे मुँह क थपड़ावत ह।
11परमेस्सर मोका दुट्ठ लोगन क हाथे मँ अर्पण कइ
दिहे अहइ। उ दुट्ठ मनई मोहे पइ सक्ती दिहेस ह।
12मोरे संग सब कछू भला चंगा रहा। तबहिं परमेस्सर
मोका कुचर दिहस। हाँ, उ मोका गटई स धइ लिहेस अउर
मोर चिथरा चिथरा कइ डाएस। परमेस्सर मोका निसाना बनाइ
लिहस।
13परमेस्सर क तीरंदाज मोरे चारिहुँ कइँती अहइँ। उ मोरे
गुर्दन क बाणन स बेधत ह। उ मोहे पइ दाया नाहीं देखावत
ह। उ मोरे पित्त क धरती पइ बहाइ देत ह।
14परमेस्सर मोह पइ बार बार वार करत ह। उ मोह पइ
अइसे झपटत ह जइसे कउनो फउजी जुद्ध मँ नाहीं झपटत
ह।
15मइँ बहोत ही दु:खी हउँ। एह बरे मइँ विलाप क
ओढ़ना पहिरत हउँ। मइँ हिआँ धूलि मँ बइठा भवा हउँ
अउर हरा भवा अनुभव करत हउँ।

16मोर मुँह रोवत बिलखत भए लाल भवा। मोरी आँखिन
क खाले करिया घेरा अहइँ।
17मइँ कउनो क संग कबहुँ भी क्रूर नाहीं भएउँ। मुला इ
सबइ बुरी बातन मोरे संग घटित भइन। मोर पराथनन सही
अहइँ।
18हे भुइयाँ, तू कबहुँ ओन अत्याचारन क जिन छिपाया
जउन मोरे संग कीन्ह गवा अहइँ। मोर निआउ क बिनती क
तू कबहुँ रुकइ जिन द्या।
19अब तलक भी होइ सकत ह कि हुआँ आकास मँ
कउनो तउ मोरे पच्छ मँ होइ। कउनो ऊपर अहइ जउन
मोका दोख स रहित सिद्ध करी।
20मोर मीत मोर बारे मँ बोलत अहइँ, जब मइँ आसा स
रोवत रही कि परमेस्सर मोर मदद करब।
21मोर इच्छा अहइ कि कउनो एक मोर अउर परमेस्सर
क बिचउली करी जइसे कउनो एक मनई अउर परोसी क
बीच बिचउली करत ही।
22कछू ही बरिस बाद मइँ हुआँ चला जाब जहाँ स फुन
मइँ कबहुँ वापस न आउब।
17 मोर जिउने कि इच्छा नस्ट कीन्ह ग अहइ। मोर
प्राण लगभग जाइ चुका अहइ। कब्र मोर बाट
जोहत अहइ।
2लोग मोका घेर लेत हीं अउर मोह पइ हँसत हीं। मइँ
ओनका लखत हउँ जब लोग मोर अपमान करत हीं।
3परमेस्सर, मोर बेकसूर होइ क पुस्टि करा। मोर निर्दोख
होइ क गवाही देइ बरे कउनो तइयार नाहीं होइ।
4मोरे मीतन क मन तू मूँद ल्या ह। एह बरे उ पचे जीत
नाहीं सकब।
5लोग जउन कहत ह उ तू जानत ह, 'मनई आपन मीत
क मदद करइ बरे आपन गदेलन क नज़र अन्दाज़ करत
ह।'
6परमेस्सर मोर नाउँ हर कउनो बरे अपसब्द बनाएस ह
अउर लोग मोरे मुँह पइ थूका करत हीं।
7मोर आँखी लगभग आँधर होइ चुकी अहइ काहेकि मइँ
बहोत दुःखी हउँ। मोर देह एक छाया क तरह दुर्बाल होइ
चुकी अहइ।
8नीक लोगन ब्याकुल अहइँ कि इ घटि सकत ह।
निरअपराध लोग ओन क खिलाफ उत्तेजित अहइ। जउन
परमेस्सर क मज़ाक उड़ावत ह।
9मुला सज्जन नेकी क जिन्नगी जिअत रइहीं। निरापाराधी
लोग सक्तिसाली होइ जइहीं।
10जदि तू लउटि आउब्या, तउ आवा। किन्तु मइँ
दिखाउब कि तू पचन मँ स कउनो बुद्धिमान नाहीं अहइँ।
11मोर जिन्नगी यो ही बीतन अहइ। मोर सबइ जोजना
टूट गइ अहइँ अउर आसा चली गइ अहइ।
12हरेक चीज क उलझा दीन्ह ग ह, उ पचे रात क दिन
कहत ह अउर प्रकास अँधियारा लिआवत ह।
13मइँ आसा करउँ कि कब्र मोर घर अउ अँधियारा मोर
बिछउना होइ।
14अगर मइँ कब्र स कहउँ 'तू मोर बाप अहा,' अउर
कीरा स 'तू मोर महतारी अहा,' या 'तू मोर बहिन' अहा।
15अगर उ मोर सिरिफ एक ठु आसा अहइ तबइ तु
कउनो आसा मोका नाहीं अहइ अउर कउनो भी मनई मोरे
बरे कउनो आसा नाहीं लखि सकत ह।
16का मोर आसा भी मोरे संग मरि जाइ? का मइँ अउर
मोर आसा एक संग कब्र मँ मिलिहीं?"

अय्यूब क बिल्दद क जवाब

18 फिन सूहू प्रदेस क बिल्दद जवाब देत भए कहेस।
2"अय्यूब, इ तरह क बातन करब तू कब तज
देब्या? तोहका चुप रहइ चाही अउर सुनइ चाही, सिरिफ तब
हीं हम कहि सकित ह।
3तू काहे इ सोचत ह कि हम ओतँना मूरख अही जेतना
मूरख एक ठु बर्धा होत ह?
4अय्यूब, तू आपन किरोध स आपन ही नोस्कान करत
अहा। का लोग भुइँया बस तोहरे बरे तजि देइँ? का तू इ
सोचत अहा कि बस तोहका तृप्त करइ क परमेस्सर धरती क
हलाइ देई।
5हाँ, बुरा मनई क प्रकास बुझी अउर ओकर आगी क
लौ न चमकी।
6ओकरे घरे क प्रकास करिया पड़ि जाइ अउर जउन दिया
ओकरे लगे अहइ उ बुझ जाइ।
7सक्तीसाली मनई क कदम धीमे स बढ़त ह। आपन ही
बुरा जोजनन स उ पतन क झेलब्या।
8ओकर आपन ही कदम ओका एक जाल क फंदा मँ
गिराइ देइहीं। उ चलिके जालि मँ जाई अउर फँस जाई।
9कउनो जाल ओकर एड़ी क पकड़िके धइ लेइ। एक ठु
जाल ओका कसिके जकर लेइ।
10एक रस्सा ओकरे बरे धरती मँ छुपा रही। कछू फंदा
ओकरे राहे मँ झूठ बोलब्या।
11ओकरे चारिहुँ कइँती सबहिं आतंक होइ। ओकर हर
कदम क डर पाछा करत रही।
12खउफनाक मुसीबतन ओकरे बरे भुखान होइँ। जब उ
गिरी, विध्वंस ओकरे बरे तइयार रइहीं।
13महा बियाधि ओकरे चमड़ी क हींसन क लील जाई। उ
ओकरी बाँहिन अउ ओकर हँगियन क सड़ाइ देइ।
14आपन घरे क सुरच्छा स दुट्ठ व्यक्ति क दूर कीन्ह
जाइ। आतंक क राजा क लगे ओका लइ जावा जाइ।
15ओकरे घरे मँ तब तलक कछू भी न बची जब तलक
ओकरे समूचइ घरे मँ धधकत भइ गन्धक बिखेरी जाइ।
16ओकर खाले गइ भइ जड़न झुराइ जइहीं अउर ओकरे
ऊपर क डासन मुरझाइ जइहीं।
17धरती क लोग ओका याद नाहीं करिहीं। बस अब
कउनो भी ओका याद नाहीं करी।
18प्रकास स ओका हटाइ दीन्ह जाइ अउर उ अँधियारा मँ
ढकेला जाइ। उ पचे ओका दुनिया स दूर भगाइ देइहीं।
19ओकर कउनो गदेलन अउ सन्तानन नाहीं होइहीं।
ओकरे घरे मँ कउनो जिअत नाहीं बची।
20पच्छिम क लोग सहमा रहि जइहीं जब उ पचे जानिहीं
कि उ दुट्ठ मनइयन क संग का घटेस ह। पूरब मँ लोग
आतंकित होइके सन्न रहि जइहीं।

21फुरइ दुर्जन व्यक्ति क घरे क संग अइसा ही घटी।
अइसा ही घटी उ मनई क संग जउन परमेस्सर क नाहीं
जानतेन।"

अय्यूब क जवाब

19 तब अय्यूब जवाब देत भए कहेस।
2"कब तलक तू पचे मोका सतावत रहब्या अउर
सब्दन स मोका ताड़त रहब्या?
3अब लखा, तू पचे दसउ दाईं मोका बेज्जत किहा ह।
मोह पइ वार करत तू पचन्क सर्म नाहीं आवति ह।
4अउर जदि मइ कउनो बुराई किहेउँ तउ इ मोर ग़ल्ती
अहइ।
5तू पचे इहइ चाहत अहा कि तू पचे मोहसे उत्तिम
देखौंउन। तू पचे कहत अहा कि मोर कस्ट मोका दोखी
साबित करत हीं।
6मुला उ तउ परमेस्सर अहइ जउन मोरे संग बुरा किहस
ह अउर जउन मोरे चारिहुँ कइँती आपन फंदा फइलाएस ह।
7मइँ ग़ोहरावत हउँ 'मोरे संग बुरा किहा ह।' मुला मोका
कउनो जवाब नाहीं मिलत ह। चाहे मइँ निआउ क ग़ुहार
ग़ोहरावउँ मोर कउनो नाहीं सुनत ह।
8मोर रस्ता परमेस्सर रोकेस ह, एह बरे ओका मइँ पार
नाहीं कइ सकत। उ अँधियारा मँ मोर रस्ता छुपाइ दिहस ह।
9मोर सम्मान परमेस्सर छोर लिहस ह। उ मोरे मूँड़ स
मुकुट छोर लिहस ह।
10परमेस्सर मोर पूरा सरीर मँ मोर प्राण निकरि तलक
मारब। उ मोर आसन क अइसे उखाड़ देत ह जइसे कउनो
जड़ स बृच्छ क उखाड़ि देइ।
11मोरे खिलाफ परमेस्सर क किरोध भड़कत अहइ। उ
मोका आपन दुस्मन कहत ह।
12परमेस्सर आपन फउज मोह पइ प्रहार करइ क पठवत
ह। उ पचे मोरे चारिहुँ कइँती बुर्जियन खरा करत हीं। उ पचे
मोरे तम्बू क चारिहुँ कइँती छावनी बनावत हीं।
13परमेस्सर मोरे बन्धुअन क मोर दुस्मन बनाइ दिहेस।
आपन मीतन बरे मइँ पराया होइ ग़एउँ।
14मोर रिस्तेदारन मोका तजि दिहन। मोर मीतन मोका
बिसराइ दिहन।
15मोरे घरे क अतिथियन स लइके मेहरारू नउकरन
तलक मोरे संग अइसा बेउहार करत ह जइसा मइँ कउनो
अजनबी अहउँ।
16मइँ आपन नउकर क बोलावत हउँ पर उ मोर नाहीं
सुनत ह। उ पचे मोका मदद बरे भीख माँगाएस ह।
17मोर पत्नी मोरे साँस क ग़ंध स घिना करत ह। मोर
आपन ही ग़देलन मोहसे घिना करत हीं।
18नान्ह ग़देला तलक मोर हँसी उड़ावत हीं। जब कबहुँ
मइँ जाग़त हउँ, तउ उ पचे मोरे खिलाफ बोलत हीं।
19मोर आपन मीत मोहसे घिना करत हीं। हिआँ तलक
कि अइसे लोग़ जउन प्रिय अहइँ, मोर बिरोधी होइ ग़वा
अहइँ।
20मइँ ऍतना दुर्बल अहउँ जइसे मइँ सिरिफ खाल अउर
हाड़न होइ ग़वा अहउँ। अब मइँ सिरिफ जिअत हउँ।
21हे मोर मीतो मोह पइ दाया करा, दाया करा मोह पइ
काहेकि परमेस्सर क हाथ मोहका छू ग़वा अहइ।
22काहे मोका तू भी सतावत अहा जइसे मोका परमेस्सर
सताएस ह? काहे तू मोका दुख देत भए कबहुँ अघात्या
नाहीं?
23जउन मइँ कहत हउँ ओका कउनो क याद राखइ चाही
अउ किताबे मँ लिख देइ चाही! मोर सब्द कउनो क ग़ोल
पत्रक पइ लिख देइ चाही!
24मइँ जउने बातन क कहत ओनका कउनो लोहा क
कलम स सीसा पइ लिखा जाइ चाही या ओनका चट्टाने पइ
खोद दीन्ह जाइ चाही ताकि उ हमेसा बरे रहइ जाइ।
25मोका इ जानत हउँ कि कउनो एक अइसा अहइ जउन
मोर बरे बोलब्या अउर मोर रच्छा करब्या। मोका बिस्सास
अहइ कि आखीर मँ उ धरती पइ खड़ा होब्या अउर मोरे
बचाव करब्या।
26मोरे आपन देह छोड़इ अउर मोर चमड़ी तबाह होइक
पाछे भी मइँ जानत हउँ कि मइँ परमेस्सर क लखब।
27मइँ परमेस्सर क खुद आपन आँखिन स लखब। मइँ
खुद स कउनो दूसर नाहीं, परमेस्सर क लखब। मइँ बता
नाहीं केतॅना खुसी अनुभव करत हउँ।
28होइ सकत ह तू कहा, 'हम अय्यूब क तंग करब। मइँ
मामला क जड़ तलक जाब।'
29मुला तोहका तरवारे स डरइ चाही, काहेकि परमेस्सर
किरोधित होब्या अउर तोहका तरवार स सजा देब्या। अउर
तब तू पचन्क समझब्या कि हुआँ निआउ क एक निहचित
समइ अहइ।"

सोपर क जवाब

20 एह पइ नामात प्रदेस क सोपर जवाब दिहस।
2"अय्यूब, धियान द्या। मइँ परेसानी मँ हउँ।
यह बरे मइँ हाली तोहका बताएउँ क कि मइँ का सोचत
हउँ।
3तोहार आलोचना हमार अपमान करत हीं। मुला मइँ
बुद्धिमान हउँ अउर जानत हउँ कि तोहका कइसे जवाब दीन्ह
जाइ चाही।
4-5एका तू तब स जानत ह जब बहोत पहिले लोग़न
क धरती पइ पठवा ग़ रहा, दुट्ठ मनई क आनन्द
बहोत दिन नाहीं टिकत ह। अइसा मनई जेका परमेस्सर क
चिन्ता नाहीं अहइ उ तनिक समइ बरे आनन्द मँ भरि जात
ह।
6चाहे दुट्ठ मनई क अपमान अकासे तलक छू जाइ।
7उ आपन तने क मल क नाईं नस्ट होइ जाइ। उ सबइ
लोग़ जउन ओका जानत हीं कइहीं, 'उ कहाँ अहइ?'
8उ अइसे बिलाइ जाइ जइसे सपन हाली ही कहूँ उड़
जात ह। फिन कबहुँ कउनो ओका लखि नाहीं सकी, उ
नस्ट होइ जाइ, ओका राति क सपना क तरह हाँक दीन्ह
जाइ।
9उ सबइ मनई जउन ओका लखे रहेन फुन कबहुँ नाहीं
लखेन। ओकर परिवार फुन कबहुँ ओका नाहीं लखि पाइ।

10जउन कछू भी उ (दुट्ठ) गरीबन स लिहे रहा ओकार संतानन चुकइहीं। ओनका आपन ही हाथन स धन लौटाए होइ।

11जब उ जवान रहा, ओकर सरीर मजबूत रही, मुला उ हाली ही धूलि होइ जाइ।

12दुस्ट क मुँह क दुस्टता बड़ी मीठी लागत ह, उ ओका आपन जिभिया क खाले छुपाइ लेइ।

13बुरा मनई उ बुराई क धामे रही, ओकर दूर होइ जाब ओका कबहुँ नाहीं भाई, तउ उ ओका आपन मुँहे मँ थामे रही।

14मुला ओकरे पेटे मँ ओकर भोजन जहर बन जाइ, उ ओकरे भीतर अइसे बन जाइ जइसे कउनो नाग क विख सा कडुवा जहर।

15दुस्ट धन दौलत क लील जात ह मुला उ ओन सबका बाहेर उगिली। परमेस्सर दुस्ट क पेटे स ओन सबका उगालिवाइ।

16दुस्ट मनई क विख चूसब साँपे क नाईं होइ। मुला साँपे क विसैला जीभ ओका मारि डइहीं।

17मुला दुस्ट मनई लखइ क आनन्द नाहीं लेइहीं अइसी ओन नदियन क जउन सहद अउर मलाई बरे बहा करत ह।

18दुट्ठ क ओकर लाभ वापिस करइ क दबावा जाइ। ओका ओन चिजियन क आनन्द नाहीं लेइ दीन्ह जाइ जेनके बरे उ मेहनत किहे अहइ।

19काहेकि उ दुस्ट मनई दीन मनई क चिन्ता नाहीं किहस। बलकि, उ दूसर लोगन क घरन क भी लइ लिहेस जेका उ पचे आपन बरे बनाएस रहा।

20दुस्ट मनई कबहुँ संतुट्ठ नाहीं होत ह। उ आपन सबहिं धन क लइ ले जात ह।

21जब उ खात ह तउ कछू नाहीं तजत ह, तउ ओकर कामयाबी बनी नाहीं रही।

22जब दुस्ट जन क लगे भरपूर होइ तबहिं ओन पइ विपत्ती आइहीं अउर उ कस्ट क अनुभव करिहीं।

23दुस्ट जन उ सब कछू खाइ चुकी जेका उ खाइ चाहत ह। परमेस्सर आपन बरत भवा किरोध ओह पइ डाइ। उ दुस्ट मनई पइ परमेस्सर सजा बरसाइ।

24होइ सकत है कि उ दुस्ट लोहा क तरवार स बच निकरइ, मुला कहूँ स काँसा क बाण ओका मार गिरावइ।

25तीर खींचत लिहेस ह, अउर बिजुरि क नाईं ओकरे पीठ मँ घुसत ह अउर ओकर करेजा बाहर आ जात ह, अउर उ आंतकित होइके काँप उठत ह।

26ओकर सबहिं खजाना नस्ट होइ जइहीं, एक ठु अइसी आग्गी जेका कउनो नाहीं बारेस ओका नस्ट करी, उ आग्गी ओनका जउन ओकरे घरे मँ बचा अहईं नस्ट कइ डाइ।

27सरग सिद्ध करी कि उ दुस्ट अपराधी अहइ, इ गबाही धरती ओकरे खिलाफ देइ।

28जउन कछू भी ओकरे घरे मँ अहइ, उ परमेस्सर क किरोध क बाढ़ मँ बहि जाइ।

29इ उहइ अहइ जेका परमेस्सर दुस्टन क संग करइ क जोजना रचत ह। इ उहइ अहइ जइसा परमेस्सर ओनका देइ क जोजना बनावत ह।"

अय्यूब क जवाब

21 एह पइ अय्यूब जवाब देत भए कहेस।

2"तू पचे चित्त दइके सुना जउन मईं कहत हउँ, तोहार सुनइ क आपन तरिके स मोर दिलासा होइ जाइ।

3जब मईं बोलत हउँ तू धीरा धरा, "फुन जब मईं बोल चुकउँ तब तू मोर हँसी उड़ाइ सकत ह।

4मोर सिकाइत मनइयन क खिलाफ नाहीं अहइ, मईं काहे सहनसील नाहीं अहउँ ओकर खास वजह अहइ।

5तू मोका लखा अउर चकित होइ जा, आपन सोक दिखाइ बरे आपन हाथ आपन मुँहे पइ धरा।

6जब मईं सोचत हउँ ओन सब क जउन मोर संग घटा तउ मोका डर लागत ह अउर मोर देह थर थर काँपत ह।

7काहे बुरे लोगन क उमर लम्बी होत ह? काहे उ पचे बुढ़ाइ जात हीं अउर कामयाब होत हीं?

8बुरे लोग आपन संतानन क आपन संग बढ़त भए लखत हीं। बुरे लोग आपन आपन नाती पोतन क लखइ क जिअत रहत हीं।

9ओनकर घर सुरच्छित रहत हीं अउर उ पचे डेरातेन नाहीं। परमेस्सर दुस्टन क सजा देइ बरे आपन सजा काम मँ नाहीं लिआवत ह।

10ओकर साँड़ कबहुँ भी मिला कइ मँ नाहीं चुकत ह। ओनकर गइयन बछवन क जनम देइ बरे गाभिन होत। ओनकर भ कबहुँ नाहीं गिरत हीं।

11बुरे लोग गदेलन क बाहेर खेलइ पठवत हीं मेमनन क जइसे, ओनकर गदेलन नाचत हीं चारिहुँ ओर।

12मजीरा, वीणा अउर बाँसुरी क धुन पइ उ पचे गावत हीं अउर नाचत हीं।

13बुरे लोग आपन जिन्नगी भइ कामयाबी क आनन्द लेत हीं। फुन बिना दुख भोगे उ पचे मरि जात हीं अउर आपन कब्रन क बीच चला जात हीं।

14मुला बुरे लोग परमेस्सर स कहा करत हीं, 'हमका अकेला तजि द्या। अउर एकर हमका परवाह नाहीं कि तू हमसे कइसा जिन्नगी जिअइ चाहत ह।'

15दुट्ठ लोग कहा करत हीं, 'सर्वसक्तीमान परमेस्सर कउन अहइ? हमका ओकरी सेवा क जरूरत नाहीं अहइ। ओकरी पराथना करइ क कउनो लाभ नाहीं।'

16दुस्ट मनई सोचत हीं कि ओनका आपन ही कारण कामयाबी मिलत ह, मुला मईं ओनकर विचारन क नाहीं अपनाइ सकत हउँ।

17मुला का अइसा होत ह कि दुस्ट जन क प्रकास बुताइ जावा करत ह? केतनी दाईं दुस्टन क दु:ख घेरा करत हीं? का परमेस्सर ओनसे कोहाइ जात ह, अउर ओनका सजा देत ह?

18का परमेस्सर दुस्ट लोगन क अइसे उड़ावत ह जइसे हवा तिनके क उड़ावत ह अउर तेज हवा अनाजे क भूसा उड़ाइ देत हीं?

19मुला तू कहत ह: 'परमेस्सर एक गदेला क ओकरे बाप क पापन्क सजा देत ह।' नाहीं, परमेस्सर क चाही कि बुरे जन क राजा देइ। तबहिं उ बुरा मनई जानी कि ओका ओकरे निज पापन बरे सजा मिलति अहइ।

20तू पापी क ओकरे आपन राजा क देखाँइ द्या, तब उ
सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क कोप क अनुभव करी।
21जब बुरा मनई क उमर क महीना खतम होइ जात हीं
अउर उ मर जात ह; उ उ परिवार क परवाह नाहीं करत
जेका उ पाछे तजि जात ह।
22कउनो मनई परमेस्सर क गियान नाहीं दइ सकत, उ
ऊँच ओहदन क लोगन क भी निआउ करत ह।
23एक पूरा अउ सफल जिन्नगी क जिअइ क पाछे एक
मनई मरत ह, उ एक सुरच्छित अउ सुखी जिन्नगी जिअत
ह।
24ओकर लगे पिवइ बरे भरपूर दूध रहा। अब समइ
तलक ओकर हाड़ तन्दुरुस्त रहिन।
25मुला कउनो एक अउर मनई कठिन जिन्नगी क पाछे
दु:ख भरे मने स मरत ह, उ जिन्नगी क कबहुँ कउनो रस
नाहीं चखेस।
26इ सबइ दुइनउँ मनई एक संग माटी मँ गड़ा सोवत हीं,
किरउनन दुइनउँ क एक संग ढाँपि लेइहीं।
27मुला मइँ जानत हउँ कि तू का सोचत अहा, अउर
मोका पता अहइ कि तोहरे लगे मोरा बुरा करइ क कुचाल
अहइ।
28मोरे बरे तू इ कहा करत ह, 'अब कहाँ बाटइ उ
महामानुस क घर? कहाँ बा उ घर जेहमाँ उ दुस्ट रहत रहा?'
29-30मुला तू कबहुँ बटोहियन क नाहीं पूछ्या? का तू
ओकर कहानियन पइ बिस्सास नाहीं किहस कि उ दिन
जब परमेस्सर कोहाइके सजा देत ह दुस्ट मनई सदा बच
जात ह?
31अइसा कउन मनई नाहीं जउन ओकरे समन्वा ही
ओकरे करमन क बुराइ करइ। ओकरे पाप क सजा कउनो
मनई ओका नाहीं देत ह।
32जब कउनो मनई कब्र मँ लइ जावा जात ह, तउ
ओकरे कब्र क लगे एक पहरुवा खड़ा रहत ह।
33उ दुट्ठ मनई बरे उ घाटी क माटी मुलायम होइ।
अनगिनत लोग ओकर समन्वा कब्र मँ गएन ह, अउर
भविस्स मँ अउर भी लोग ओहस मिली।
34तउ आपन कोरे सब्दन स तू मोका चइन नाहीं दइ
सकत्या, तोहार जवाब सिरिफ झूठा अहइँ।"

एलीपज क जवाब

22 फुन तेमान क एलीपज जवाब देत भए कहेस।
2"परमेस्सर क कउनो भी मनई सहारा नाहीं दइ
सकत, हिअाँ तलक कि उ भी जउन बहोत बुद्धिमान मनई
होइ परमेस्सर बरे हितकर नाहीं होइ सकत।
3अगर तू उहइ किहा जउन उचित रहा एहसे सर्वसक्तीमान
परमेस्सर क आनन्द नाहीं मिली, अउर अगर तू खरा रहा
ह्वा तउ एहसे ओका पछू नाहीं मिली।
4अय्यूब तोहका परमेस्सर काहे सजा देत ह अउर काहे
तोह पइ दोख लगावत ह? का इ एह बरे कि तू भक्त
अहा।
5नाहीं, इ सबइ एह बरे कि तू बहोत स पाप किहा ह,
अय्यूब, तोहार पाप नाहीं रुकत अहइँ।
6अय्यूब, होइ सकत ह कि तू आपन कउनो भाई क
कछू चिज बिना कउनो कारण क गिरवी रख सकत ह। होइ
सकत ह कि तू कउनो दीन मनइ क ओढ़ना रख लिहे ह्वा
अउर ओनका नंगा बना किहे हवा्।
7तू थके-माँदे लोगन क पानी नाहीं दिहा, तू भुखान
मनइयन क भोजन नाहीं दिहा।
8अय्यूब, अगर तू सक्तीसाली अउ धनी रह्या, तू ओन
लोगन क सहारा नाहीं दिहा। तू बड़का जमींदार अउ समरथ
वाला मनई रह्या।
9मुला तू राँड़ अउरतन क बगइर कछू दिहे लउटाइ दिहा।
अय्यूब, तू अनाथ गदेलन क लूट लिहा अउर ओनसे बुरा
बेउहार किहा।
10एह बरे तोहरे चारिहुँ कइँती जाल बिछा भवा अहइँ
अउर तोहका एकाएक आवत विपत्तियन डेरावत हीं।
11एह बरे घना अँधियारा तोहका ढाँक लिहस ह अउर एह
बरे बाढ़ क पानी तोहका लीलत बाटइ।
12परमेस्सर अकास क सब स ऊँच हींसा मँ रहत ह। उ
आपन जगह स सबन स ऊँच तारन क लखइ बरे खाले
लखत ह।
13मुला अय्यूब, तू कहा करत ह, 'परमेस्सर कछू नाहीं
जानत, करिमा बादरन स कइसे परमेस्सर हमका जाँच सकत
ह?
14घना बादर ओका छुपाइ लेत हीं, एह बरे जब उ
अकास क सबन त ऊँच हींसा मँ बिचरत ह तउ हमका
ऊपर अकासे स लखि नाहीं सकत।'
15अय्यूब, तू उ ही पुरानी राह पइ जेन पइ दुस्ट लोग
चला करत हीं, चलत अहा।
16आपन मउत क समइ स पहिले ही दुट्ठ लोग मर
गएन। बाढ़ ओनका बहाइके लइ गइ रही।
17इ सबइ उहइ लोग अहइँ जउन परमेस्सर स कहत हीं,
'हमका अकेल्ले तजि द्या। उ पचे सोचेन कि सर्वसक्तीमान
परमेस्सर हमार कछू नाहीं कइ सकत ह।'
18मुला परमेस्सर ओन लोगन क कामयाब बनाएस ह
अउर ओनका धनवान बनाइ दिहा। मुला मइँ उ ढंग स जेहसे
दुस्ट सोचत हीं, अपनाइ नाहीं सकत हउँ।
19सज्जन जब बुरे लोगन क नास देखत हीं, तउ उ पचे
खुस होत हीं। पाप स रहित लोग दुस्टन पइ हँसत हीं, अउर
कहा करत हीं।
20'हमार दुस्मन फुरइ नस्ट होइ गएन। आगी ओनके धने
क बारि देत ह।'
21अय्यूब, अब खुद क तू परमेस्सर क अर्पित कइ द्या,
तब तू सान्ति पउब्या। अगर तू अइसा करा तउ तू धन्य
अउर कामयाब होइ जाब्या।
22ओकर सीख अपनाइ ल्या अउर ओकरे सब्द आपन
मने मँ सुरच्छित रखा।
23अय्यूब, अगर तू फुन सर्वसक्तीमान परमेस्सर क लगे
आवा तउ फिन स पहिले जइसा होइ जाइ। तोहका अपने घरे
स पाप क बहोत दूर करइ चाही।
24तोहका सोना क धूरी क नाईं अउर ओफीर क सोना
क नदी क तराई क चट्टान क नाईं समझइ चाही।

25तब सर्वसक्तीमान परमेस्सर तोहरे बरे सोना अउर चाँदी
बन जाइ।
26तब तू बहोत खुस होब्या अउर तोहका सुख मिली।
परमेस्सर क समन्वा तू बिना कउनो सर्म क मूँड़ि उठाइ
सकब्या।
27जब तू ओकर बिनती करब्या तउ उ तोर सुना करी,
जउन प्रतिग्या तू ओहसे किहे रह्या, तू ओका पूरा कइ
सकब्या।
28जउन कछू तू करब्या ओहमाँ तोहका कामयाबी मिली,
तोहरे रास्ते पइ प्रकास चमकी।
29परमेस्सर अहंकारी जन क लज्जित करी, मुला परमेस्सर
नम्र मनई क रच्छा करी।
30परमेस्सर जउन मनई भोला नाहीं अहइ ओकर भी
रच्छा करी, तोहरे हाथन क सफाई स ओका उद्धार मिली।"

अय्यूब जवाब देत ह

23 फिन अय्यूब जवाब देत भए कहेस।
2"मइँ आजु भी बुरी तरह सिकाइत करत हउँ कि
परमेस्सर मोका करी सजा देत अहइ, एह बरे मइँ सिकाइत
करत रहत हउँ।
3कास! मइँ इ जान पावत कि ओका कहाँ हेरउँ। कास!
मइँ इ जान पावत कि परमेस्सर क लगे कइसे जाउँ।
4मइँ आपन मुकद्मा क सफाई परमेस्सर क समन्वा पेस
करब्य्। मइँ आपन क निर्दोख साबित करइ बरे बहस
करब्या।
5मइँ इ जानइ चाहत हउँ कि परमेस्सर कइसे मोरे
दलीलन क जवाब देत ह, तब मइँ परमेस्सर क जवाब
समुझ पउतेउँ।
6का परमेस्सर आपन महासक्ती क संग मोरे खिलाफ
होत? नाहीं! उ मोर सुनी।
7मइँ एक नेक मनई हउँ। परमेस्सर मोका आपन कहानी
क कहइ देइ, तब मोर निआउ कत्ती परमेस्सर मोका अजाद
कइ देइ।
8मुला अगर मइँ पूरब क जाउँ तउ परमेस्सर हुआ नाही
अहइ अउर अगर मइँ पच्छिउँ क जाउँ तउ भी परमेस्सर
मोका नाहीं देखात ह।
9परमेस्सर जब उत्तर मँ छिपत ह* तउ मइँ ओका देख
नाहीं पावत हउँ। जब परमेस्सर दक्खिन क छिपत ह तउ भी
उ मोका नाहीं देखत ह।
10मुला परमेस्सर मोरे हर चरण क लखत ह, जेका मइँ
उठावत हउँ। जब उ मोर परीच्छा लइ उठी तउ उ लखी
कि मोहमाँ कछू भी बुरा नाहीं अहइ, उ लखी कि मइँ खरा
सोना जइसा अहउँ।
11परमेस्सर जउन चाहत ह मइँ हमेसा उहइ पइ चलत
हउँ मइँ कबहुँ भी परमेस्सर क राहे पइ चलइ स नाहीं
रुकेहउँ।
12मइँ हमेसा उहइ बात करत हउँ जेनकर आसा परमेस्सर
देत ह। मइँ आपन मुँहे क भोजन स जियादा परमेस्सर क
मुँहे क सब्दन स पिरेम किहेउँ ह।

13मुला परमेस्सर एक मन वाले अहा, अउर कउनो भी
ओका बदल नाहीं बदलत। परमेस्सर जउन चाहत ह उहइ
करत ह।
14परमेस्सर जउन भी जोजना मोरे विरोध मँ बनाइ लिहस
ह उहइ करी, ओकरे लगे मोरे बरे अउर भी बहोत सारी
जोजना अहइँ।
15एह बरे मइँ ओसे डेरात हउँ। एह बरे परमेस्सर मोका
भयभीत करत ह।
16परमेस्सर मोर हिरदइ क दुर्बल करत ह अउर मोर
हिम्मत टूट जात ह। सर्वसक्तीमान परमेस्सर मोका भयभीत
करत ह।
17अगर तउ मोर मुँह सघन अँधियारा ढकत ह तउ भी
अँधियारा मोका चुप नाहीं कइ सकत ह।

24 "सर्वसक्तीमान परमेस्सर काहे नाहीं निआउ करइ
बरे समइ मुकर्रर करत ह? लोग जउन परमेस्सर
क मानत हीं ओनका काहे निआउ क समइ क बेकार बाट
जोहइ क पड़त ह?
2"लोग आपन धन दौलत क चीन्हन क, जउन ओकर
चउहद्दी बतावत हीं, सरकावत रहत हीं ताकि आपन
पड़ोसी क थोड़ी अउर धरती हड़प लेइँ। लोग पसु क
चोराइ लेत हीं अउर ओनका दूसर चरागाहन मँ हाँक लइ
जात हीं।
3अनाथ बच्चन क गदहन क उ पचे चोराइ लइ जात
हीं। उ पचे राँड़ मेहारुअन क बर्धन खोल लइ जात हीं जब
तलक कि उ ओनकर कर्ज नाहीं चुकावत हीं।
4उ पचे दीन जन क मजबूर करत ही कि उ तजिके दूर
हटि जाइके मजबूर होइ जात ह, एन दुस्टन स खुद क
छुपावइ क।
5उ सबइ दीन लोग ओन जंगली गदहन जइसे अहइँ
जउन मरु भूमि मँ आपन चारा हेरा करत हीं। गरीबन अउ
ओनकर बच्चन क मरुभूमि भोजन देत रहत ह।
6गरीब लोगन क कउनो दूसर क खेत मँ अनाज काटइ
चाही। दुस्टन क अंगूरन क बगियन स बच भवा फलन उ
पचे चुना करत हीं।
7दीन लोगन क बगइर ओढ़नन क सबइ रात बितावइ क
होइ। सर्दी मँ ओनके लगे आपन क ढाँकइ बरे कछू नाहीं
होइ।
8उ पचे बर्खा स पहाड़न मँ भीज गवा अहइँ, ओनका
बड़की चट्टानन स लिपट क रहइ क होइ, काहेकि ओनके
लगे कछू नाहीं जउन ओनका मौसम स बचाइ लेइ।
9बुरे लोग ओन गदेलन क जेकर बाप नाहीं अहइ
ओनकइ महतारी स छिन लेत हीं। उ पचे गरीब लोगन क
आपन दास बनावत हीं।
10गरीब लोगन क लगे ओढ़ना नाहीं होत हीं। यह बरे
ओन लोगन क नंगा ही घूमइ क होइ। उ पचे दुस्टन क
गठरी क भार ढोवत हीं, मुला फुन भी उ पचे भुखान रहत
हीं।
11गरीब लोग जइतून क तेल पेरिके निकारत हीं। उ पचे
कुंडन मँ अंगूर सूँदत हीं फुन भी उ पचे पिआसा रहत हीं।

परमेस्सर ... छिपत ह जब परमेस्सर उत्तर मँ घूमत ह।

12मरत भए लोग जउन आहें भरत हीं उ सबइ सहर मँ
सुनाइ पड़त ह। सतावा भवा लोग सहारा क पुकारत हीं, मुला
परमेस्सर नाहीं सुनत ह।
13कछू अइसे लोग अहइँ जउन प्रकास क खिलाफ होत
हीं। उ पचे नाहीं जानइ चाहत हीं कि परमेस्सर ओनसे का
करवावइ चाहत ह। परमेस्सर क राह पइ उ पचे नाहीं चलत
हीं।
14हत्यारा भिंसारे जाग जात ह गरीबन अउ जरुरतवाले
लोग्न क हत्या करत ह। उ राति मँ चोर क नाईं बन जात
ह।
15उ मनई जउन बिभिचार करत ह, रात आवइ क बाट
जोहा करत ह, उ सोचत ह 'ओका कउनो नाहीं लखी' अउर
उ आपन मुँह ढाँपि लेत ह।
16दुट्ठ मनई जब रात मँ अँधेरा होत ह तउ सेंधे लगाइके
घरे मँ घुसत हीं। मुला दिन मँ उ पचे आपन हि घरन मँ
छुपा रहत हीं। उ पचे प्रकास स बचत हीं।
17ओन दुट्ठ लोग्न क आँधियारा सबुह क नाईं होत
ह, उ पचे आतंक अउ अँध्यिारा क मीत होत हीं।
18दुट्ठ लोग अइसे बाहइ दीन्ह जात हीं जइसे झाग बाढ़
क पानी पाइ। उ धरती अभिसाप स ढकी बा जेकर उ पचे
मालिक अहइँ। कउनो भी अंगूर क बगियन मँ अंगूर जमा
करइ बरे नाहीं जात ह।
19जइसे गरम व सूखा मौसम पिघलत बरफ क पानी क
सोख लेत ह, वइसे ही दुस्ट लोग कब्र क जरिये लील
जइहीं।
20दुस्ट मनइयन मरइ क पाछे ओकर महतारी तलक
ओका बिसरि जाइ। दुस्ट लोग्न क देह क कीरा खाइ
जइहीं। कउनो भी ओन लोग्न क याद नाहीं रखइहीं। दुस्ट
जन गिरे भए बृच्छ क नाई नष्ट कीन्ह जइहीं।
21दुस्ट मनइ बाँझ मेहारुअन क सतावा करत हीं। उ पचे
उ तरह क मेहारु क दुःख देत हीं। उ पचे कउनो भी रँड़
अउरत बरे दाया नाहीं देखौंवत हीं।
22दुस्ट मनई आपन सक्ती क उपयोग बलसाली क नस्ट
करइ बरे करत हीं। बुरे लोग सक्तीसाली होइ जइहीं मुला
आपन ही जिन्नगी क भरोसा नाहीं होइ कि उ पचे जियादा
दिन जी पइहीं।
23होइ सकत ह कि तनिक समइ बरे परमेस्सर सक्तीसाली
क सुरच्छित रहइ देइ, मुला परमेस्सर सदा ओन पइ आँखी
रखत ह।
24दुस्ट मनई तनिक समइ बरे कामयाबी पाइ जात हीं,
मुला फुन उ पचे नस्ट होइ जात हीं। दूसर लोग्न क तरह
उ पचे भी मुझी जात ही अउर उदास होइ जात हीं। अनाजे
क कटी भइ बाले क नाईं उ पचे गिर जात हीं।
25अगर इ सबइ बातन फुरइ नाहीं अहइँ तउ कउन सिध्द
कइ सकत ह कि मइँ झूठ कहेउँ ह। कउन देखाँइ सकत ह
कि मोर सब्द सत्तय नाहीं अहइँ?"

बिल्दद क अय्यूब क जवाब

25 फिन सूह प्रदेस क निवासी बिल्दद जवाब देत भए
कहेस।
2"परमेस्सर सासक अहइ अउर हर मनई क चाही कि
परमेस्सर स डेराइ अउर ओकर मान करइ। परमेस्सर आपन
सरग क राज्ज मँ सान्ति राखत ह।
3कउनो आपन फउजन क गन नाहीं सकत ह, परमेस्सर
क प्रकास सब पइ चमकत ह।
4मुला फुरइ परमेस्सर क अगवा कउनो मनई उचित नाहीं
ठहर सकत ह। कउनो मनई जउन मेहारु स पइदा भवा होइ
फुरइ निर्दोख नाहीं होइ सकत ह।
5परमेस्सर क आँखिन क समन्वा चाँद तलक चमकीला
नाहीं अहइ। परमेस्सर क आँखिन क समन्वा तारन निर्मल
नाहीं अहइँ।
6मनई तउ बहोत कम भला अहइँ। मनई तउ बस कीरा
अहइ एक ठु अइसा कीरा जउन बेकार क होत ह।"

अय्यूब क बिल्दद क जवाब

26 तब अय्यूब कहेस।
2"हे बिल्दद, सोपर अउर एलीपज़ जउन लोग
दुर्बल अहइँ तू फुरइ ओनका सहारा दइ सकत ह। अरे हाँ,
तू दुर्बल बाँहन क फुन स सक्तीसाली बनाया ह।
3हाँ, तू निर्बुध्दि क सम्मति दिहा ह। कइसा महागियान तू
देखाँया ह।
4इ बातन क कहइ मँ कउन तोहार मदद किहस? केकर
आतिमा तोहका प्रेरणा दिहस?
5जउन लोग मरि गवा अहइँ ओनकर आतिमा धरती क
खाले पानी मँ भय स बहोत काँपति अहइँ।
6मउत क जगह परमेस्सर क आँखी क समन्वा खुली
अहइ, परमेस्सर क अगवा विनास क जगह ढका नाहीं
अहइ।
7परमेस्सर उत्तरी अकासे क खाली जगह पइ फइलावत
ह। परमेस्सर खाली जगह मँ धरती लटकाएस ह।
8परमेस्सर घने बादरन क पानी स भरत ह, मुला पानी क
भारी भार स बादरन क फाटइ नाहीं देत ह।
9परमेस्सर पूरा चन्द्मा क ढाँपत ह, परमेस्सर चाँद पइ
आपन बादर फइलावत ह अउर ओका ढाँकि लेत ह।
10परमेस्सर छितिज क रचत ह प्रकास अउ अँधेरा क
सीमा रेखा क रुप मँ समुद्दर पइ।
11जब परमेस्सर डाँटत ह तउ उ सबइ नेवंन जउने पइ
आकास टिका अहइ डर स काँपइ लागत हीं।
12परमेस्सर क सक्ती सागर क संात कइ देत ह।
परमेस्सर क बुद्धि राहब* क नस्ट किहस।
13परमेस्सर क साँस अकास क साफ कइ देत ह।
परमेस्सर क हाथ उ साँप क मारि दिहस जउन पराइ जाइ क
जतन किहस।
14इ सबइ तउ परमेस्सर क अजूबा कारजन क तनिक सी
बातन अहइँ। बस हम थोड़के परमेस्सर क अवाज क
फुसफुसाहट क सुनित ह। मुला फुरइ कउनो मनई परमेस्सर
क सक्ती क गार्जन क नाहीं समुझ सकत ह।"

राहब या समुद्दरी अज़गर।

27 फुन अय्यूब कहइ क जारी राखेस। उ कहेस,
2"फुरइ परमेस्सर जिअत ह अउर इ जेतँना सच
अहइ कि परमेस्सर जिअत ह फुरइ उ वइसेन ही मोरे बोर
अनिआउ स भरा रहा अहइ। हाँ! सर्वसक्तीसाली परमेस्सर
मोरे जीवन मँ कड़वाहट भरेस ह।
3मुला जब तलक मोहमाँ प्राण अहइ अउर परमेस्सर क
साँस मोहे मँ अहइ।
4तब तलक मोरे होंठ झूठी बातन नाहीं बोलिहीं, अउर
मोर जिभिया कबहुँ झूठ नाहीं बोली।
5मइँ कबहुँ न मानब कि तू लोग सही अहा। जब
तलक मइँ मरब उ दिन तलक कहत रहब कि मइँ निर्दोख
हउँ।
6मइँ आपन धार्मिक भाव क मजबूती क थामे रहब। मइँ
कबहुँ उचित करम करब न तजब मोर चेतना मोका तंग
नाहीं करी जब तलक मइँ जिअत हउँ।
7मोरे दुस्मनन क दुस्ट जइसा बनइ द्या, अउर ओनका
सजा पावइ द्या जइसे दुस्ट लोग दण्डित होत हीं।
8अइसे उ मनई बरे मरत वक्त कउनो आसा नाहीं अहइ
जउन परमेस्सर क परवाह नाहीं करत ह। जब परमेस्सर
ओकर प्राण लेइ तब भी ओकरे बरे कउनो आसा नाहीं
अहइ।
9जब उ बुरा मनई दु:खी पड़ी अउर ओका पुकारी,
परमेस्सर नाहीं सुनी।
10ओका चाही कि उ उ आनन्द क चाहइ जेका सिरिफ
सर्वसक्तीमान परमेस्सर देत ह। ओका चाही कि उ हर समइ
परमेस्सर स पराथना करत रहा।
11मइँ तोहका परमेस्सर क सक्ती सिखाउब। मइँ
सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क योजनन क नाहीं छिपाउब।
12खुद तू आपन अँखिन स परमेस्सर क सक्ती लख्या ह,
तउ काहे तू बेकार क बातन क बोलत ह?
13दुस्ट लोगन बरे अइसी जोजना बनाया ह। दुस्ट लोगन
क सर्वसक्तीसाली परमेस्सर स अइसा ही मिली।
14दुस्ट क चाहे केतँनी ही सन्तानन होइँ, मुला ओकर
संतानन जुद्ध मँ मारी जइहीं। दुस्टन क सन्तानन कबहुँ
भरपेट खाना नाहीं पइहीं।
15अउर अगर दुस्टन क सन्तानन ओकरी मउत क पाछे
भी जिअत रहइँ तउ महामारी ओनका मारि डाई। ओकर रँड़
ओनके बरे दु:खी नाहीं होइहीं।
16दुस्ट जन चाहे चाँदी क ढेर बटोरइँ, एतना बड़का ढेर
जेतँना माटी क ढूहा होत ह, माटी क ढूहन जइसे ओढ़ना
होइँ ओकरे लगे।
17जउने ओढ़नन क दुस्ट मनई जुटावत रहा ओन ओढ़नन
क सज्जन पहिरी, दुस्ट क चाँदी निर्दोखन मँ बँटी।
18दुस्ट क बनावा घर जियादा दिनन नाहीं टिकत ह, उ
मकड़ी जाल जइसा या कउनो चौकीदार क झोपड़ी जइसा
कमजोर होत ह।
19दुस्ट लोग आपन खुद क दौलत क संग आपन
बिछउना पइ सोवइ जात ह, मुला एक अइसा दिन आइ जब
उ फुन बिस्तरे मँ वइसे ही नाहीं जाइ पाई। जब उ अँखी
खोली तउ ओकर सम्पत्ति जाइ चुकी होइ।
20दु:ख ओका बाढ़ क जइसा ढाँक लेइहीं, रातउ रात
तूफान ओका उड़ाइ लइ जाइ।
21पुर वइया हवा ओका दूर उड़ाइ देइ, तूफान ओका
ओकरे घरे क बाहेर खींचली।
22तू फान ओह पइ बग्गैर दाया किए भए पइ आइ अउर
उ ओमँ स दूर भागइ क जतन करी। मुला लपेटके मारी।
23जब दुस्ट मनई पराई, लोग ओह पइ तालियन बजाइहीं,
दुस्ट जन जब निकरिके पराइ, अपने घरे स तउ लोग ओह
पइ सीटियन बजइहीं।
28 "हुआँ चाँदी क खान बाटइ जहाँ लोग चाँदी पावत
हीं, हुआँ अइसे ठउर अहइँ जहाँ लोग सोना
देघराइके ओका सुद्ध करत हीं।
2लोग धरती स खनिके तोहा निकारत हीं, अउर चट्टानन
स टेघराइके ताँबा निकारत हीं।
3लोग सबइ गुफा मँ प्रकास लिआवत हीं उ पचे सबइ
गुफा क गहिराइ मँ हेरा करत हीं, घना अँधियारा मँ उ पचे
खनिज क चट्टानन हेरत हीं।
4जहाँ लोग रहत हीं ओहसे बहोत दूर लोग गहिर गड़हा
खना करत हीं, कबहुँ कउनो अउर एँन गड़हन क नाहीं
छुएस। जब मनई गहिरे गड़हन मँ रस्सन स लटकत ह, तउ
उ दूसरन स बहोत दूर होत ह।
5भोजन धरती क सतह स मिला करत ह, मुला धरती क
भीतर उ बढ़त जावा करत ह जइसे आगी चिजियन क बदल
देत ह।
6धरती क भितरे चट्टानन क खाले नीलम मिलि जात हीं,
अउर धरती क खाले माटी आपन आप मँ सोना राखत ह।
7जंगली पंछी धरती क खाले क राहन नाहीं जानत हीं न
ही कउनो बाज इ मारग लखत ह।
8उ राहन पइ कउनो बड़का डीलडोल वाला पसु नाहीं
चलेन, कबहुँ सेर इ राहे पइ नाहीं विचरेन।
9मजदूर सब स कठोर चट्टानन क खनत हीं अउर उ
पचे पहाड़न क ओकर जड़ स खनिके गिरा देत हीं।
10काम करइवालन चट्टानन स सुरंग काटत हीं उ
पचन्क आँखन हुआँ खजानन क लखि लेत हीं।
11काम करइवालन बाँध बनवा करत हीं कि पानी ऊपर
स होइके न बहइ। उ पचे छिपी भइ चिजियन क ऊपर
प्रकास मँ बिआवत हीं।
12मुला कउनो मनई विवेक कहाँ पाइ सकत ह? अउर
हम कहाँ जाइ सकित ह समुझ पावइ क?
13गियान कहाँ रहत ह लोग नाहीं जानत हीं, लोग जउन
धरती पइ रहत हीं, ओमाँ इ नाहीं पाइ जात ह।
14सागरे क गहराइ बतावत ह, 'मोह माँ गियान नाहीं।'
अउर समुद् कहत ह, 'हिआँ मोहमाँ गियान नाहीं अहइ।'
15गियान क बहोत कीमती सोना भी मोल नाहीं लइ
सकत ह, गियान क दाम चाँदी स नाहीं गना जाइ सकत ह।
16गियान ओपीर देस क सोना स या कीमती सुलैमानी
पाथर या नीलमणियन स नाहीं बेसहा जाइ सकत ह।
17गियान सोना अउ स्फटिक स जियादा कीमती बाटइ,
कउनो मनई बहोत कीमती सोना स जड़े भए रत्नन स गियान
नाहीं बेसहि सकत ह।

18गियान मूँगा अउ सूर्यकान्त मणि स जियादा कीमती बा।
गियान क कउनो मनई सिद्ध सोने मँ जुरे कीमती रतन स
नाहीं बेसहा सकत ह।
19जेतना उत्तिम गियान अहइ कूस देस क पद्मराग भी
ओतना उत्तिम नाहीं अहइ। गियान क तू चोख सोना स मोल
नाहीं लइ सकत्या।
20तउ फुन हम कहाँ गियान क पावइ जाइ? हम कहाँ
समुझ सीखइ जाइ?
21गियान धरती क हर मनई स लुका भवा अहइ। हिआँ
तलक कि ऊँच अकास क पंछी भी गियान क नहीं लखि
पावत हीं।
22मउत अउ विनास कहा करत हीं, 'हम तउ बस गियान
क बातन सुनी ह।'
23मुला बस परमेस्सर गियान तलक पहोंचइ क राहे क
जानत ह। परमेस्सर जानत ह गियान कहाँ रहत ह।
24परमेस्सर गियान क जानत ह काहेकि उ धरती क
अखिरी छोर तलक लखा करत ह। परमेस्सर उ हर वस्तु क
जउन अकास क खाले अहइ लखा करत ह।
25जब परमेस्सर हवा क ओकर सक्ती दइ दिहस अउर इ
निहचित किहस कि समुद्दरन क केतना बड़का बनावइ क
अहइ।
26अउर जब परमेस्सर निहचय किहस कि ओका कहाँ स
बर्खा पठवइ क अहइ, अउर बउड़रन क कहाँ तलक जात्रा
करइ क अहइ।
27तब परमेस्सर गियान क लखे रहा। उ ओका मापेस,
ओका साबित किहेस अउर इका परखेस।
28अउर लोगन स परमेसस्र कहे रहा कि 'यहोवा क भय
माना अउर ओका आदर द्या।' बुराइयन स मुँह मोड़ि लेब ही
गियान अहइ, इहइ समझदारी अहइ।"

अय्यूब आपन बात जारी रखत ह

29 आपन बात क जारी रखत भए अय्यूब कहेस।
2"मोर जिन्नगी वइसे ही होइ चाही रही जइसे
गुजरे महीने मँ रही। जब परमेस्सर मोर रखवारी करत रहा,
अउर मोर धियान रखत रहा
3मइँ अइसे उ समइ क इच्छा करत हउँ जब परमेस्सर
क प्रकास मोरे मूँड़े पइ चमचमात रहा। मोका प्रकास देखाँवइ
क उ समइ जब मइँ अँधियारा स होइके चलत रहेउँ।
4अइसे ओन दिनन क इच्छा करत हउँ, जब मोर जिन्नगी
सफल रही, अउर परमेस्सर मोरे निचके मीत रहा। उ सबइ
अइसेन दिन रहेन जब परमेस्सर मोरे घरे क असीसे रहा।
5अइसे समइ क मइँ इच्छा करत हउँ, जब सर्वसक्तीसाली
परमेस्सर अबहुँ तलक मोरे संग मँ रहा अउर मोरे संग मोर
गदेलन रहेन।
6अइसा लगा करत रहा कि दूध-दही क नदियन बहा
करत रहिन, अउर मोरे बरे चट्टानन जइतून क तेल क
नदियन उड़ेरत रहिन।
7इ सबइ ओ दिन रहेन जब मइँ नगर क दुआर अउर
गलीयन क चौराहन पइ जात रहेउँ, अउर नगर नेता लोगन
क संग बइठत रहेउँ।
8हुवाँ सबइ लोग मोर सम्मान किहा करत रहेन। जवान
मनसेधू जब मोका लखत रहेन तउ मोरी राह स हट जावा
करत रहेन अउर बुढ़वा मनसेधू मोरे बरे सम्मान देखाँवइ बरे
उठ खड़ा होत रहेन।
9जब लोगन क नेता लोग मोका लखि लेत रहेन, तउ
बोलब बंद कइ देत रहेन।
10हिआँ तलक कि बहोतइ महत्ववाले नेता भी आपन स्वर
हल्का कइ लेत रहेन, जब मइँ ओनके नियरे जात रहेउँ। हाँ!
अइसा लागत रहा कि ओनकर जिभियन ओनकर तालु स
चिपक गइ होइँ।
11जउन कउनो भी मोका बोलत सुनेस, मोरे बारे मँ नीक
बात कहेस, जउनो कउनो भी मोका लखे रहा, मोर बड़कई
किहे रहा।
12काहेकि जब कउनो दीन मदद बरे गोहँराएस, मइँ मदद
किहेउँ। उ गदेला क मइँ सहारा दिहेउँ जेकरे महतारी बाप
नाहीं अउर जेकर कउनो भी नाहीं धियान रखइ क।
13मोका मरत भए मनई क आसीस मिला, मइँ ओन राँड़
मेहररुअन क जउन जरुरत मँ रहिन, मइँ सहारा दिहेउँ अउर
ओनका खुस किहेउँ।
14मोर ओढ़ना पहिरब मोर खरी जिन्नगी रही, निस्पच्छ
होब मोर चोगा अउर मोर पगड़ी सी रही।
15मइँ आँधरन बरे आँखी बन गएउँ अउर मइँ ओनकर
गोड़ बनेउँ जेनकर गोड़ नाहीं रहेन।
16दीन लोगन बरे मइँ बाप क तरह रहेउँ, मइँ पच्छ लेत
रहेउँ अइसे अनजानन क जउन विपत्तियन मँ पड़ा रहेन।
17मइँ दुस्ट लोगन क सक्ती नस्ट करत रहेउँ। निर्दोख
लोगन क मइँ दुस्टन स अजाद करावत रहेउँ।
18मइँ सोचत रहेउँ कि मइँ बहोत लम्बी जिन्नगी*
जिअब अउर फुन आपन ही घरे मँ प्राण तजब।
19मइँ एक ठु अइसा बृच्छ बनब जेकर जड़न सदा जल
मँ रहत होइँ अउर जेकर डारन सदा ओस स भीजी रहत
होइँ।
20मोर सान सदा ही नई बनी रही, मइँ सदा ही वइसा
बलवान रहब जइसे, मोरे हाथे मँ एक नवा धनुस।
21पहिले, लोग मोर बात सुनत रहत रहेन, अउर उ सबइ
जब मोर सलाह मसवरा क इंतजार करत रहेन, तउ चुप रहा
करत रहेन।
22मोर चुकइ क पाछे, ओन लोगन क लगे जउन मोर
बात सुनत रहेन, कछू भी बोलइ क नाहीं होत रहा। मोर
सब्द धीरे धीरे ओनकर काने मँ बर्खा क तरह पड़ जात
रहेन।
23लोग जइसे बर्खा क बाट जोहत हीं वइसे ही उ पचे
मोरे बोलइ क बाट जोहा करत रहेन। मोरे सब्दन क उ पचे
पी जावा करत रहेन, जइसे मोर सब्द बसन्त मँ बरसा होइ।
24जब मइँ दाया करइ क ओन पइ मुस्कात रहेउँ, तउ
ओनका पहिले पहल ए पइ बिस्सास नाहीं होत रहा। फुन
मोर खुस मुँह दुखी जन क सुख देत रहा।

लम्बी जिन्नगी सम्भवत:ओतॅना ही लम्बी जिन्नगी जेतॅना कि एक ठू अमर पंछी जिअत ह।

25मइँ जिम्मेदारी बिहेउँ अउर लोगन बरे पइसला किहेउँ,
मइँ नेता बन गएउँ। मइँ ओनकर सोना क दलन क बीच
राजा जइसा जिन्नगी जिएउँ। मइँ अइसा मनई रहेउँ जउन
लोगन क चइत देत रहा जउन बहोत ही दुःखी बाटइ।

30 अब, उमर मँ छोटा लोग मोर मसखरी करत हीं।
ओन जवान मनसेधुअन क बाप बिल्कुल ही
निकम्मा रहेन। ओन कूकुरन जउन मोर भेड़िन क रखवारा
करत ह ओन लोगन स बेहतर अहइँ।
2ओन जवान मनसेधुअन क बाप मोका मदद देइ क
कउनो सक्ती नाहीं राखत हीं, उ पचे बुढ़वा होइ चुका अहइँ
अउ थका भवा अहइँ।
3उ सबइ मनई भूख स मरत अहइँ यह बरे उ पचे झुरान
अउर उजाड़ धरती खावत ह।
4उ सबइ लोग रेगिस्तान मँ खारे पउधन क उखाड़त हीं
अउर उ पचे झाड़ीदार बृच्छन क जड़न क खात हीं।
5उ पचन्क दूसर लोगन स भगाइ दइ गएन। उ पचे ओन
लोगन पइ अइसे गोहरावत हीं जइसे लोग चोर पइ
गोहरावत हीं।
6अइसे उ सबई बुढ़वा लोग झुरान भइ नदी क तलन मँ
चट्टानन क सहारे अउ धरती क बिलन मँ रहइ क मजबूर
अहइँ।
7उ पचे झाड़ियन क बीच गुर्रात हीं। कँटैहरी बृच्छन क
नीचे उ पचे आपुस मँ बटुर जात हीं।
8ओन पचन्क फसादी लोगन क दल अहइ, जेनकर नाउँ
तलक नाहीं अहइ। ओनका आपन भुइँया तजि देइ क मजबूर
कीन्ह गवा अहइ।
9अब अइसे ओन लोगन क पूत मोर हँसी उड़ावइ क
मोरे बारे मँ गीत गावत हीं। मोर नाउँ ओनके बरे अपसब्द
जइसा बन गवा अहइ।
10उ सबइ नउजवान मोहसे घिना करत हीं। उ पचे मोसे
दूर खड़ा रहत हीं। हिअँ तलक कि उ पचे मोरे मुँहे पइ
थूकत हीं।
11परमेस्सर मोरे धनुस स ओकर डोर छोर लिहस ह अउर
मोका दुर्बल किहस ह। उ पचे मोह पइ कोहान होत भए
मोरे खिलाफ होइ जात ह।
12उ सबइ जवान मोर दाहिनी कइँती स मोह पइ प्रहार
करत हीं। उ पचे मोर गोड़न पइ हमला कइके मोका
गिरावत ह अउर मोका चारिहुँ कइँती स घेर लेत ह।
13उ पचे नव जवान मोरी राह पइ निगरानी रखत हीं कि
मइँ बचिके निकरिके पराइ न सकउँ। उ पचे मोका नस्ट
करइ मँ सफल होइ जात हीं। ओनके खिलाफत मँ मोर
मदद करइ क मोरे संग कउनो नाहीं अहइ।
14उ पचे मोह पइ अइसे वार करत हीं जइसे कि सहर
क दिवार क दरार स होत ह। उ पचे टुटे हुए हिस्से स
अन्दर आवत हीं।
15मोका भय जकड़ लेत ह। जइसे हवा चिजियन क उड़ाइ
लइ जात ह, वइसेन ही उ पचे जवान मोर इज्जत धुवस्त
करइ देत हीं। जइसे बादर अदृस्य होइ जात ह, वइसे ही मोर
सुरच्छा अदृस्य होइ जात ह।
16जब मोर जिन्नगी बीतइ क अहइ अउर मइँ हाली ही
मर जाब। मोका संकट क दिन दहबोच लिहे अहइँ।
17मोर सबइ हाड़न राति क दुख देत हीं, पीरा मोका
चबाव नाहीं छोड़त ह।
18मोरे कोट क गिरेबान क परमेस्सर बड़ी ताकत स धरत
ह, उ मोरे लिबास क ताकत स पकड़ लेत ह।
19परमेस्सर मोका कीचं मँ बहाइ दिहस अउर मइँ माटी व
राखी स बनत हउँ।
20हे परमेस्सर, मइँ सहारा पावइ क तोहका गोहरावत हउँ,
मुला तू उत्तर नाहीं देत ह। मइँ खड़ा होत हउँ अउ पराथना
करत हउँ, मुला तू मोह पइ धियान नाहीं देत्या।
21हे परमेस्सर, तू मोर बरे निर्दयी होइ गवा अहा, तू
मोका नोस्कान पहोंचावइ क आपन सक्ती क प्रयोग करत
अहा।
22हे परमेस्सर, तू मोका तेज आँधी स उड़ाइ देत ह। तू
मोका तू फाने क बीच मँ डाल देत ह।
23मइँ जानत हउँ तू मोका मोर मउत कइँती लइ जात
अहा जहाँ आखीर मौं हर कउनो क जाब अहइ।
24मुला इ निहचय ह कि तू कउनो मनई जउन मदद बरे
गोहरावत ह, ओन स नाहीं मुड़त ह।
25हे परमेस्सर, तू तउ जानत ह कि मइँ ओनके खातिर
रोएउँ जउन संकट मँ पड़ा अहइँ। तू तउ इ जानत ह कि
मोर मन गरीब लोगन बरे बहोत दुखी रहत रहा।
26मुला जब मइँ भला चाहत रहा, तउ बुरा होइ जात रहा।
मइँ प्रकास हेरत रहेउँ अउर अँधियारा छाइ जात रहा।
27मइँ भितरे स फट गवा हउँ अउर इ अइसा अहइ कि
संकट कबहुँ नाहीं थम जात। अउर जियादा संकट आवइ क
अहइ।
28मइँ सोक क ओढ़ना पहिनके माना बगइर सूरज की
गर्मी स करिया होइ गना हूँ। मइँ सभा क बीच मँ खड़ा होत
हउँ, अउर मदद क गोहरावत हउँ।
29मइँ जंगली कूकुरन क भइया अउर सुतुरमुर्ग क मीत
होइ गवा हउँ।
30मोर चमड़ी करिया पड़ि गइ बाटइ। मोर तन बुखारे स
तपत बाटइ।
31मोर वीणा करुण गीत गावइ क सधी बाटइ अउर मोर
बाँसुरी स दुःख क रोवइ जइसे स्वर निकरत हीं।
31 "मइँ आपन अँखिन क संग एक समझौता किहेउ
ह कि उ सबइ कउनो लड़िकी क वासना क
निगाह स न लखहीं।
2सर्वसक्तीमान परमेस्सर लोगन क संग कइसा करत ह?
उ कइसे आपन ऊँच सरगे क घरे से ओनकर करमन क
प्रतिफल देत ह?
3परमेस्सर दुस्ट लोगन बरे सकंट अउ विनास पठवत ह,
अउर जउन बुरा करम करत हीं ओनके बरे बर्बादी पठवत
ह।
4मइँ जउन भी करत हउँ परमेस्सर जानत ह। अउर मोरे
हर कदम क उ लखत ह।
5अउर मइँ झूठी जिन्नगी जिया हउँ या झूठ बोलिके
लोगन क मूरख बनाए हउँ,

6तउ उ मोका खरी तराजू स तौलेइ, तब परमेस्सर जान
लेइ कि मइँ निरपराध हउँ।
7अगर मइँ खरा रास्ता स हटा होउँ, अगर मइँ आपन
आप क बुरे लालसा मैं लइ गइ होइ या अगर मइँ आपन
हाथ क पवित्तर नाहीं राखत हइँ,
8तउ मोर उपजाई भइ फसल दूसर लोग खाइ जाइँ अउर
मोर फसलन क उजारिके लइ जाइँ।
9अगर मइँ मेहररुअन बरे कामुक रहा होउँ, या अगर
मइँ आपन पड़ोसी क दुआरे क ओकरी पत्नी क संग
व्यभिचार करइ क बरे ताकत रहा होउँ,
10तउ मोर पत्नी दूसर लोगन क भोजन बनावइ अउर
ओकरे संग दूसर लोग सोवइँ।
11काहेकि यौन पाप लज्जा स भरा होत ह? इ अइसा पाप
अहइ जेका निहचय ही सजा पावइ चाही।
12व्यभिचार उ पाप क समान अहइ, जउन बारत अउ
बर्बाद कइ डावत ह। मोरे लगे जउन कछू भी अहइ
बिभिचार क पाप ओका बारि डाइ।

13-14"अगर मइँ आपन दास-दासियन क समन्वा उ समइ
निस्पच्छ नाहीं रहेउँ जब ओनका मोसे कउनो सिकाइत रही।
तउ जब मोका परमेस्सर क समन्वा जाइ क होइ, तउ मइँ
का करब? जब उ मोका मोरे करमन क सफाई माँगइ
बोलाइ तउ मइँ परमेस्सर क का जवाब देब?
15परमेस्सर मोका अउर मोरे सेवकन क हमरी आपन-आपन
महतारी क गर्भ मैं बनाएस ह।
16मइँ कबहुँ भी दीन जन क मदद क मना नाहीं किहेउँ।
मइँ रँड़ मेहररुअन क सहारे क बिना नाहीं रहइ दिहेउँ।
17मइँ स्वार्थी नाहीं रहेउँ। मइँ आपन भोजन क संग
अनाथ बच्चन क भूखा नाहीं रहइ दिहेउँ।
18मइँ अइसे गदेलन क जेनके बाप नाहीं अहइँ, मइँ बाप
जइसा रहेउँ ह। मइँ जिन्नगी भइ रँड़ मेहररुअन क धियान
रखेउँ ह
19जब मइँ कउनो क एह बरे कस्ट भोगत भए पाएउँ ह
कि ओकरे लगे ओढ़ना नाहीं अहइ, या मइँ कउनो दीन क
बगैर कोट क पाएउँ।
20तउ मइँ सदा ओन लोगन क ओढ़ना देत रहेउँ, मइँ
ओनका गरम राखइ क मइँ खुद आपन भेड़िन क ऊन
बइपरेउँ, तउ उ पचे मोका समूचइ मने स असीसत रहेन।
21मइँ कउनो अनाथे क खिलाफ कबहुँ आपन हाथ नाहीं
उठाएस जब कबहुँ मइँ ओका सहर क फाटके पइ मदद
माँगत भए निहारेउँ।
22अगर मइ अइसा किहेउँ तउ मोर काँधा आपन जगह
स छूट कइ गिर जाइ अउर मोर बाजू आपन जोड़ स अलग
होइ जाइ।
23मुला मइँ तउ ओनमाँ स कउनो बुरा करम नाहीं
किहेउँ। मइँ परमेस्सर क दण्ड स डेरात हउँ। मइँ ओकरी
तेजस्विता स डेरात हउँ।
24मइँ कबहुँ आपन धन दौलत क भरोसा नाहीं किहेउँ,
अउर मइँ कबहुँ नाहीं चोखा सोने स कहेउँ कि 'तू मोर
आसा अहा।
25मइँ धने स सम्पन्न रहेउँ। मुला मइँ ओसे घमण्डी नाहीं
भएउँ। मइँ खूबइ धन कमाएउँ। मुला उहइ नाहीं जेहसे मइँ
आनन्दित भएउँ।
26मइँ कबहुँ नाहीं चमकत सूरज क पूजा किहेउँ या मइँ
सुन्नर चाँद क पूजा नाहीं किहेउँ।
27मइँ कबहुँ भी आपन हाथ क चूम कइ सूरज अउर
चाँद क पूजा करइ क मूरखता नाहीं किहा रहा।
28अगर मइँ एनमाँ स कछू किहेउँ तउ उ मोर पाप होइ
अउ मोका सजा मिलइ। अगर मइँ ओन बातन क पूजा किहे
होतेउँ तउ सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क अबिस्सासी होइ
जातेउँ।

29"जब मोर दुस्मन बर्बाद भएन तउ मइँ खुस नाहीं भएउँ।
जब मोरे दुस्मनन क दुख-मुसीबत डाली गवा, तउ मइँ
ओकर बरे खूस नाहीं भवा।
30मइँ आपन मुँह खोलिके आपन दुस्मनन क सरापत भए
पाप नाहीं किहेउँ अउ मइँ ओकरे मोत क इच्छा नाहीं
कहेस।
31मोरे घरे क सबहिं लोग जानत हीं कि मइँ सदा
अजनबी लोगन क खइया क दिहेउँ।
32मइँ सदा अजनबी लोगन क घरे मैं बोलाएउँ, ताकि
ओनका राति मैं गलियन मैं सोवइ क न पड़इ।
33दूसर लोग आपन पापे क छुपावइ क जतन करत हीं,
मुला मइँ आपन दोख कबहुँ नाहीं छुपाएउँ।
34मइँ कबहुँ नाहीं डेराउँ कि लोग का कहत रहत हीं।
मइँ कबहुँ चुप नाहीं रहेउँ अउ मइँ आपन घर स बाहेर जाइ
बरे कबहुँ नाहीं डेरउँ।
35कास! कउनो होत जउन मोर सुनत। मोका आपन बात
अपनी कइँती स समझावइ दया। कास! सक्तीसाली परमेस्सर
मोका अउर कास उ ओनँ बातन क लिखत जउन मइँ
ओकरी निगाहे मैं गलत किहे रहेउँ।
36काहेकि फुरइ ही मइँ उ लिखावट आपन खुद क काँधे
पइ धइ लेब अउर मइँ ओका मुकुट क तरह मूँड़े पइ धइ
लेब।

37"अगर परमेस्सर किहेस तउ जउन कछू मइँ किहेउँ ह,
मइँ ओका परमेस्सर क समुझाउब। मइँ परमेस्सर क
लगे आपन मूँड़ी उठाइके जाब, जइसे मइँ कउनो मुखिया
होउँ।
38मइँ आपन भुइँया पइ कबहुँ बेगुनाह क खुन नाहीं
बहाया हउँ ऍह बरे मोर मिट्टी या मोर धरती क खिलाफ
कबहुँ आवाज़ा नाहीं उठाएस।
39मइँ हमेसा मजदूरन क फसल काटइ बरे ओनकर
मजूरी दिहेउँ। मइँ कबहुँ भी ओकर मालिक स जबरदस्ती
अनाज़ नाहीं लिहेउँ।
40हाँ! एनमाँ स अगर कउनो भी बुरा काम मइँ किहे
होउँ, तउ गोहूँ क जगह पइ काँटा अउर जौ क बजाय
खर-पतवार खेतन मैं उग जाइँ।"

अय्यूब क सब्द खतम भएन।

एलीहू क वचन

32 फुन अय्यूब क तीनउँ मीत अय्यूब क जवाब देइ
क जतन करब तजि दिहेन। काहे कि उ अपने
नजर मँ सच्चा रहेन। 2हुआँ एलीहू नाउँ क एक मनई भी
रहा। एलीहू बारकेल क पूत रहा। बारकेल बुज क निवासी
रहा। एलीहू राम क परिवारे स रहा। एलीहू क अय्यूब पइ
बहोत किरोध आवा काहेकि अय्यूब अपने आप क सही
ठहराएस बजाय परमेस्सर क सही ठहरइ क। 3एलीहू अय्यूब
क तीनउँ मीतन स भी कोहान रहा काहेकि उ पचे तीनउँ ही
अय्यूब क सवालन क जुक्ति संगत जवाब नाहीं दइ पाए
रहेन अउर इ साबित नाहीं कइ सकन कि अय्यूब कसूरवार
अहइ। 4हुआँ जउन लोग रहेन ओनमाँ एलीहू सबसे लहुरा
रहा। एह बरे उ तब तलक बाट जोहत रहा जब तलक हर
कउनो आपन आपन बात पूरी नाहीं कइ चुका। 5एलीहू जब
इ लखेस कि अय्यूब क तीनहुँ मीतन क लगे कहइ क
अउर कछू नाहीं अहइ तउ ओका बहोत किरोध आवा। 6तउ
बुज क निवासी बारकेल क पूत एलीहू आपन बात कहब
सुरु किहस। उ बोला:

"मइँ लहुरा अहउँ अउर तू लोग मोहसे जेठ अहा, मइँ
एह बरे तोहका उ बतावइ मँ डेरात रहेउँ जउन मइँ सोचत
रहेउँ।

7मइँ मन मँ सोचेउँ, 'बड़के क पहले बोलइ चाही, अउर
ओका बुद्धि सिखाइ चाही।'

8मुला मनई मँ परमेस्सर क आतिमा बुद्धि देत ह अउर
सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क जरिये दिया भवा साँस मनई क
गियान देत ह।

9उमर मँ ज़ेठ मनई ही नाहीं गियानी होत हीं। का बस
बड़ी उम्र क लोग ही इ जानत हीं कि उचित का अहइ?

10ऍह बरे मइँ जउन कछू जानत हउँ तोहका कहत हउँ।
तू पचे मोर बात सुना मइँ तू पचन्क बताउब कि मँइ का
सोचत हउँ।

11जब तलक तू लोग बोलत रह्या, मइँ बाट जोहत रहा।
मइँ तोहार बुद्धि सुनइ चाही रहा। मइँ खामूस रह्या जब तू
पचे बोलइ बरे सोच बिचार किहस।

12मइँ तोहरे मर्म स भरे सब्दन क अय्यूब क उत्तर देइ
खातिर धियान स सुनत रहेउँ। मुला तीनउँ ही इ सिद्ध नाहीं
कइ पाया कि अय्यूब बुरा अहइ। तोहमाँ स कउनो भी
अय्यूब क तर्कन क जवाब नाहीं दइ पावा।

13तू लोगन क इहइ नाहीं कहइ चाही कि तू पचे गियान
क पाइ लिहा ह। लोग नाहीं, परमेस्सर निहचय ही अय्यूब
क तर्कन क जवाब देइ।

14मुला अय्यूब मोरे खिलाफत मँ नाहीं बोलत रहा, एह
बरे मइँ ओन तर्कन क प्रयोग नाहीं करब जेकर प्रयोग तू
पचे तीनहुँ किहा ह।

15अय्यूब, तोहरे तीनहुँ मीत असमंजस मँ पड़ा अहइँ,
ओनके लगे कछू भी अउर कहइ क नाहीं अहइ, ओनके
लगे जवाब दइ बरे अउर कछु नाहीं अहइ।

16इ सबइ तीनहुँ लोग हिआँ चुप खड़ा अहइँ अउर
ओनके लगे जवाब नाहीं अहइ। तउ का अबहिं भी मोका
प्रतीच्छा करइ चाही?

17नाहीं! मइँ भी आपन जवाब देब। मइँ भी बताउब तू
पचन्क कि मइँ का सोचत हउँ।

18काहेकि मोरे लगे कहइ क बहोत अहइ। मोरे भितरे
जउन आतिमा अहइ, उ मोका बोलइ क मजबूर करत ह।

19मइँ आपन भितरे अइसी नई दाखरस सा हउँ, जउन
हाली ही बाहेर उफनइ क अहइ। मइँ उ नई दाखरस मसक
जइसा हउँ जउन हाली ही फट जाइ क अहइ।

20तउ निहचय ही मोका बोलइ चाही, तबहिं मोका नीक
लागी। आपन मुँह मोका खोलइ चाही अउर मोका अय्यूब
क सिकाइतन क जवाब देइ चाही।

21इ बहस मँ मइँ कउनो क पच्छ नाहीं लेबइँ अउ
अय्यूब क वइसे ही पच्छ लेबउँ जइसे दूसर क होइ चाही।
मइँ कउनो क खुसामद न करब।

22मइँ नाहीं जानत हउँ कि कइसे कउनो मनई क खुसामद
कीन्ह जात ह। अगर मइँ कउनो क खुसामद करइ जानत
तउ हाली ही परमेस्सर ओका सजा देत।

33 "मुला अय्यूब अब, मोर संदेस सुना। ओन बातन
पइ धियान द्या जेनका मइँ कहत हउँ।

2मइँ आपन बात कहइ क तइयार हउँ। मइँ आपन सब्द
चुनत हउँ।

3मोर मन सच्चा अहइ तउ मइँ सच सब्द बोलब। ओन
बातन क बारे मँ जेनका मइँ जानत हउँ मइँ सच कहब।

4परमेस्सर क आतिमा मोका बनाएस ह, मोका सर्वसक्तीसाली
परमेस्सर स जिन्नगी मिलत ह।

5अय्यूब, सुना अउ मोका जवाब द्या अगर तू सोचत ह
कि तू दइ सकत ह। आपन जवाबन क तइयार रखा ताकि तू
मोहसे तर्क कइ सक्या।

6परमेस्सर क समन्वा हम दुइनउँ एक जइसे अहइँ, अउर
हम दुइनउँ क ही उ माटी स बनाएस ह।

7अय्यूब, तू मोहसे जिन डेराअ। मइँ तोहरे संग कठोर न
होब।

8मुला अय्यूब, मइँ सुनेउँ ह कि तू जउन कहा करत ह।

9तू इ कहे रह्या, 'मइँ अय्यूब, दोखी नाहीं हउँ, मइँ पाप
नाहीं किहेउँ, या मइँ कछू भी अनुचित नाहीं करत हउँ।

10अगर मइँ कछू भी अनुचित नाहीं किहेउँ, तउ भी
परमेस्सर कछू खोट मोहमाँ पाएस ह। परमेसस्र सोचत ह कि
मइँ अय्यूब, ओकर दुस्मन हउँ।

11एह बरे परमेस्सर मोरे गोड़े मँ बेड़ी डावत ह, मइँ जउन
कछू भी करत हउँ, उ लखत रहत ह।'

12मुला अय्यूब, मइँ तोहका निहचय क संग बतावत हउँ
कि तू इ बारे मँ गैर मुनासिब अहा। काहेकि परमेस्सर
कउनो भी मनई स जियादा जानत ह।

13तू काहे सिकाइत करत अहा कि परमेस्सर तोहरे
इलजाम जवाब नाही देत ह?

14मुला परमेस्सर निहचय ही हर उ बात क जेका उ
करत ह स्पस्ट कइ देत ह। परमेस्सर अलग अलग रीति स
बोलत ह मुला लोग ओका समुझ नाहीं पउतेन।

15-16होइ सकत ह कि परमेस्स्सर सपन मँ लोगन क
काने मँ बोलत होइ, या कउनो दिब्यदर्सन मँ राति क जब उ

पचे आपन बिसतरा पइ गहिर निंदिया मँ होइँ। जब परमेस्सर
क चितउनियन सुनत हीं तउ बहोतइ डर जात हीं।
17परमेस्सर मनइयन क बुरी बात करइ स रोकइ क
होसियार करत ह, अउ ओनका अहंकारी बनवइ स रोकइ
क।
18परमेस्सर मनइयन क मउत क देस मँ जाइ स बचावइ
खातिर होसियार करत ह। परमेस्सर मनई क नास स बचावइ
बरे अइसा करत ह।
19कउनो मनई परमेस्सर क वाणी तब सुन सकत ह जब
उ बिस्तरे पइ ओलरा होइ अउर परमेस्सर क सजा स दुःख
भोगत होइ। उ मनई एँतनी गहिर पीरा मँ होता ह, कि
ओकर हाड़न दुःखत हीं।
20फुन अइसा मनई कछू खाइ नाहीं सकत, उ मनई क
एँतनी जियादा पीरा होत ह कि ओका सबन ते बढ़िया खइया
क नाहीं सोहात।
21ओकरे देहे क छय तब तलक होत जात ह, जब
तलक उ कंकाल मात्र नाहीं होइ जात, अउर ओकर सबइ
हाड़न नाहीं देखौंइ लग जातिन।
22अइसा मनई मउत क देस क निअरे होत ह, अउर
ओकर जिन्नगी मउत क निअरे होत ह।
23मुला होइ सकत ह कि कउनो सरगदूत, हजारन
सरगदूत मँ स एक होइ जउन ओकरे उत्तिम चरित्तर क
गवाही देइ।
24उ सरगदूत उ मनई पइ दयालु होइ, उ दूत परमेस्सर स
कहीः 'महरबानी कइ क इ मनई क मउत क देस स
बचा। एकर दाम चुकावइ क एक रस्ता मोका मिली गवा
अहइ।'
25फिन मनई क देह जवान अउ खूब मजबूत होइ जाइ।
उ मनई वइसा ही होइ जाइ जइसा उ तब रहा, जब उ जवान
रहा।
26उ मनई परमेस्सर क स्तुति करी अउर परमेस्सर
ओकरी स्तुति क जवाब देइ। फुन उ परमेस्सर क व्यक्तित्व
मँ खुसी खुसी आइ जाब। अउर उ बहोत खुस होइ काहेकि
परमेस्सर ओका ओकर ईमानदारी बरे बदला देहीं।
27फिन उ मनई मनइयन क समन्वा स्वीकार करी। उ
कहीः 'मइँ पाप किहे रहेउँ, भले क बुरा मइँ किहे रहेउँ,
मुला मोका एहसे का मिला!
28परमेस्सर मउत क देस मँ गिरइ स मोर आतिमा क
बचाएस। मइँ अउर जियादा जिअब अउर फुन स जिन्नगी क
रस लेब।'
29-30परमेस्सर मनई क संग ओका मउत क देस मँ
दाखिल होवइ स रोक कइ अइसा बार-बार करत ह। अइसा
मनई फिन जिन्नगी क रस लेत ह।
31अय्यूब, धियान द्या अउर मोर बात सुना। तू चुप रहा
अउर मोका कहइ द्या।
32अगर तोहार लगे कहइ बरे कछू अहइ तउ ओका
कहा काहेकि मइँ तोहका निर्दोख लखइ चाहत हउँ।
33अय्यूब, अगर तोहका कछू नाहीं कहइ क अहइ तउ
तू मोर बात सुना। चुप रहा, मइँ तोहका बुध्दिमान बनवइ
सिखाउबउँ।"

34 फिन एलीहू बात क जारी रखत भए कहेसः
2"अरे ओ गियानी मनइयो। तू पचे धियान स सुना
जउन बातन मइँ कहत हउँ। अरे ओ चतुर लोगो, मोह पइ
धियान द्या।
3कान ओन सबन्क परखत ह जेनका उ सुनत ह, जइसेन
जीभ जउने खइया क छुअति ह, ओकर सुआद पता करत
ह।
4तउ आवा इ परिस्थिति क परखा अउर खुद फइसला
करा कि उचित का बाटइ। हम संग संग सीखब कि का
खरा बाटइ।
5अय्यूब कहेसः 'मइँ निर्दोख हउँ; मुला परमेस्सर मोरे बरे
निस्पच्छ नाहीं अहइ।
6मइँ निरीह अहउँ मुला लोग सोचत हीं कि मइँ बुरा
अहउँ। उ पचे सोचत हीं कि मइँ एक झूठा हउँ अउर चाहे
मइँ निदौख भी होउँ फुन भी मोर घाव नाहीं भरि सकत।'
7अय्यूब क नाईं कउनो भी मनई नाहीं अहइ जेकर मुँह
परमेस्सर क निन्दा स भरा रहत ह। अय्यूब बरे परमेस्सर क
बेज्जती करइ मँ आसानी स पानी क पीवइ जइसा अहइ।
8अय्यूब बुरे लोगन क साथी अहइ अउर अय्यूब क बुरे
लोगन क संगत भावत ह।
9काहेकि अय्यूब कहत ह 'अगर कउनो मनई परमेस्सर
क हुकुम मानइ क जतन करत ह तउ एहसे उ मनई क
कछू भी भला न होइ।
10"अरे ओ लोगो जउन समुझ सकत ह्वा, तउ मोर बात
सुना, परमेस्सर कबहुँ भी बुरा नाहीं करत ह। सर्वसक्तीमान
परमेस्सर कबहुँ भी बुरा नाहीं करी।
11परमेस्सर मनई क ओकर कीन्ह करमन क फल देइ।
उ मनइयन क जउन मिलइ चाही, देइ।
12उ फुरइ अहइ परमेस्सर कबहुँ बुरा कारज नाहीं करत
ह। सर्वसक्तीसाली परमेस्सर सदा निस्पच्छ रही।
13कउनो इनसान ओका धरती क प्रभारी नाहीं बनाएस।
कउनो भी मनई ओका इ समूचइ जगत क जिम्मेदारी नाहीं
दिहस।
14अगर परमेस्सर ठान लेत तउ उ लोगन स जिन्नगी क
साँस लइ लेत ह।
15तउ धरती क सबहिं मनई मर जातेन, फिन सबहिं लोग
माटी बन जातेन।

16"अगर तू पचे विवेकी अहा तउ तू पचे ओका सुनब्या
जेका मइँ कहत हउँ।
17अइसा कउनो मनई जउन निआउ स घिना राखत ह
सासक नाहीं बन सकत ह। अय्यूब, का तू सोचत अहा कि
तू परमेस्सर क दोखी साबित कइ सकत अहइ?
18सिरिफ परमेस्सर अइसा अहइ जउन राजा लोगन स
कहत रहत ह कि 'तू पचे बेकार अहइ।' परमेस्सर नेता
लोगन स कहत रहत ह कि 'तू पचे दुस्ट अहा।'
19परमेस्सर प्रमुखन स दूसर मनइयन क अपेच्छा अधिक
पिरेम नाहीं करत, अउर परमेस्सर धन्नासेठन क अपेच्छा
गरीबन स जियादा पिरेम नाहीं करत ह। काहेकि सबहिं क
परमेस्सर रचेस ह।

20होइ सकत ह रात मँ अचानक कउनो मनई मरि जाइ।
परमेस्सर बहोत जल्दी ही लोगन क रोगी करत ह अउर उ
पचे प्राण तउ देत हीं। परमेस्सर बगइर कउनो जतन क
सक्तीसाली लोगन क उठाइ लइ जात ह।
21मनई जउन करत ह परमेस्सर ओका देखत ह। मनई
जउन भी चरण उठावत ह परमेस्सर ओका जानत ह।
22कउनो जगहिया अइसी अँधियारा नाहीं अहइ, चाहे उ
जगह कइसा भी अँधियारा होइ, जेह मँ कि कउनो भी दुस्ट
मनई अपने क परमेस्सर स छुपाइ पावइ।स
23कउनो मनई बरे इ उचित नाहीं कि उ परमेस्सर स
निआउ क अदालत मँ मिलइ क समइ निहचित करइ।
24परमेस्सर क प्रस्नन क पूछइ क जरुरत नाहीं, मुला
परमेस्सर बरिआरन क नस्ट करी अउर ओनकर जगह पइ
कउनो अउर क बइठाई।
25तउ परमेस्सर जानत ह कि लोग का कर हीं। एह बरे
परमेस्सर राति मँ दुस्टन क हराई, अउर ओनका नस्ट कइ
देइ।
26परमेस्सर बुरे लोगन क ओनके बुरे करमन क कारण
नस्ट कइ देइ अउर बुरे मनई क सजा क उ सब लखइ
देइ।
27काहेकि बुरे लोग परमेस्सर क आग्या मानइ क तजि
दिहेन अउर उ पचे बुरे लोग परवाह नाहीं करत हीं ओन
कामन क करइ क जेनका परमेस्सर चाहत ह।
28ओन बुरे लोग गरीबन क दु:ख दिहन अउर ओनका
मजबूर किहन परमेस्स क मदद बरे गोहरावइ क। गरीब
मदद बरे गोहरावत ह, तउ परमेस्सर ओकर सुनत ह।
29जब परमेस्सर खामोस रही क फइसला करत ह तउ
कउनो मनई परमेस्सर क दोखी नाहीं ठहराइ सकत ह।
अगर परमेस्सर आपना मुख छिपा लेत ह तउ कउनो भी
रास्ट्र या कउनो मनई ओका नाहीं पाइ सकत ह।
30तउ फुन एक ठु अइसा मनई अहइ जउन परमेस्सर क
खिलाफ अहइ अउर लोगन पइ जुलम करत ह। तउ
परमेस्सर ओका राजा बनइ नाहीं दइ सकत ह।
31होइ सकत ह कि कउनो परमेस्सर स कहइ, 'मइँ
अपराधी हउँ अउर फुन मइँ पाप नाहीं करब।
32हे परमेस्सर, तू मोका उ सबइ बातन सिखावा जउन मइँ
नाहीं जानत हउँ। अगर मइँ कछू बुरा किहेउँ तउ फुन, मइँ
ओका नाहीं करबउँ।'
33मुला अय्यूब, जब तू बदलइ क मना करत अहा, तउ
का परमेस्सर तोहका वइसा प्रतिफल देइ, जइसा तू चाहत
अहा? इ तोहार फइसला अहइ इ मोर नाहीं अहइ। तू ही
बतावा कि तू का सोचत अहा?
34कउनो भी मनई जेहमाँ विवेक अहइ अउर जउन
समझत ह उ मोरे संग सहमत होइ। कउनो भी विवेकवाला
मनई जउन मोर सुनत, उ कही,
35'अय्यूब, अबोध मनई क जइसी बातन करत अहा,
जउन बातन अय्यूब करत ह ओनमाँ कउनो सच्चाई नाहीं।'
36मोर इ इच्छा अहइ कि अय्यूब क परखइ क अउर
भी जियादा कस्ट दीन्ह जाइँ। काहेकि अय्यूब हमका अइसा
जवाब देत ह, जइसा कउनो दुस्ट मनई जवाब देत होइ।
37अय्यूब पाप पइ पाप किए जात ह अउर ओह पइ उ
बगावत किहेस। तोहरे ही समन्वा उ परमेस्सर क खिलाफ
बहोत सारे इलाजाम लगावत रहत ह।"

35 एलीहू कहत चला गवा। उ बोल।
2"अय्यूब, इ तोहरे बरे कहब उचित नाहीं कि
"मइँ अय्यूब, परमेस्सर क खिलाफ निआउ पइ हउँ।'
3अय्यूब, तू परमेस्सर स पूछत अहा, 'मनई परमेस्सर क
खुस कइके का पाई? अगर मइँ पाप न करउँ तउ मोका का
फायदा होइ?'
4अय्यूब, मइँ तोहका अउ तोहरे मीतन क जउन हिअँ
तोहरे संग अहइँ जवाब देइ चाहत हउँ।
5अय्यूब! ऊपर लख अकासे मँ निगाह उठाइके कि बादर
तोहसे जियादा ऊँचा अहइँ।
6अय्यूब, अगर तू पाप करा तउ परमेस्सर का कछू नाहीं
बिगड़त, अउर अगर तोहार पाप बहोत होइ जाइँ तउ ओहसे
परमेस्सर क कछू नाहीं बिगड़त।
7अय्यूब, अगर तू भला अहा तउ एहसे परमेस्सर क
भला नाहीं होत, तोहसे परमेस्सर क कछू नाहीं मिलत।
8अय्यूब, तोहार पाप खुद तोहरे जइसे मनई क नोस्कान
पहुँचावत ही, तोहार नीक करम बस तोहरे जइसे मनई क ही
भला करत हीं।
9अगर बुरे मनइयन क संग अनिआउ होत ह अउर बुरा
बेउहार कीन्ह जात ह, तउ उ पचे मदद क पुकारत हीं, उ
पचे बड़के बड़के बरिआर क मदद पावइ क दोहाइ देत हीं।
10मुला बुरे मनइयन परमेस्सर स मदद नाहीं माँगतेन। उ
पचे नाहीं कहत हीं, 'परमेस्सर जउन हमका रचेस ह उ कहाँ
बा? परमेस्सर हम लोगन क रात मँ गावइ बरे गीत देत ह।
11उ बुरे मनइयन इ नाहीं कहा करतेन कि, 'परमेस्सर
जउन गोरु अउ चिरइयन स जियादा बुध्दिमान मनई क
बनाएस ह उ कहाँ बा?'
12अगर बुरे लोग परमेस्सर क मदद पावइ क दुहाइ देत
हीं तउ परमेस्सर ओनका जवाब नाहीं देत ह। काहेकि उ पचे
बहोत घमंडी अउर बुरा होत हीं।
13इ सच अहइ कि परमेस्सर ओनकर बेकार क दुहाई क
नाहीं सुनी। सर्वसक्तीमान परमेस्सर ओनँ पइ धियान नाहीं देत।
14अय्यूब, इहइ तरह जब तू परमेस्सर क समन्वा आपन
मामला पइ बहस कइ बरे इन्तजार करत ह, अउर अगर तू
सिकायत करत ह कि उ तोहरे समन्वा प्रकट नाहीं होएह,
तउ परमेस्सर तोहका जवाब नाहीं देब्या।
15अय्यूब, तू सोचत अहा कि परमेस्सर दुस्टन क सजा
नाहीं देत ह अउर परमेस्सर पाप पइ धियान नाहीं देत ह।
16एह बरे अय्यूब आपन बेकार क बातन करत रहत ह।
अय्यूब बहोत बोलतह मुला उ नाहीं जानत कि उ का कहत
रहत ह।"

36 एलीहू बात जारी राखत भए कहेस।
2"अय्यूब, मोरे संग तनिक देर अउर धीरा धरा।
मइँ तोहका देखाँउब कि परमेस्सर क पच्छ मँ अबहिं कहइ
क अउर अहइ।

3मइँ आपन गियान क सब स बाँटब। मोका परमेस्सर रचेस ह। मइँ जउन कछू भी जानत हउँ मइँ ओकर प्रयोग तोहका इ देखाँवइ बरे करब कि परमेस्सर निस्पच्छ अहइ।

4अय्यूब, मइँ तोहका फुरइ कहत हउँ कि मइँ झूट नाहीं कहत हउँ। मइँ जानत कि मइँ का बात करत हउँ।

5परमेस्सर महान अहइ मुला उ आम लोगन क तुच्छ नाहीं समुझत ह। परमेस्सर बहोत सामर्थी बाटइ अउ विवेक स पूर्ण बाटइ।

6परमेस्सर दुट्ठ लोगन क जिअइ नाहीं देइ अउर परमेस्सर हमेसा गरीब लोगन क संग खरा बेउहार करत ह।

7उ सबइ लोग जउन मुनासिब बेउहार करत हीं, परमेस्सर ओनकर धियान राखत ह। उ राजा लोगन क संग ओनका सिंहासन देत ह अउर उ पचे सदा आदर पावत हीं।

8मुला अगर लोग सजा पावत होइँ अउर अउर बेड़ियन मँ जकरि गवा होइँ। अगर उ पचे पीरा भोगत रहत होइँ अउर संकटे मँ होइँ।

9तउ परमेस्सर ओनका बताई कि उ पचे कउन सा बुरा करम किहेन ह। परमेस्सर ओनका बताई कि उ पचे पाप किहेन ह अउर उ पचे अहंकारी रहेन।

10परमेस्सर ओनका ओकर चिताउनी सुनइ क मजबूर करी। उ ओनका पाप करइ स रोकइ खातिर आदेस देइ।

11जदि लोग परमेस्सर क सुनिहीं अउर ओकर अनुसरण करिहीं तउ परमेस्सर ओनका खुसहाल दिन आनन्दित बरिस देब्या।

12मुला अगर उ पचे परमेस्सर क आग्या क नकारिहीं तउ उ पचे बिना जाने ही मउत क दुनिया मँ चला जइहीं।

13अइसे लोग जेनका परमेस्सर क परवाह नाहीं अहइ उ पचे सदा कड़ुवाहट स भरा रहत हीं। हिऔं तलक कि जब परमेस्सर ओनका सजा देत ह, उ पचे परमेस्सर स सहारा पावइ क विनती नाहीं करतेन।

14अइसे लोग जवान होत ही मरि जइहीं। उ पचे भ्रस्ट लोगन क संग सर्म स मरिहीं।

15मुला परमेस्सर दुखित लोगन क बचाब। परमेस्सर लोगन क जगावइ बरे विपत्ति पठवत ह ताकि लोग ओकर सुनइँ।

16सचमुच मँ परमेस्सर तोहार दुख-मुसीबत मँ तोहार मदद करइ चाहत ह। उ तोहार बोझन क दूर करइ चाहत ह जउन तोहका कुचरत ह। उ तोहार मेजे पइ भरपूर खइया रखइ चाहत ह।

17किन्तु तू दोख, निर्णय अउर निआव क बातन स भरा भवा अहा!

18अय्यूब, तू आपन किरोध क परमेस्सर बरे संका क कारण जिन बना द्या। मुक्ति क बडा मूल्य तोहका राह स दूर भटकावइ क कारण जिन बना द्या।

19तू इ जान ल्या कि न तउ अब तोहार समूचा धन अउर न ही तोहार सक्ती तोहार मदद कइ सकत ह।

20तू राति क अवाई क इच्छा जिन करा। जब लोग आपन ठउरन स गाइब हो जात ह।

21अय्यूब, बुरा करम करइ स तू होसियार रहा। तोह पइ मुसीबतन पठइ गइ अहइँ ताकि तू पापे क ग्रहण न करा।

22लखा, परमेस्सर क सक्ती ओका महान बनावत ह। परमेस्सर सबहिं स महानतम सिच्छक अहइ।

23कउनो भी मनई परमेस्सर स नाहीं कह सकत ह कि का करब। कउनो भी परमेस्सर स नाहीं कहि सकत, 'परमेस्सर तू बुरा किहा ह।'

24परमेस्सर क कर्मन क बड़कइ करब तू जिन बिसरा। लोग गीत गाइके परमेस्सर क सबइ काम क बड़कइ किहेन ह।

25परमेस्सर क करम क हर कउनो मनई लखि सकत ह। दूर देसन क लोग ओन कर्मन क लखि सकत हीं।

26इ फुरइ अहइ कि परमेस्स महान अहइ। ओकरी महिमा क हम नाहीं समुझ सकित ह। परमेस्सर क उमर क बरिसन क गनती क कउनो गन नाहीं सकत।

27परमेस्सर पानी क धरती स ऊपर उठावत ह अउर ओका बर्खा अउ कुहरा क रुप मँ बदल देत ह।

28परमेस्सर बादरन स लोगन पइ भरपूर पानी बरसावत ह।

29का कउनो मनइ इ ब्यान कइ सकत ह कि परमेस्सर कइसे बादरन क फैलावत ह, या ओकर घर, आकास मँ बिजुरि क गरज क समझ सकत ह?

30लखा, परमेस्सर कइसे आपन बिजुरी क अकासे मँ चारिहुँ कइँती बिखेरत ह अउर कइसे समुझदर क गहिरे हींसा क ढाँपि लेत ह।

31परमेस्सर रास्ट्रन क नियंत्रण मँ रखइ अउर ओनका भरपूर भोजन देइ बरे एन बादरन क उपयोग करत ह।

32परमेस्सर आपन हाथे स बिजरी क पकरि लेत ह अउर जहाँ, उ चाहत ह, हुआँ बिजुरी क गिरइ क हुकुम देत ह।

33गर्जन लोगन क तूफाने क अवाई क चिताउनी देत ह। इ गर्जन दिखावत ह कि इ दुस्टता क खिलाफ किरोध मँ अहइ।

37 "हे अय्यूब, जब एँन बातन क बारे मँ मइँ सोचत हउँ, मोर हिरदइ बड़े जोर स धक धक करत ह।

2हर कउनो सुनइ, परमेस्सर क वाणी बादर क गर्जन जइसी सुनाई देत ह। अनका गरजत भी ध्वनि क जउन परमेस्सर क मुँहे स आवति अहइ।

3परमेस्सर आपन बिजुरी क सारे अकासे स होइके चमकइ क पठवत ह। उ सारी धरती क ऊपर चमका करत ह।

4बिजुरी क कौंधइ क पाछे परमेस्सर क गर्जन भरी वाणी क सुना जाइ सकत ह। परमेस्सर आपन अद्भुत वाणी क संग गरजत ह। जब परमेस्सर क वाणी गरजत ह तउ बिजुरी कौंधत ह तब।

5परमेस्सर क गरजत भइ वाणी अद्भुत अहइ। उ अइसे बड़े करम करत ह, जेनका हम समुझ नाहीं पावत अही।

6परमेस्सर बर्फ क हुकुम देत ह, 'तू धरती पइ गिरा' अउर परमेस्सर बर्खा स कहत ह 'तू धरती पइ जोर स बरसा।'

7परमेस्सर अइसा एह बरे कहत ह कि सबहिं मनई जेनका उ बनाएस ह जान लेइ कि उ का कइ सकत ह। उ ओकर प्रमाण अहइ।

8पसु आपन खोहन मँ पराइ जात हीं, अउर हुआँ ठहरा रहत हीं।

9ओनका कमरन स आँधी आवत हीं, अउ हवा सर्दि मोसम लियावत ह।

10परमेस्सर क साँस बर्फ बनवत ह, अउर समुद्दरन क जमाइ देत ह।

11परमेस्सर बादरन क जल स भरा करत ह, अउ बिजुरी क बादर क जरिये बिखेर देत ह।

12परमेस्सर बादरन क चारिहुँ कइँती मोड़ देत ह ताकि उ पचे उहइ कइ सकइ जेका उ ओनका करइ क हुकुम दिहेस ह उ पचे पुरी धरती पइ छाइ जात ह।

13परमेस्सर लोगन क सजा देइ बरे कबहुँ बाढ़ लिआवत ह। कबहुँ आपन सहानुभूती देखावइ बरे बादरन क पठवत ह अउर धरती पइ पानी बरसावत ह।

14अय्यूब, तू छिन बरे रुका अउ सुना। रुक जा अउ सोचा ओन अद्भुत कारजन क बारे मँ जेनका परमेस्सर किया करत ह।

15अय्यूब, का तू जानत अहा कि परमेस्सर बादरन पइ कइसे काबू राखत ह? का तू जानत ह कि परमेस्सर आपन बिजुरी क काहे चमकावत ह?

16का तू जानत ह कि आकास मँ बादर कइसे लटका रहत हीं। इ सबइ बादरन एक ठु उदाहरण अहइँ। परमेस्सर क गियान संपूर्ण अहइ अउर इ सबइ बादर परमेस्सर क अद्भुत कारज अहइँ।

17मुला अय्यूब, तू इ सबइ बातन क नाहीं जानत ह। तू बस एँतना जानत अहा कि तोहका पसीना आवत ह अउर तोहार ओढ़ना तोहसे चिपका रहत हीं जब सब कछू आराम करत रहत होत ह अउर दक्खिन स गरम हवा बहत ह।

18अय्यूब, का तू परमेस्सर क मदद आकस मण्डल क तानइ मँ अउर ओका झलकत भए दर्पण क नाई चमकावइ मँ कइ सकत अहा?

19अय्यूब, हमका बतावा कि हम परमेस्सर स का कही? हम ओसे कछू भी कहइ क सोच नाहीं पाइत काहेकि हम पर्याप्त कछू भी नाहीं जानित।

20का परमेस्सर क बतावा जाइ कि मइँ ओकरे खिलाफ बोलइ चाहत हउँ। इ वइसे ही होइ जइसे आपन विनास माँगब।

21लखा, कउनो भी मनई चमकत भए सूरज क नाहीं लख सकत ह। जब हवा बादरन क उड़ाइ देत ह ओकरे पाछे उ बहोतइ उज्जवर अउ चमचमात भवा होत ह।

22अउ परमेस्सर भी ओकरे समान अहइ। परमेस्सर क सुनहरी महिमा चमकत ह। परमेस्सर अद्भुत महिमा क संग उत्तर कइँती स आवत ह।

23सर्वसक्तीमान परमेस्सर सचमुच महान अहइ, हम परमेस्सर क नाहीं जान सकित। परमेस्सर सदा ही लोगन क संग निआउ, अउ निस्पच्छ होइके बेउहार करत ह। उ कउनो लोग क संग ना इनसाफी क संग पीड़ा नाहीं देत ह। 24एह बरे लोग परमेस्सर क आदर करत हीं, मुला परमेस्सर ओन अभिमानी लोगन क आदर नाहीं देत ह जउन खुद क बुध्दिमान समुझत हीं।"

परमेस्सर अय्यूब स बोलत ह

38 फिन यहोवा बौडंर मँ स अय्यूब क जवाब दिहस। परमेस्सर कहेस।

2"इ कउन मनई अहइ जउन मूर्खता स भरी भइ बातन करत अहइ?"

3अय्यूब, तू मनई क तरह सुदृढ़ बना। जउन सवात मइँ पूछउँ ओकर जवाब देइ क तइयार होइ जा।

4अय्यूब, बतावा तू कहाँ रह्या, जब मइँ भुइँया क रचना किहे रहेउँ? अगर तू एँतना समुझदार अहा तउ मोका जवाब द्या।

5अय्यूब, अगर तू एँतना हाज़िर जवाब अहा तउ मोका बता कि इ संसारे क विस्तार कउन तय किहेस? कउन इ संसार क नापइ वाला सूत स नापेस?

6इ पृथ्वी क नींव काहे पइ धरी गइ अहइ? कउन पृथ्वी क नीवं क रुप मँ सवन त जियादा महत्व क पाथर क धरेस ह?

7जब परमेस्सर अइसा करत रहेन तउ भोर क तारन एक संग खुस होइके गाना गाएन। अउर सरगदूतन खुस होइके चिल्ला उठेन।

8अय्यूब, जब सागर धरती क गरम स फूट बहत निकरा, तउ कउन ओका रोकइ बरे दुआर क बँद किहे रहा।

9उ समइ मइँ बादरन स समुद्दर क ढाँपि दिहेउँ अउ अँधियारा मँ सागर क लपेट दिहे रहेउँ (जइसे गदेला क चादर मँ लपेटा जात ह।)

10"सागर क चउहद्दी मइँ निहचित किहे रहेउँ अउर ओहमाँ ताला डाइके दुआरन क पाछे रख दिहे रहेउँ।

11मइँ समुद्दरे स कहेउँ, 'तू हिआँ तलक आइ सकत ह मुला अउर जियादा आगो नाहीं। तोहार घमण्डी लहरन हिआँ पइ रुकि जइहीं।'

12अय्यूब, का तू कबहुँ आपन जिन्नगी मँ भोर क हुकुम दिहा ह निकरि आवइ अउर दिन क सुरु करइ क?

13अय्यूब, का तू कबहुँ भिन्सारे क प्रकास क धरती पइ छाइ जाइ क कह्या ह अउर का कबहुँ ओहसे दुस्टन क लुकाइ क जगाहिया क तजि देइ क मजबूर करइ क कह्या ह?

14जब भिंसारे क प्रकास धरती पइ पड़त ह तउ धरती क रूप व आकृति अइसा प्रगट होत ह जइसे नरम मिट्टी क मुहर स दबाइ स होत ह। एकर रूप रेखा ओढ़नन क सलवटन क नाईं उभरत ह।

15दुट्ठ लोगन स प्रकास लइ लीन्हा गवा ह। नीक अउर ओन बाजूअन क जउन कि उ पचे बुरा करम करइ बरे उठाएस तोड़ दीन्हा ग रहेन।

16अय्यूब, बतावा का तू कबहुँ सागर क गहिर तहे मँ गवा अहा जहाँ स सुरु होत ह? का तू कबहुँ सागर क स्रितों पइ चला अहा?

17अय्यूब, का तू कबहुँ उ फाटकन क लख्या ह, जउन मउते क लोक क लइ जात हीं? का तू कबहुँ ओन फाटकन क लख्या जउन मउत क अँधियर जगह क लइ जात हीं?

18अय्यूब, तू जानत अहा कि इ धरती केतँनी बड़ी अहइ?
तू मोका बतावा अउर तू इ सब कछू जानत अहा।
19अय्यूब, प्रकास कहाँ स आवत अहइ? अउर अँधियारा
कहा स आवत ह?
20अय्यूब, का तू प्रकास अउ अँधियारा क अइसी जगह
लइ जाइ सकत ह जहाँ स उ सबइ आए होइँ? जहाँ उ सबइ
रहत हीं हुआँ पइ जाइ क मारग का तू जानत अहा?
21अय्यूब, मोका निहचय अहइ कि तोहका सारी बातन
मालूम अहइँ काहेकि तू बहोत ही बूढ़ा अहा। जब वस्तुअन
क रचना भइ रही तब तू हुआँ रह्या।
22अय्यूब, का तू कबहुँ ओन भण्डार क कोठरियन मँ
गना अहा जहाँ मइँ बरफ अउ ओलन क धरा करत हउँ?
23मइँ बरफ अउ ओलन क विपत्ति क समइ मँ अउ
जुद्ध अउर लड़ाई क समइ मँ उपयोग करइ बरे बचाए
राखत हउँ।
24अय्यूब, का तू कबहुँ अइसी जगह गवा अहा, जहाँ स
सूरज उगत ह अउ जहाँ स पुरवइया सारी धरती पइ छाइ
जाइ बरे आवत ह?
25अय्यूब, भारी बर्खा बरे अकास मँ कउन नहर खोदेस
ह, अउर कउन गरजनवाले बिजली क रस्ता बनाएस ह?
26अय्यूब, कउन हुआँ भी पानी बरसाएस, जहाँ कउनो भी
नाहीं रहत ह?
27उ बर्खा उ खानी भुइँया क खूब देर क पानी देत ह
अउ घास जामब सुरु होइ जात ह।
28अय्यूब, का बर्खा क कउनो बाप अहइ? ओस क
बूँदन क कउन बनावत अहइ?
29अय्यूब, बरफ क महतारी कउन अहइ? आकास क
पाला क कउन पइदा करत ह?
30पानी जमिके चट्टान जइसा कठोर बन जात ह, अउर
सागर क ऊपर क सतह जम जावा करत ह।
31अय्यूब, सप्तर्षि तारन क का तू बाँध सकत ह? का तू
मिरगसरा का बन्धन खोल सकत ह?
32अय्यूब, का तू तारा समूहन (कहकसाँ) क ठीक वेला
पइ निकार सकत ह? का तू भालू क ओकरे बच्चन क संग
अगुअइ कइ सकत ह?
33का तू ओन नेमन क जानत ह, जउन नभ पइ सासन
करत हीं? का तू ओन नेमन क धरती पइ लागू कइ
सकत ह?
34अय्यूब, का तू गोहराइके बादरन क आदेस दइ सकत
ह, कि उ पचे भारी बर्खा क साथ घेरि लेइँ।
35अय्यूब बतावा, का तू बिजुली क जहाँ चाहत्या पठइ
सकत अहा? अउर का तोहरे निअरे आइके बिजुरी कही
अय्यूब, 'हम हिआँ अही बतावा तू का चाहत ह?'
36मनई क मन मँ विवेक क कउन राखत ह? लोगन क
चिजियन क समझइ बरे छमता कउन देत ह?
37अय्यूब, कउन आपन बुद्धि स बादरन क गनेस
ह? कउन आकास क पानी क चाम थेले क उंडेल
सकत ह?
38बर्खी धूरि क कीचंड़ बनाइ देत ह अउर माटी क लौंदा
आपुस मँ चिपक जात हीं।
39अय्यूब, का तू सिंह क आहार पाइ सकत ह? का तू
मुखान सेरनी क बच्चन क पेट भरि सकत ह?
40उ सबइ सेर आपन खोहन मँ पड़ा रहत हीं अउर
सिकार बरे झाड़ी मँ दुबक क घात लगनवइ बरे बइठा रहत
हीं।
41अय्यूब, कउआ क कबेला चारा पाए बगइर एहर
ओहर भटकत भए परमेस्सर क दुहाइ देत हीं। कउन
ओनका चारा देत ह?

39 "अय्यूब, का तू जानत अहा कि कब पहाड़ी
बोकरियन बियात हीं? का तू कबहुँ लख्या जब
हिरणी बियात ह?
2अय्यूब, का तू जानत ह पहाड़ी बोकरियन अउ महतारी
हरिणियन केतँनी महीने आपन बच्चन क गर्भ मँ राखत हीं?
का तोहका पता अहइ कि ओनकर बियाइ क उचित समइ
का अहइ?
3का तू जानत ह क उ पचे बच्चा क जनम दइ बरे कब
झुकत ह। का तू जानत ह कि उ पचे आपन बच्चन क
कब जनम देत ह।
4पहाड़ी बोकरियन अउर हरिणी महतारी क बच्चन खेतन
मँ हट्टा कट्टा होइ जात हीं। फुन उ पचे आपन महतारी क
तजि देत हीं, अउर फुन लउटिके वापस नाहीं अउतेन।
5अय्यूब, जंगली गदहन क कउन अजाद छोड़ देत ह?
कउन ओनकर रस्सन क खोलेस अउर ओनका बन्धन स
अजाद किहस?
6इ मइँ परमेस्सर हउँ जउन बनेर गदहा क घर क रुप मँ
रेगिस्तान दिहेउँ। मइँ ओनका रहइ बरे उजाड़ धरती दिहेउँ।
7बनेर गदहा सोर स भरा भवा सहरन क लगे नाहीं जात
ह अउर कउनो भी मनई ओका काम करवावइ बरे नाहीं
साधत ह।
8बनेर गदहन पहाड़न मँ घूमत हीं अउर उ पचे हुअँइ
घास चरत रहत हीं। उ पचे हुअँइ पर हरिअर घास चरइ क
हेरत रहत हीं।
9अय्यूब, बतावा, का कउनो जंगली साँड़ तोहरी सेवा बरे
राजी होइ? का उ तोहरे चरही मँ राति क रुकी?
10अय्यूब, का तू जंगली बर्धा पइ जुआ रख कइ आपन
खेत जोतँवाइ सकत ह? का घाटी क तोहरे वास्ते जोतँइ बरे
उ पचन पइ जुआ रखइ जाब्या?
11जंगली साँड़ बहोत मजबूत होत ह। मुला का तू आपन
काम करइ बरे ओन पइ भरोसा कइ सकत ह?
12का तू ओह पइ भरोसा कइ सकत ह कि उ तोहार
अनाज बटोरइ अउर ओका दाँवइ माँड़इ* क खरिहाने मँ
लिआवइ।
13सुतुरमुर्ग जब खुस होत ह उ आपन पंख फड़फड़ावत
ह। मुला ओकर पंख सारस क पंख जइसे नाहीं होतेन।
14मादा सुतुरमुर्ग धरती पइ अण्डा देत ह। सबइ अण्डा
रेत मँ गरम होइ जात ह।

दाँवइ माँहइ खेले क काठे क पाछे झुरान दाना ओर पउधा क खरिहाने मँ लिआवइ क बाद दाना क घिलका स अलग कीन्ह जात ह। पिटना सा या बर्धा क वँर्धा क मँड़ाइ अउ दवाँइ कीन्ह जात ह।

15मुला सुतुरमुर्ग बिसरि जात ह कि कउनो ओकरे अण्डन
पइ चलिके कुचर सकत ह, या कउनो बनेर पसु ओनका
तोड़ सकत ह।
16मादा सुतुरमुर्ग आपन नान्ह बच्चन पइ कठोर होइ जात
ह जइसे उ पचे ओकर बच्चन नाहीं अहइँ। अगर ओकर
बच्चन मरि भी जाइँ तउ भी ओका चिन्ता नाहीं होत ह,
अउर ओकर सब काम अकारथ होत ह।
17परमेस्सर सुतुरमुर्ग क विवेक नाहिं दिहस, अउर उ
ओका कउनो समझदारी नाहीं दिहस ह।
18मुला जब सुतुरमुर्ग दउड़इ क उठत ह तब उ घोड़न
अउ ओकरे सवार पइ हँसत ह।
19अय्यूब, बतावा का तू घोड़न क बल दिहा अउर का तू
ही ओकर गटई पइ फहराती अयाल जमाया ह?
20अय्यूब, बतावा जइसे टिड्डी कूद जात ह का तू वइसे
घोड़ा क कुदाया ह? घोड़ा ऊँची अवाजे मँ हिनहिनात ह अउर
लोग डेराइ जात हीं।
21घोड़ा घुस अहइ कि उ बहोत बलवान बाटइ अउर
आपन खुरे स धरती क खनत रहत ह। जुद्ध मँ जात भवा
घोड़ा तेज दौड़ जात ह।
22घोड़ा डरे क हँसी उड़ावत ह काहेकि उ कबहुँ नाहीं
डेरात। घोड़ा कबहुँ भी जुद्ध स मुँह नाहीं मोड़त ह।
23घोड़ा क बगल मँ तरकस थिरकत रहत हीं। घोड़सवारन
क भालन अउ हथियार धूपे मँ चमचमात रहत हीं।
24घोड़ा बहोत उत्तेजित अहइ, मैदान पइ उ तेज चाल स
दउड़त ह। घोड़ा जब बिगुल क आवाज सुनत ह तब उ
सान्त खड़ा नाहीं रहि सकत।
25बिगुल क ध्वनी पइ घोड़ा हिन हिनावत ह। उ बहोत
ही दूर स जुद्ध क सूँघ लेत ह। उ सेना क सनापती क
आदेस अउर जुद्धा क हाहाकार अउ जयजकार क सुन लेत
ह।
26अय्यूब, का तू बाज क सिखाया आपन पखनन क
फइलाउब अउर दक्खिन कइँती उड़ि जाब।
27अय्यूब, का तू उकाब क उड़इ क अउर ऊँच पहाड़न
मँ आपन झोंझ बनावइ क आग्या देत ह?
28उकाब चट्टाने पइ रहा करत ह। ओकर किला चट्टान
होत ह।
29उकाब किला स आपन सिकार पइ निगाह राखत ह। उ
बहोत दूर स आपन सिकार क लखि लेत ह।
30गिद्ध क बच्चन लहू चाटा करत हीं। जहाँ भी ल्हासन
पड़ा होत हीं हुवाँ गिद्ध बटुर जात हीं।"

40 यहोवा अय्यूब स कहत ह:
2"अय्यूब तू सर्वसक्तीमान परमेस्सर स तर्क किहा।
तू मोर निन्दा किहस। अब तोहका जवाब दइ चाही।"
3एह पइ अय्यूब जवाब देत भए परमेस्सर स कहेस:
4"मइँ तउ कछू कहइ बरे बहोत ही तुच्छ हउँ। मइँ
तोहसे का कहि सकत हउँ? मइँ आपन हाथ आपन मुँहे पइ
रख लेब।
5मइँ एक दाईं कहेउँ मुला अब मइँ जवाब नाहीं देबउँ।
फुन मइँ दुबारा कहेउँ मुला अब अउर कछू नाहीं बोलब।"
6एकरे पाछे यहोवा आँधी मँ बोलत भए अय्यूब स
कहेस।
7अय्यूब, तू मनई क तरह तइयार होइ ज। मइँ तोहसे
कछू सवाल पूँछब अउर तू ओन सवालन क जवाब मोका
देब्या।
8अय्यूब का तू सोचत अहा कि मइँ निआउ स पूरा नाहीं
हउँ। का तू मोका बुरा काम करइ क दोखी मानत अहा
ताकि तू इ देखाँइ सका कि तू उचित अहा?
9अय्यूब, बतावा का मोर सस्त्र एँतना सक्तीसाली अहइँ
जेतँना कि मोर (परमेस्सर) सस्त्र अहइँ!? का तू आपन वाणी
क ओतँना ऊँच गरजिके बोल सकत ह जेतँना मोर वाणी
अहइ!?
10अगर तू वइसा कइ सकत ह तउ तू खुद क आदर
अउर महिमा द्या अउ ओढ़ना क तरह वफादारी क सान क
ओढ़ ल्या।
11अय्यूब, अगर तू मोरे समान अहा, तउ अभिमानी
लोगन स घिना करा। अय्यूब, तू ओन अहंकारी लोगन पइ
आपन किरोध बरसावा अउ तू ओनका विनम्र बनाइ द्या।
12हाँ, अय्यूब, ओन अहंकारी लोगन क लखा अउर तू
ओनका विनम्र बनाइ द्या। ओन दुस्टन क तू कुचर द्या जहाँ
भी उ पचे खड़ा होइँ।
13तू सबहिं घमण्डियन क माटी मँ गाड़ द्या अउर
ओनकइ देहन पइ कफन लपेटिके तू कब्रन मँ धइ द्या।
14अय्यूब, अगर तू एँन सबइ बातन क कइ सकत ह
तउ मइँ तहार परसंसा लरब काहेकि तू खुद क बचाइ सकत
ह।
15अय्यूब, लखा मइँ उ बहमोथ (जलगजे)* क
पैदा किहउँ। अउर उ मइँ ही ह जउन तोहका बनाएउँ
ह। उ बहमोथ उहइ तरह घास खात ह, जइसे गइया घास
खात ह।
16बहमोथ क बदन मँ बहोत ताकत होत ह। ओकरे पेटे
क माँसपेसियन बहोत ताकतवर होत हीं।
17बहमोथ क पूँछ मजबूत अइसी होत ह जइसे देवदार क
बृच्छ खड़ा रहत ह। ओकरे गोड़े क माँसपेसियन बहोत
मजबूत होत हीं।
18बहमोथ क हाड़न काँसा क तरह मजबूत होत हीं, अउर
गोड़ ओकरे लोहे क ढूड़न जइसे।
19बहमोथ महानतम पसु अहइ जेका मइँ बनाएउँ ह।
हिआँ तलक कि ओकर सिरजनहार भी ओका लगे तरवार
लइ क जात ह।
20बहमोथ ओन घासे क खात ह जउन पहाड़े पइ उपजत
ह जहाँ बनेर पसु खेलत हीं।
21बहमोथ कमल क पउधन क नीचे सोवत रहत ह अउ
कीचंड़ मँ सरकण्डन क आड़ मँ छुपा रहत ह।
22कमल क पउधन बहमोथ क आपन छाया मँ छिपावत
हीं। उ बेंत क पेड़न क खाले रहत ह, जउन नदी क निचके
उगत हीं।

बहमोथ (जलगजे) इ स्पसट नाहीं अहइ कि इ कउन तरह क
जानेबर अहइ। होइ सकत ह कि इ दरियाइ घोड़ा अहइ या हाथी।

23अगर नदी मँ बाढ़ आइ जाइ तउ भी जलगज परात
नाहीं ह। अगइ यरदन नदी भी ओकरे मुँहे पइ थपड़ियावइ
तउ भी उ डेरात नाहीं ह।
24बहमोथ क कउनो भी हुक लगाइ क नाहीं पकड़
सकत ह। कउनो भी ओका जाली मँ नाहीं फँसाइ सकत।

अय्यूब क यहोवा बरे जवाब

41 "अय्यूब, बतावा, का तू लिब्यातान क कउनो मछरी
क काँटा स धइ सकत ह? का तू एकर जिभ क
रस्सी स बंध सकत ह?
2अय्यूब, का तू लिव्यातान क नाक मँ नकेल डाइ सकत
ह? या ओकरे जबड़न मँ काँटा फँसाइ सकत ह?
3अय्यूब, का तू लिव्यातान क अजाद होइके बरे तोहसे
बिनती करी? का उ तोहसे मीठी मीठी बातन करी?
4अय्यूब, का लिब्यातान तोहसे सन्धि करी अउर सदा
तोहरी सेवा क तोहका वचन देइ?
5अय्यूब, का तू लिब्यातान क वइसे ही खेलब्या जइसे तू
कउनो चिड़िया स खेलत ह? का तू ओका रस्सा स बँधब्या
जेहसे तोहार दासियन ओहसे खेल सकइँ।
6अय्यूब, का तू मछुआरा लिब्यातान क तोहसे बेसहइ क
कोसिस करिहीं? का उ पचे ओका कटिहीं अउर ओनका
बइपारियन क हाथे बेचि सकिहीं?
7अय्यूब, का तू लिब्यातान क खाल मँ अउर माथे पइ
भाला फेंक हमला कइ सकत ह?
8अय्यूब, लिब्यातान पइ अगर तू हाथ डावा तउ जउन
भयंकर जुद्ध होइ, तू कबहुँ भी बिसारि नाहीं पउब्या अउर
फुन तू ओहसे कबहुँ जुद्ध न करब्या।
9अउर अगर तू सोचत ह कि तू लिब्यातान क पकड़
सकत ह, तउ इ बात क तू भूल जा। काहेकि ओका पकड़इ
बरे कउनो आसा नाहीं अहइ। तू तो बस ओका लखइ भर
स ही डेराइ जाब्या।
10कउनो भी एतना वीर नाहीं अहइ, जउन लिब्यातान क
जगाइके भड़कावइ। तउ फुन अय्यूब बतावा, मोरे विरोध मँ
कउन टिक सकत ह?
11कउनो भी मनई जउन कि मोहे स मुकाबला करब उ
सुउच्छित नाहीं रब्या। सारे अकासे क खाले जउन कछू भी
अहइ, उ सब कछू मोर ही अहइ।
12अय्यूब, मइँ तोहका लिब्यातान क सक्ती क बारे मँ
बताउब। मइँ ओकर सक्ती अउर ओकरे रुप क सोभा क
बारे मँ बताउब।
13कउनो भी मनई ओकर बाहरी आवरण(खाल) क भेद
नाहीं सकत। ओकर खाल दोहरी कवच क नाईं अहइ।
14लिव्यातान क कउनो भी मनई मुँह खोलइ बरे मजबूर
नाहीं कइ सकत ह। ओकरे जबड़े क दाँत सबहिं क भयभीत
करत हीं।
15लिव्यातान क पिठिया पइ ढालन क कतार होत हीं,
जउन आपुस मँ स जुड़ी होत हीं।
16इ सबइ ढालन आपुस मँ एँतनी सटी होत हीं कि हवा
तलक ओहमाँ प्रवेस नाहीं कइ पावत ह।
17इ सबइ ढालन एक दूसर स जुड़ी होत हीं। उ सबइ
मजबूती स एक दुसरे स जुड़ी भई अहइ कि कउनो भी
ओनका उखाड़िके अलग नाहीं कइ सकत।
18लिव्यातान जब छींकत ह तउ अइसा लागत ह जइसे
बिजली सी कौधं गइ होइ। आँखी ओकर अइसी चमकत हीं
जइसे कउनो तेज प्रकास होइ।
19ओकरे मुँहना स बरत भइ मसाल निकरत हीं, अउर
ओहसे आगी क चिनगारियन बिखत हीं।
20लिब्यातान क नथुनन स धुआँ अइसा निकरत ह, जइसे
उबलत भइ हाँड़ी स भाप निकलत होइ।
21लिब्यातान क फूँक स कोयला सुलग उठत हीं अउर
ओकरे मुँहे स लपक निकरत हीं।
22लिब्यातान क गटई बड़ी जबरदस्त अहइ, अउर लोग
ओसे उरिके दूर पराइ जात हीं।
23ओकरे खाल मँ कहीं भी कोमल जगह नाहीं अहइ। उ
लोहा क तरह कठोर अहइ।
24लिब्यातान क हिरदइ चट्टान क तरह होत ह। ओकर
हिरदइ चक्की क नीचे क पाट क तरह सख्त अहइ।
25लिब्यातान स सरगदूत भी डर जात हीं। लिब्यातान जब
पूँछ फटकारत ह, तउ ओन सबइ भाग जात हीं।
26लिव्यातार पइ जइसे ही भालन, तीर अउ तरवार पड़त
हीं उ सबइ उछरिके दूर होइ जात हीं।
27लोहा क मोटी छड़न क उ तिनका जइसा अउर काँसा
क सड़ी लकड़ी क तरह तोड़ देत ह।
28बाण लिव्यातान क नाहीं भगाइ पावत हीं। ओह पइ
पाथर फेंकना, एक सुखा तिन्का फेंकन क नाईं अहइ।
29लिब्यातान पइ जब मुगदर पड़त ह तउ ओका अइसा
लागत ह माना उ कउनो बिनका होइ। जब लोग ओह पइ
भालन फेंकत हीं, तब उ हँसा करत ह।
30विब्यातान क पेट क नीचे सिरा टूटा भए मट्टी क
बासन क नाईं तेज अहइ। जब उ चलत ह तउ कीचड़ मँ
अइसा निसान छोड़त ह माना कि खेतन मँ हेगां लगावा गवा
होइ।
31लिब्यातान पानी क अइसे मथत ह, माना कउनो हाड़न
उबलत होइँ। उ अइसे बुलबुले बनावत ह माना बासन मँ
खउलत भवा तेल होइ।
32लिब्यातान जब सागर मँ तैरत ह तउ आपन पीछे उ
सफेद झागन जइसी राह छोड़त ह, जइसे कउनो उज्जर बारे
क सफेद बिसाल पूँछ होइ।
33लिब्यातान सा कउनो अउर जन्तु धरती पइ नाहीं अहइ।
उ अइसा पसु अहइ जेका निडर बनावा गवा।
34उ हर एक घमण्डी जानेबर क ऊपर नजर रखत ह।
सबहिं जंगली पसुअन क उ राजा अहइ।"

अय्यूब क यहोवा क जवाब

42 एँह पइ अय्यूब यहोवा क जवाब देत भए कहेस।
2"यहोवा, मइँ जानत हउँ कि तू सब कछू कइ
सकत अहा। तू सबइ जोजना बनाइ सकत अहा अउर तोहर
सबइ जोजना क कउनो भी नाहीं बदल सकत अउर न ही
ओका रोका जाइ सकत ह।

3यहोवा, तू इ सवाल पूछ्या कि 'इ अबोध मनई कउन
अहइ? जउन इ सबइ मूर्खता स भरी बातन कहत अहइ?'
यहोवा, मइँ ओन चीजन क बारे मँ बातन किहेउँ जेनका मइँ
समझत नाहीं रहेउँ। यहोवा, मइँ ओन चीजन क बारे मँ बातन
किहेउँ जउन मोरे समुझ पावइ बरे बहोत अचरज भरी रहिन।
4यहोवा, तू मोसे कह्या, 'हे अय्यूब सुना अउर मइँ
बोलब। मइँ तोहसे सवाल पूँछब अउर तू मोका जवाब
देब्या।'
5यहोवा, बीते भए काल मँ मइँ तोहरे बारे मँ सुने रहेउँ
मुला खुद आपन आँखिन स मइँ तोहका देखि लिहेउँ ह।
6एह बरे अब मइँ खुद आपन बरे लज्जात हउँ। मइँ
आपन जिन्नगी क राह बदलइ क इच्छा दिखावइ बरे धूर
अउर राखी मँ बैठा करत हउँ।"

यहोवा क अय्यूब क संपत्ति क लउटाउब

7यहोवा जब अय्यूब स आपन बात कइ चुका तउ यहोवा
तेमान क निवासी एलीपज स कहेसः "मइँ तोहसे अउर तोहरे
दुइनउ दोस्तन स कोहान हउँ काहेकि तू मोरे बारे मँ उचित
बातन नाहीं कहे रह्या। मुला अय्यूब मोरे बारे मँ उचित बात
कहे रहा। अय्यूब मोर दास अहइ।
8एह बरे अब एलीपज तू सात बर्धा अउर सात ठु भेड़िन
लइके मोर दास अय्यूब क लग्गे जा अउर आपन बरे
होमबलि क रुप मँ ओनकर भेटं चढ़ावा। मोर सेवक अय्यूब
तोहरे बरे पराथना करी। तब निहचइ ही मइँ ओकरी पराथना
क जवाब देबउँ। फुन मइँ तोहका वइसी सजा नाहीं देब जइसे
सजा दीन्ह जाइ चाही रही काहेकि तू बहोतई मूरख रह्या।
मोरे बारे मँ उचित बातन नाहीं किह्या जबकि मोरे सेवक
अय्यूब मोरे बारे मँ उचित बातन कहे रहा।"
9तउ तेमान क निवासी एलीपज, सूह क निवासी बिल्दद
अउर नामात क निवासी सोपर यहोवा क आग्या क मानेस।
एँह पइ यहोवा अय्यूब क पराथना सुन लिहस।
10इ तरह जब अय्यूब आपन मीतन बरे पराथना कइ चुका
तउ यहोवा अय्यूब क फुन स कामयाब किहेस। परमेस्सर
जेतना ओकरे लग्गे पहिले रहा, ओहसे भी दुगुना ओका दइ
दिहस।
11अय्यूब क सबहिं भाई अउ बहिनियन अय्यूब क घर
वापस आइ ग्एन अउर हर कउनो जउन अय्यूब क पहिले
जानत रहा, ओकरे घरे आवा। अय्यूब क संग उ सबइ एक
बड़की दावत मँ खाना खाएन। काहेकि यहोवा अय्यूब क
बहोत कस्ट दिहे रहा, एह बरे उ पचे अय्यूब क दिलासा
दिहन। ओन मँ स हर कउनो अय्यूब क सोने क सिक्का
अउर सोना क कान क बाली भेटं मँ दिहस।
12यहोवा अय्यूब क जिन्नग्गी क पहिले हींसा स भी
जियादा ओकरी जिन्नग्गी क पिछला हींसा क आपन आसीर्वाद
दिहस। अय्यूब क लग्गे चौदह हजार भेड़, छः हजार ऊँट, दो
हजार बैल जउर एक हजार ग्दहिन होइ ग्इन। 13अय्यूब क
सात पूत अउ तीन बिटियन भी होइ ग्इन। 14अय्यूब आपन
सब स बड़की बिटिया क नाउँ राखेस यामीना। दुसरकी
बिटिया क नाउँ धेरस कसीआ। अउर तीसरी क नाउँ राखेस
केरेन्हप्पूक। 15सारे प्रदेस मँ अय्यूब क बिटियन सब स
सुन्नर मेहररुअन रहिन। अय्यूब आपन पूतन क साथ आपन
दौलत क एक हींसा आपन बिटियन क भी वसीयत मँ
दिहस। 16एकरे पाछे अय्यूब एक सौ चालीस साल तलक
अउर जिअत रहा। उ आपन बच्चन, आपन पोतन, आपन
परपोतन अउर परपोतन क भी संतानन यानी चार पीढ़ियन क
लखइ बरे जिअत रहा। 17जब अय्यूब क मउत भइ, उ
समइ उ बहोत बुढ़ान रहा। ओका बहोत नीक अउर लम्बी
जिन्नग्गी प्राप्त भइ रही।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html